१

इकाई की रुपरेखा

१.० रामावतार त्यागी : व्यक्ति परिचय एवं काव्य की मूल संवेदना

१.१ व्यक्ति परिचयब

१.२ कृतियाँ

१.३ काव्य की मूल संवेदना

- १.३.१ गीताकी अवधारणा एवं कवि-धर्म
- १.३.२ सामान्य वर्ग के प्रति संवेदनशीलता
- १.३.३ विद्रोह का स्वर
- १.३.४ संघर्ष एवं जिजीविषा
- १.३.५ आत्मविश्वास
- १.३.६ कर्मठता का महत्व
- १.३.७ प्रेम एवं विरह
- १.३.८ निष्कर्ष

१.० उद्देश्य (Objectives)

रामावतार त्यागी जी का जन्म ८ जुलाई १९२५ को मुरादाबाद (उ. प्र.) की सम्भल तहसील के कुरकावली नामक गाँव में एक त्यागी ब्राम्हण परिवार में हुआ था । इनका परिवार जमींदार परिवार था किंतु मुकदमेबाजी के कारण उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय होती गई और वे एक मामूली किसान परिवार के रूप में रह गये। त्यागीजी का बचपन भी आर्थिक अभावों और कठिन संघर्षों में बीता। चार भाई व एक बहन के बीच ये सबसे बड़े थे। परंपरागत ब्राह्मण संस्कारों वाले परिवार में पलने के बावजूद इनमें परंपराओं के प्रति विद्रोह की भावना थी। इसके लिए इन्हें मार भी खाना पड़ती थी।

इनकी आरंभिक शिक्षा संभल में हुई। चंदौसी से बी.ए करने के बाद ये एम.ए. करने के लिए दिल्ली आ गए। इसबीच १९४१ में ही इनका विवाह हो गया। पत्नी अनपढ़ होने के साथ-साथ बदज़ुबान भी थी। अतः पत्नी से नहीं बनी। जीवन में आगे बढ़ने और पढ़ने का प्रोत्साहन माँ से मिला। एम.ए की पढ़ाई के दौरान ही इनकी कविताएँ प्रकाशित होने लगी थीं। इनके साहित्यिक व्यक्तित्व को आगे बढ़ाने में महावीर अधिकारी का विशेष योगदान रहा।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गीति काव्य परंपरा में वरिष्ठ गीतकार रामावतार त्यागीजी अत्यंत ही संवेदनशील थे। इन्होंने जीवन के गहरे अनुभवों को गीतों में ढाला। त्यागीजी का बचपन तो संघर्षशील था ही, युवावस्था में भी अपने अक्खड स्वभाव के कारण इन्हें अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ा। बकौल क्षेमचंद्र सुमन ये स्वभाव से अक्खड़, आदतों से आवारा, तबीयत से जिद्दी और आचरण से बेहद तुनकमिजाज थे। इनके बहुत से साथी इनके व्यक्तित्व को असंगतियों और विरोधाभासों का एलबम कहते थे। उनमें एक तरफ भयंकर नफरत थी तो दूसरी ओर असीम प्रेम। जहाँ वे आस्तिक मूल्यों को कोसते रहे, वहीं मंदिर की देहरी पर मस्तक भी झुकाते रहे। स्वयं अभावों में जीते हुए भी वे अपने से ज्यादा जरुरतमंदों की सहायता करते रहे। स्वभावगत ये ही असंगतियाँ उनके गीतों में भी प्रकट हुई हैं । वस्तुत : जीवन के ये अंधेरे ही उनमें वह शक्ति भरते रहे कि उन्होंने सब तरफ गीतों के माध्यम से सूरज का उजाला फैलाया।

१.२ कृतियाँ

कविता संग्रह – नया खून, आठवाँ स्वर, मैं दिल्ली हूँ, सपने महक उठे, गुलाब और बबूल वन, गीता हुआ दर्द।

उपन्यास - समाधान

१.३ काव्य की मूल संवेदना -

रामावतार त्यागी के गीतों में जीवन की गहन अनुभूतियाँ मुखरित हुई हैं। गीत को वे मनुष्य जीवन को बेहतर बनाने का माध्यम मानते थे । जीवन में जहाँ भी उन्हें विडंबनाएँ दिखीं, उनका विरोध उनके गीतों प्रकट हुआ है। सामान्यजन के प्रति गहन संवेदना, आस्था और विश्वास के साथ-साथ संघर्ष और विद्रोह का भाव इनके गीतों में प्रमुख रूप से मिलता है। इनका संक्षिप्त विवेचन यहाँ दिया जा रहा है ।

१.३.१ गीत की अवधारणा एवं कविधर्म -

त्यागी जी के लिए कविता या गीत लिखना मनुष्य जीवन को बेहतर बनाने का ही एक सार्थक प्रयास रहा है। इसीलिए जिस तरह धूमिल ने कविता को भाषा में 'आदमी होने की तमीज' कहा था, वैसे ही रामावतार त्यागी उसे 'आदमी की शब्दमय तस्वीर' मानते हैं-

गीत क्या हैं, सिर्फ छंदों में सजाई, आदमी की शब्दमय तस्वीर है। जीवन से गहरे जुड़ाव के कारण ये मानते रहे कि इनके गीत मन की गहराई से निकले हैं, जीवन की अमराई से निकले हैं। उनमें वह शक्ति है कि यदि किसी की जीवन नौका डगमगा रही हो तो वे उसे सहारा भी दे सकते हैं। उनमें संघर्ष करने की प्रेरणादायी शक्ति है। डगमगाई नाव जब-जब भी किसी की **गीत ने हँसकर किनारा दे दिया**। काव्य का धर्म ही जगत कल्याण करना माना गया है। रामावतार त्यागी ने भी जीवन का सर्वस्व होम कर, जीवन के सारे हास-उल्लास अपने गीतों में समोकर उन्हें मानव जगत के कल्याण के लिए प्रस्तुत किया है।आज जहाँ प्रत्येक व्यक्ति धन-वैभव और यश की प्राप्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार है, वहाँ कवि त्यागी की स्पष्ट घोषणा

है कि वे स्वर्ण के हाथों अपनी कलम नहीं बेचेंगे। मेरे गीत रहे जीवनभर चाहे कारावास भोगते। **लेकिन मैं गुमराह स्वर्ण को अपनी कलम नहीं बेचूँगा**। कवि त्यागी जानते हैं कि लोगों में ईमान को खरीदने की होड़ लगी हैं। समय इतना कठिन आ गया है कि अयोग्य एवं मानव विरोधी शक्तियाँ ही आज सफल हो रही है । इसीलिए रेगिस्तान अपने झूठे अहं में उद्यानों को खरीदने की ज़िद पकड़े बैठा है लेकिन गीतकार की मानव जीवन के प्रति निष्ठा और ईमानदारी इतनी अधिक है कि वह भौतिक सुखों के लिए अपने मन की सच्ची भावनाओं को न बेचने को दृढ़-प्रतिज्ञ है । वह अपने गीतों को विज्ञापन मालिकों का अनुगमन करने वाला नहीं बनाना चाहता। सूनी काल कोठरी में सारी उम्र बिता देना उसे मंजूर है किंतु धन-यश आदि के मोह में पड़कर वह कवि-धर्म को बेचना नहीं चाहता।

कवि की मान्यता है कि सच्चे और सार्थक गीतों में जग भर के दुखों की आत्मा अभिव्यक्त होती है। जब किसी के दुख बहुत अधिक बढ़ जाते हैं तो आँखों से आँसू भी सूख जाते है। ऐसे दुखों को अभिव्यक्ति देनेवाले गीत ही कालजयी होते हैं। समय की धारा में बहकर वे मिटते नहीं हैं।गीतकार त्यागी जी भी अपने गीतों के माध्यम से लोगों के दुख-दर्द को व्यक्त कर उनके जीवन में खुशियाँ लाना चाहते हैं। वे मानते हैं कि दीपक स्वयं के लिए नहीं जलता। वह दूसरों को उजाला देने के लिए ही स्वयं को जलाता है। सूर्य भी पूरे विश्व को रोशनी और ऊर्जा देने के लिए आग में तपता है। फूल उस व्यक्ति को भी सुगंध देता है, जो उसे डाल से तोड़कर अलग कर देता है। हिमालय को बड़प्पन भी इसीलिए मिला है क्योंकि उसकी आँखों से जीवनदायिनी गंगा निकली है। इस तरह इन सभी की सार्थकता दूसरों के कल्याण में ही निहित है। ठीक इसी तरह कवि रामावतार त्यागी भी अपने जीवन के दुखों में तपकर गीत लिखते हैं और उसके माध्यम से लोगों को प्रेरित कर उनके जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास करते हैं। वे अपने गीतों के माध्यम से लोगों के भीतर छिपी आदमियत खोजते हैं। उनकी आँखों में छिपी नमी को तलाशते हैं, और उस नमी के कारणों की पड़ताल भी करते है। निश्चय ही ऐसा संवेदनशील कवि सिर्फ अपने लिए कुछ नहीं चाहता। इसीलिए वह स्पष्ट रुप से घोषित करता है कि जिस गीत में याचना छिपी हो, वह स्वर उसका नहीं हैं।

१.३.२ सामान्य वर्ग के प्रति संवेदनशीलता

कवि त्यागी दीन –हीन एवं संकटग्रस्त दुखी लोगों के प्रति बेहद संवेदनशील हैं। इसीलिए वे मानते हैं कि उनकी आँखों को आँसुओं से डुबा देने के लिए एक उदास नजर ही पर्याप्त है। वे स्वयं अपने जीवन को अकारथ बना दिए जाने या संपूर्ण जीवन को विष से नहला दिए जाने की विडंबना सहने को तैयार हैं लेकिन लोगों को तूफान झेलते हुए नहीं देखना चाहते। वे स्वयं आँधी से अपना मन बहलाकर भी अपने सारे पुण्यों का फल दूसरों को देने के लिए तत्पर हैं जिससे उनका जीवन सुखी हो जाए। 'मेरी थकन उतर जा हैं' गीत में इन्हीं थके-हारे मुसाफिरों की सेवा करने से कवि को अपनी थकन उतरती प्रतीत होती है। कवि मानता है कि जीवन की सार्थकता दुखी मानवता की सेवा करने में है। इसीलिए किसी रोनेवाले के ओठों पर अपनी मुरली रख देने से उसकी अपनी तृष्णा खत्म हो जाती है। वह जानता है कि पानी को पुण्य तभी मिलता है जब वह किसी प्यासे व्यक्ति की प्यास बुझाए। किसी याचक को दान देकर उसका आशीर्वाद लेने से ही दानी को स्वर्ग मिलती है। किसी जरूरतमंद व्यक्ति का खाली पात्र भर देने से आत्मसंतोष तो होता ही है, अपनी आवश्यकताएँ भी पूरी हो जाती हैं। इसी कारण मुक्ति की लालच दिलानेवाले ईश्वर की पूजा करने के बदले कवि किसी संकटग्रस्त नाविक को अपनी पतवार थमा देना अधिक श्रेयस्कर समझता है।

यही संवेदनशीलता 'जब वे नयन याद आते हैं' गीत में भी दिखायी देती है। कवि उन विवश लोंगों के बारे में सोचता है जिन्हें धन के अभाव में विवाह के स्थान पर बिकते समय भी रोने तक की आजादी नहीं मिलती। वे बेदी के सात फेरे भी केवल लाचारी में लेती हैं। स्वयं कवि का जीवन भी दुखों के बीच ही करवट लेता रहा है किंतु उनके दुखों के सामने उसे अपना दुख छोटा लगने लगता है - **बंद रहे तम की मुट्ठी में अपना गम हल्का लगता है जब वे नयन याद आते हैं।**

१.३.३ विद्रोह का स्वर

सामान्य जन के जीवन को सुखमय बनाने की यही इच्छा त्यागी जी के गीतों में कही सामाजिक परंपराओं के प्रति विद्रोह बनकर उभरी है तो कही संपूर्ण व्यवस्था का विरोध करते हुए क्रांति की प्रेरणा देती है। घर की खराब आर्थिक स्थिति के कारण त्यागी जी को बचपन से ही अभावों के बीच संघर्षमय जीवन जीना पड़ा था। साथ ही घरेलू परंपराओं के प्रति भी इनमें असंतोष बढ़ता रहा। यही असंतोष आगे चलकर समाज और जीवन में व्याप्त विसंगतियों के विरोध में उग्र रूप लेने लगा। उन्होंने स्पष्ट घोषणा कर दी कि पुरातन व्यवस्था बदल रही है और युवा वर्ग नया युग लेकर आ रहा है-

पुरातन व्यवस्था बदलती, नया युग **नया खून लेकर चला आ रहा है** नई नाव जर्जर पुराने पुलिन पर **मिलन को उतरना नहीं चाहती है**। व्यवस्था के प्रति कवि मन का यह विद्रोह उस सामाजिक विषमता का भी परिणाम है, जहाँ गरीब निरंतर गरीबी में पिसता जा रहा है। कवि की दृष्टि उन लोगों पर पड़ती है जो कहने के लिए संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों के आधार पर सरकार बनाने वाले हैं किंतु वे भूखे-प्यासे रात में सड़क पर ठिठुरते हुए जीवन जीने को विवश है। कवि को लगता है कि आजादी के नाम पर जिस मधुमास के आने की खुशी मनायी जाती है, उससे तो अच्छा पतझर ही है। युग के ऐसे इतिहास को कवि बदलना चाहता है- **ये भूखे कंगाल सिकुड़ते सड़कों पर रातों में** दिया गया नूतन विधान का ध्वज जिनके हाथों में **इससे तो पतझर अच्छा ऐसे मधुमास बदल दो सौगंध हिमालय की तुमको युग का इतिहास बदल दो**। इतिहास बदलने की प्ररेणा देनेवाले कवि को बागी और विद्रोही समझा जाना स्वाभाविक है। कुछ लोग पागल या महानास्तिक भी कह सकते हैं परंतु कवि त्यागी तो जमाने भर के तमाम बंधनों को तोड़कर बगावत की आग सुलगाना चाहते हैं। बाहर से जो बहुत अच्छी-अच्छी तस्वीर दिखायी देती है, उस उजली चादर को फाड़कर वे भीतर की सड़ती तस्वीर दिखाना चाहते हैं। वे स्पष्ट घोषित करते है कि अब कुछ दिनों तक गीत नही आग लिखेंगे – **फिर विद्रोह, बगावत फिर से हिंसा को फिर पुकारता हूँ** कोमल गीतों के गायक का ताज स्वयं मैं उतारता हूँ **जिनके मन हैं छलनी-छलनी कुछ दिन उनके दाग लिखूंगा अब कुछ दिन को सुनो साथियो गीत नहीं मैं आग लिखूँगा**। त्यागी जी ने वर्तमान समय में व्याप्त विसंगतियों एवं अंतर्विरोधों को भी उजागर किया हैं। आज का समय ऐसा है कि यश और प्रतिष्ठा के हकदार लोगों की उपेक्षा हो रही है और जो असली होने का भ्रम फैलाने में सफल हैं, वे पूजे जा रहे हैं। मौलिक सपने भटक रहे हैं और अनुकृतियों पर फूल चढ़ रहे है। उजाला आँगन-आँगन गीत सुनाता भिक्षा माँग रहा है और सूरज वाला मुकुट लगाकर अंधेरा बेरोक टोक घूम रहा है। लोग अन्याय का साथ दे रहे हैं और राम की मूर्ति गढ़ रहे हैं। प्रतिभाशाली बुध्दिजीवी वर्ग भी पदासीन लोगों की चाटुकारिता में जुटा है। लोग गंगा के किनारे रहकर भी प्यासे हैं

क्योंकि रक्षक व्यवस्था ही भक्षक बन गई है। जिन घटाओं को जल बरसाना चाहिए, वे ही बूँदों को पी जा रही हैं। लालच एवं अवसरवादिता इस कदर बढ़ गई है कि यमुना कि भाँवर खारे जल के सागर से डलवा दी जाती है। चाँदी के संकेतों पर सभ्यता नाच रही है। कलियों की ताजगी पूजा के काम नहीं आती और बासी फूल मंदिर में चढ़ाए जा रहे हैं। युवा शाक्ति का उपयोग नहीं किया जा रहा है और अनुभव के नाम पर बूढ़े लोग पदासीन हैं। ऐसे कठिन समय में गीतकार जमाने को सचेत करता है-

घिर रहा है सब दिशाओं में अँधेरा। **रोशनी का खून कर डाला किसी ने**। लाश फूलों की तड़पती है चमन में। **विष हवा में आज भर डाला किसी ने**। बिक गई है अब चिरागों की चमक सी। **क्या जगत को यह न समझाने चलोगे**। इस घने अंधेरे को दूर करने के लिए कवि निरंतर प्रयत्नशील है। वह अपने गीतों का यही लक्ष्य मानता है कि कोई सपना पाँव पसारे- **जीता हूँ मैं इसीलिए तो कोई सपना पाँव चलेगा**। कब का जाग उठा कोलाहल जाने कब सूरज निकलेगा।

१.३.४ संघर्ष एवं जिजीविषा-

आज जब सब तरफ मानव-विरोधी शक्तियाँ सक्रिय हैं, गीतकार समय के अंधेरे को दूर करना चाहता है। इस प्रयास में वह बेईमान समय से कोई समझौता नहीं करना चाहता। 'अपना अहम् नहीं बेचूँगा' गीत उसके इसी दृढ़ संकल्प को उजागार करता है। वह कठिन समय में भी निडरता से संघर्ष करता है क्योंकि उसके भीतर अंधेरे को दूर करने की अदम्य आस्था है। वह घोषित करता है कि वही दीपक अंधेरे के हाथों बिक सकता है जिसका अंतर्मन ज्योतिर्मान नहीं है- **दीपक बिक सकता है जिसका अंतर ज्योतिर्मान नहीं है**। पर अंगारे को खरीदना दुनिया में आसान नहीं है। 'खिलौना: एक उद्बोधन' कविता भी इसी ओर संकेत करती है। कवि के अनुसार दुनिया उसके पीछे हाथ धोकर इसीलिए पड़ी है क्योंकि उसने किसी नुमाइशघर में सजने से इनकार कर दिया है। उसे छलने के लिए दुनिया तरह-तरह के यत्न करती है लेकिन इन बातो का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह किसी सत्ताधारी के हाथों पुजने से इनकार कर देता है। उसे पता है कि समाज के अंधेरे को दूर करने वाले दीपक को स्वयं जलना पड़ता है। इसीलिए उसे दुख झेलना स्वीकार है किंतु भौतिक सुखों के लिए सत्य का साथ छोड़ने से वह स्पष्ट रूप में इनकार करता है- **मन का घाव हरा रखने को अनचाहा हँसना पड़ता है। दीपक की खातिर अंगारा अधरों में कसना पड़ता है, आँखों को रोते रहने का खुद मैंने अधिकार दिया है,** सच को मैंने सुख की खातिर तजने से इनकार कर दिया। इसी तरह जिंदगी आरंभ होती है गीत भी कठिन जीवन स्थितियों के बीच ही जिंदगी के आरंभ होने की प्रेरणा देता है। कवि के अनुसार जहाँ तक नजर जाती है धुआँ ही धुआँ दिखाई देता है। चारों तरफ रेगिस्तान है। विवशता इस तरह है कि आदमी खुलकर रो भी नहीं पाता। किसी कमजोर तिनके तक का समर्थन और सहारा नहीं मिलता । जिंदगी और उजाले के बीच का पर्दा भी नहीं उठता है। उदासी साथ जागती और साथ सोती है। अपने अस्तित्व से ही लड़ाई है किंतु यहीं से जिंदगी आरंभ होती है- **मरुस्थल पर सुबह से शाम तक बादल बरसते हैं समंदर में बसे हैं हम मगर जल को तरसते हैं, हमारे होठ आकर मौत चुंबन से भिगोती है, यहीं से हाँ यहीं से जिंदगी आरंभ होती है**। इन कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों में भी गीतकार संघर्ष की प्रेरणा देता है। उसके पाँव भले ही थकन ने छील डाले हों किंतु वह अपने आँसुओं से

दूसरों के जीवन में हँसी बिखेरने के लिए मंदिर के दिए-सा जलता है। उसे विश्वास है कि समाज को रोशनी उसी से मिलेगी- **इस सदन में मैं अकेला ही दिया हूँ। मत बुझाओ, जब मिलेगी, रोशनी मुझसे मिलेगी**। संघर्ष इनके गीतों के प्रमुख भाव के रूप में व्यक्त हुआ है। कहीं वह अनल का पुत्र होकर दिये को जन्म देनेवाले तपसी अंगारे के दहकते तन के रूप में प्रकट हुआ है तो कहीं आंधी के चढ़ने पर भी बुझने से इनकार करने वाले दिए के रूप में। वह जानता है कि आँधियों के रोष को पीकर भी प्रकाश बाँटने वाले दिये की कीमत कोई नहीं दे सकता है। उसके संघर्ष और जिजीविषा की कोई कीमत नहीं हो सकती। इसीलिए गीतकार लिखता है- **जिंदगी ने हार जिससे मान ली हो मौत से वह आदमी कैसे डरेगा काल को भी यह पता है यह सिपाही** जब मरेगा हाथ से अपने मरेगा ।

१.३.५ – आत्मविश्वास

जीवट और जुझारूपन तभी संभव है जब व्यक्ति आत्मविश्वास से ओतप्रोत हो। कवि रामावतार त्यागी के गीतों में आत्मविश्वास जगह-जगह प्रकट हुआ है। एक भी आँसू न कर बेकार शीर्षक गीत में कवि ने लघुता के महत्त्व को प्रतिष्ठित करते हुए इसी आत्मविश्वास को बनाए रखने की प्रेरणा दी है। उसके अनुसार प्यासे के पास कुआँ नहीं आता है बल्कि प्यासे व्यक्ति को कुएँ के पास जाना पड़ता है किंतु यह कहावत है, अमरवाणी नहीं हैं। अत: हमारे पास जो कुछ और जितना कुछ है, उसे सहेजकर रखना चाहिए क्योंकि कभी ऐसा भी हो सकता है कि आँसू की एक बूँद समंदर भी माँगने आ सकता है। लघुता का अपना महत्त्व होता है। जहाँ छोटी चीजें काम आती हैं, वहाँ बड़ी वस्तुएँ काम नहीं आतीं। इसीलिए कवि कहता है कि हर छलकते अश्रु को प्यार से सहेजकर रखना चाहिए। पता नहीं कौन-सी बूँद आत्मा को प्रभावित कर जाए। लघुता के महत्त्व को समझते हुए हमें अपने पर पूरा विश्वास रखना चाहिए। मंजिल तक पहुँचने के लिए अपने पाँव ही काम आते हैं। जिसे अपने पर भरोसा नहीं होता, वह ईश्वर के उठाए भी नहीं उठ सकता- **व्यर्थ है करना खुशामद रास्तों की काम अपने पाँव ही आते सफर में। वह न ईश्वर के उठाए भी उठेगा** जो स्वयं गिर जाए अपनी ही नजर में।

१.३.६ कर्मठता का महत्त्व –

आत्मविश्वास के अतिरिक्त त्यागी जी ने कर्मठता का महत्त्व भी प्रतिपादित किया है। 'सभाएँ बंद कर' कविता में जुलूसों, नारों और प्रदर्शनों के बदले खेतों और कारखानों में काम करने की प्रेरणा देते हुए वे कहते हैं कि देश पर संकट का समय है। सिपाहियों और जवानों के लिए कपड़े और रोटी सभाएँ करने और नारे लगाने से नहीं उपलब्ध होगी। निरी बातें बनाने या बैठक जमाने से सफलता नहीं मिलती। अत: संकट आने पर हमें सिर्फ सभाएँ करने के बदले खेतों और कारखानों में काम करने के लिए तत्पर होना चाहिए-**गरजता है अगर अंबर लरजती है अगर धरती मगर खाली नहीं बैठों इसी में देश की जय है हजारों बिजलियाँ टूटें, हजारों आँधियाँ आएँ कुदाली को रहो थामे तुम्हारा** ही हिमालय है ।

१.३.७ प्रेम और विरह

रामावतार त्यागी ने प्रेम और श्रृंगारपरक गीत भी लिखे हैं लेकिन इनकी प्रेमानुभुति में विरह का भाव ही अधिक प्रकट हुआ है। इसका कारण शायद यह रहा है कि पत्नी और उनके घरवालों से इनका मनमुटाव इस कदर बढ़ गया था कि पत्नी हमेशा के लिए अलग हो गई थी।

कुछ अन्य प्रेम प्रसंग भी बने किंतु अंततः असफलता ही मिली। यह असफलता दर्द और पीड़ा बनकर इस रूप में गीतों में प्रकट हुई- **जिन आँखों की गहराई में, तुम डूब रहे, मैं उबर चुका. पथ एक वही अंतर इतना, तुम गुजर रहे मैं गुजर चुका। विश्वास किया सौगंधों पर, मैंने उस दिन तुम से बढ़कर कल मुझे लिखा जो आज तुम्हें, मजमून वही, तिथि का अंतर**। कवि की मर्मांतक पीड़ा उन लोगों द्वारा छले जाने की है, जिन पर उसने पूरा भरोसा किया था। वह इसी पीड़ा को अपनी रचनात्मक ऊर्जा का आधार बना लेता है। इसीलिए उसे सुख की चिंता नहीं होती। दुख के घटने का दर्द अवश्य होता है। वह अपनी असफलताओं से भी सीखता है। शूल के सुगंधित बोल ऐसे थे कि उसे फूल का धोखा हो गया था। छले जाने की यह पीड़ा इन पंक्तियों में देखी जा सकती है- **शूल ने ऐसे सुगंधित बोल बोले फूल का धोखा मुझे ही हो गया था. लौट आया राजपथ पर, कुछ समय को मैं किसी बुजदिल गली में खो गया था**। कवि ने बार-बार अपने मन की उदासी और पीड़ा का उल्लेख किया है। जैसे कोई बनजारा लुट जाए, ऐसा खोया-खोया उसे अपना मन लगता है। उसके मन के सुनसान नगर में उन्मादों की भीड़ नहीं जुटती। उसे प्रतीत होता है कि उसका यह जीवन ऐसे तट पर ठहरा है, जिस ओर कोई नैया नहीं मुड़ती। उसका सरल-निश्छल मन उस विश्वासघात को याद करके कह उठता है-

जीवन आँधी बनकर झकझोर दिया **मुझको तुमने काजल में बोर दिया मैंने तुमको बे-मौसम फूल दिए तुमने जाकर पतझर को बोल दिया** मेरी आँखों में सावन घोल दिया

१.३.८. निष्कर्ष

इस तरह गीतकार रामावतार त्यागी ने मानव-मन की गहन अनुभूतियों को अपने गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । उनके व्यक्तिगत जीवन के सुख-दुख और हास –उल्लास भी सार्वजनिक बनकर समूचे मानव जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा देते हुए प्रकट हुए हैं । पीड़ित-तिरस्कृत वर्ग की पीड़ा को अभिव्यक्ति देते हुए गीतकार ने आत्मविश्वास, आस्था और संघर्ष के साथ साथ विद्रोह की आग भी प्रस्फुटित की है । इस अतृप्ति, अंसतोष विद्रोह और वितृष्णा को व्यक्त करते हुए भी वह भावनाओं को तरजीह देता है । वह शोर मचानेवाली आँधी से भयभीत नहीं होता पर जिसने उसकी शिकायत उससे कभी नहीं की, उन आँखों के जल से वह अवश्य डरता है । संघर्ष और विद्रोह के साथ-साथ भावनाओं से भरे हुए मुकम्मल आदमी की तलाश करना ही उसके गीतों का अभीष्ट रहा है । इसी आदमी की तलाश करते हुए वह बबूलवन में गुलाब रोपने का सफल प्रयास करता है ।

२

२.० उद्देश्य
२.१ मेरी थकन उतर जाती है
२.१.१ प्रस्तावना
२.१.२ भावार्थ /कथ्य
२.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
२.१.४ बोधप्रश्न
२.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न
२.२ एक भी आँसू न कर बेकार
२.२.१ प्रस्तावना
२.२.२ भावार्थ /कथ्य
२.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
२.२.४ बोधप्रश्न
२.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न
२.३ जिंदगी आरंभ होती है
२.२.१ प्रस्तावना
२.२.२ भावार्थ /कथ्य
२.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
२.२.४ बोधप्रश्न
२.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न

२.० उद्देश्य

इस ईकाई के अंतर्गत पाठ्यक्रम में निर्धारित तीन कविताओं - 'मेरी थकन उतर जाती है', 'एक भी आँसू न कर बेकार' और 'जिंदगी आरंभ होती है' – का परिचय दिया गया है । इससे इन कविताओं का भावार्थ तो समझा ही जा सकेगा, कविता का कथ्य भी स्पष्ट हो सकेगा। साथ ही इनसे संबंधित कुछ अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या भी की जा सकेगी । अंत में बोध प्रश्न दिए गए हैं । वस्तुनिष्ठ या लघूत्तरी प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए हैं ।

२.१ मेरी थकन उतर जाती है

२.१.१. प्रस्तावना –

'मेरी थकन उतर जाती है' कविता में कवि रामावतार त्यागी ने हारे-थके, दु:खी, अभावग्रस्त एवं संकटों से घिरे लोगों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की है । उनके अनुसार इन दुखी-पीड़ित लोगों की सहायता करने से न सिर्फ उन्हें सुख की अनुभूति होती है बल्कि वे अपने अभावों और दुखों को समाप्त होते अनुभव करते हैं । इस रूप में गीतकार यह संकेत करता है कि दीन-दुखी लोगों की सहायता एवं सेवा करने से अपनी आवश्यकताएँ भी पूरी हो जाती हैं ।

२.१.२ भावार्थ / कथ्य-

'मेरी थकन उतर जाती है' में गीतकार रामावतार त्यागी जी ने दीन-हीन, अभावग्रस्त और संकट से घिरे लोगों के प्रति अपनी संवेदनशीलता व्यक्त की है । कवि अनुभव करता है कि किसी हारे थके मुसाफिर की सेवा करने से उसकी अपनी थकान समाप्त हो जाती है । वह जब-जब सावधानी से मंजिल की ओर बढ़ने का प्रयास करता है, तब-तब उसे ठोकरें लगती हैं किंतु बहुत अधिक सोच-विचार किए बिना सिर्फ अपना कर्म करता रहता है तो आसानी से अपनी मंजिल तक पहुँच जाता है । उसे यह अनुभव होता रहा है कि किसी रोनेवाले या दु:खी व्यक्ति के अधरों पर मुरली रख देने या उसके दुख को दूर करने का प्रयत्न करने से उसकी अपनी तमाम इच्छाएँ भी जैसे पूरी हो जाती हैं ।

कवि मानता है कि हमारे जीवन की सार्थकता अभावग्रस्त लोगों की सेवा करने में है । इसलिए वह कहता है कि पानी को पुण्य तभी मिल सकता है जब वह किसी प्यासे व्यक्ति के अधरों का स्पर्श करे या उसकी प्यास बुझाए । इसी तरह किसी दानी को स्वर्ग तभी प्राप्त हो सकता है जब वह किसी माँगने वाले को दान देकर उसका आशीर्वाद ले । इसलिए कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी प्यास बुझाकर दूसरे लोगों का खाली पात्र भर देने से उसे न सिर्फ आत्मसंतोष होता है बल्कि उसके जीवन के अभाव भी पूरे हो जाते हैं । उसे अपने जीवन में भी कोई कभी अनुभव नहीं होती ।

गीतकार नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करने में विश्वास करता है । इसलिए वह उस ईश्वर की पूजा नहीं करना चाहता जो मुक्ति की लालच देकर अपनी पूजा करवाता है । वह वेदमंत्र बनकर किसी मंदिर में गूँजना नहीं चाहता । इसके बदले किसी संकटग्रस्त नाविक को अपनी पतवार थमा कर उसकी नौका को डूबने से बचा लेने में वह अधिक विश्वास करता है । मझधार में अटके नाविक को अपनी पतवार थमा देने से उसकी अपनी नाव भी पार हो जाती है ।

इस तरह गीतकार ने 'मेरी थकन उतर जाती है' गीत में अभावग्रस्त, थके-हारे एवं संकट से घिरे दीन-हीन लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए नि:स्वार्थ भाव से उनकी सहायता करने से अपने अभावों के पूरा हो जाने का विश्वास प्रकट किया है ।

२.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

प्यासे अधरों को बिन परसे / पुण्य नहीं मिलता पानी को /याचक का आशीष लिए बिन /स्वर्ग नहीं मिलता दानी को /खाली पात्र किसी का अपनी प्यास बुझाकर भर देने से। मैंने अक्सर यह देखा है, मेरी गागर भर जाती है ।

संदर्भ –

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी' में संकलित 'मेरी थकन उतर जाती है' नामक गीत से ली गई हैं । इसके संपादक क्षेमचंद्र सुमन जी हैं । रामावतार त्यागी जी हिंदी के प्रसिध्द गीतकारों में से एक हैं । उन्होंने इस गीत में दीन-हीन एवं थके हारे लोगोंकी सहायता करने की प्रेरणा दी है ।

प्रसंग –

गीतकार त्यागीजी का मानना है कि किसी हारे-थके मुसाफिर की सेवा करने से उन्हें इतना आत्मसंतोष होता है कि जैसे उनकी थकान भी समाप्त हो जाती है । इसी तरह वे किसी दुखी और रोनेवाले के होठों पर मुरली रख देने से अपनी तृष्णा मिट जाने का अनुभव करते हैं । इसी संदर्भ में उन्होंने उपर्युक्त पंक्तियाँ भी कही हैं ।

व्याख्या –

कवि दु:खी पीड़ित लोगों की सहायता करने में विश्वास करता है । इस लिए वह मानता है कि पानी को पुण्य तभी मिलता है, जब वह प्यासे होठों की प्यास बुझाए । इसी प्रकार दानी का दान करना तभी सार्थक हो सकता है, स्वर्ग तभी प्राप्त हो सकता है जब वह किसी याचक या माँगनेवाले का आशीर्वाद प्राप्त करे । कवि कहता है कि अपनी प्यास बुझाकर किसी दूसरे व्यक्ति का खाली बर्तन भर देने से अपना भी घड़ा भर जाता है । अर्थात दूसरों की सहायता करने से अपनी आवश्यकताएँ भी पूरी हो जाती हैं । उसे कभी अभाव अनुभव नहीं होता क्योंकि जरूरत पड़ने पर उसकी सहायता के लिए भी लोग तैयार रहते हैं ।

विशेष –

यहाँ नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करने का संकेत किया गया है । जो दूसरों की सहायता करते हैं, उनकी सहायता करने वाले दूसरे लोग भी तत्पर रहते हैं ।

२.१.४ बोध प्रश्न :-

१) 'मेरी थकान उतर जाती है' में दीन-दुखियों के प्रति कवि की संवेदनशीलता किस तरह प्रकट हुई है ?

२) 'मेरी थकन उतर जाती है' में कवि ने कौन-सा संदेश दिया है ?

३) 'मेरी थकन उतर जाती है' का कथ्य स्पष्ट कीजिए ।

२.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी

१) कवि की थकन कब उतर जाती है ?

उत्तर हारे-थके मुसाफिर के चरणों को धोकर पी लेने से कवि की थकन उतर जाती है ।

२) कवि को ठोकर कब लगती है ?
उत्तर कवि जब सावधानी से चलता है तो उसे ठोकर लगती है ।

३) रोनेवालों के अधरों पर मुरली रख देने पर कवि क्या अनुभव करता है ?
उत्तर रोनेवालों के अधरों पर अपनी मुरली रख देने से कवि की तृष्णा भी मर जाती है ।
४) पानी को पुण्य कब मिलता है ?
उत्तर पानी को पुण्य प्यासे अधरों को स्पर्श करने से मिलता है ।

५) दानी को स्वर्ग कब मिलता है ?
उत्तर याचक का आशीष लेने पर दानी को स्वर्ग मिलता है ।

६) कवि की गागर कब भर जाती है ?
उत्तर किसी का खाली पात्र भर देने से कवि की गागर भर जाती है ।

७) कवि किस ईश्वर को नहीं पूजना चाहता ?
उत्तर मुक्ति का लालच देने वाले ईश्वर को कवि नहीं पूजना चाहता ।

८) कवि की नौका कब तैरकर पार हो जाती है ?
उत्तर किसी संकटग्रस्त नाविक को अपनी पतवार थमा देने से कवि की नौका भी तैरकर पार हो जाती है ।

२.२ एक भी आँसू न कर बेकार

२.२.१ प्रस्तावना :- 'एक भी आँसू न कर बेकार' कविता में गीतकार रामावतार त्यागी ने लघुता के महत्त्व को प्रतिपादित किया है । उनके अनुसार इस संसार में कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है जिसके पास दूसरों को देने के लिए कुछ भी न हो । कवि ने यह संदेश भी दिया है कि कठिन परिस्थितियाँ हर एक के जीवन में आती हैं लेकिन उनसे घबराना नहीं चाहिए बल्कि अपने ऊपर भरोसा रखते हुए निरंतर सक्रिय बने रहना चाहिए ।

२.२.२ भावार्थ :- कवि का मानना है कि सागर के पास अथाह जल का भंडार है किंतु कभी-कभी ऐसा भी समय आ जाता है कि अपार धन-साधन संपन्न लोगों को भी किसी छोटी वस्तु की आवश्यकता पड़ जाती है जो उनके पास नहीं होती । अत: त्यागीजी का मानना है कि हमारे पास एक बूँद आँसू ही क्यों न हो, उसे व्यर्थ नही गँवाना चाहिए और न ही उसे तुच्छ मानकर उसका महत्त्व कम आँकना चाहिए । ऐसा भी हो सकता है कि एक बूँद आँसू माँगने समुद्र भी आ जाए । यह ठीक है कि प्यासे व्यक्ति के पास कुआँ नही आता । प्यासे को ही कुएँ के पास जाना पड़ता है किंतु यह एक कहावत है, अमरवाणी नहीं है । अत: यह हमेशा सच ही हो, यह जरूरी नहीं है । कभी-कभी परिस्थितियाँ ऐसी भी आती हैं कि कुआँ यानी कि सुविधा संपन्न लोगों को भी साधनहीनों के पास जाना पड़ता है । और फिर इस दुनिया में एक भी ऐसा प्राणी नहीं है जिसके पास दूसरों को देने के लिए कुछ हो ही नहीं । किसी के पास कुछ कम होता है तो किसी के पास ज्यादा । अत: हमारे पास जो कुछ भी हो और जितना भी हो, उसे सहेज कर रखना चाहिए ।

जैसे हमें यह नहीं मालूम होता कि कौन-सा गीत देवता को अधिक अच्छा लगेगा । अतः हमारे पास जिसने भी गीत हों, उन सब को सजा-सँवारकर प्रस्तुत करना चाहिए ।

कवि का मानना है कि चोट खाकर दर्पण भले ही टूट जाते हैं किंतु उनमें दिखायी देनेवाली आकृतियाँ नहीं टूटती हैं । ठीक इसी तरह कठिन परिस्थितियों में संघर्षशील व्यक्ति कभी टूटता-हारता नहीं है । मनुष्य जीवन में समस्याएँ हमेशा आती रहती हैं । वे कभी भी आदमी से रूठकर दूर नहीं जातीं । इसलिए भावनाओं के आवेग से छलक कर निकलने वाले हर आँसू को प्यार से सँभालना चाहिए । उनमें से कोई भी एक आँसू की बूँद आत्मा को प्रभावित कर उसे पवित्र बना सकती है ।

कठिन परिस्थितियों में भी अपने ऊपर भरोसा रखते हुए निरंतर सक्रिय रहने का संदेश भी त्यागीजी ने दिया है । उनके अनुसार रास्तों की खुशामद करना व्यर्थ होता है क्योंकि रास्ते अपने आप मंजिल तक हमें कभी नहीं पहुँचाते । लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अपने पैरों पर ही भरोसा करना पड़ता है । वे ही काम आते हैं । अतः स्वयं पर विश्वास करने का संदेश देते हुए कवि कहता है कि जो व्यक्ति अपनी नजर में स्वयं गिर जाता है, यानी कि उसे अपनी शक्ति पर ही भरोसा नहीं होता, उसकी सहायता ईश्वर भी करना चाहे तो नहीं कर सकता । अतः हर लहर का महत्त्व स्वीकार करना चाहिए क्योंकि उनमें से कोई भी लहर किनारे तक पहुँचा सकती है ।

इस तरह कवि ने लघुता के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए अपनी अल्पशक्ति को भी सहेज कर रखने और अपने पर विश्वास करने का संदेश दिया है । जो व्यक्ति अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं कर पाता वह जीवन में कभी भी सफल नहीं होता ।

२.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

व्यर्थ है करना खुशामद रास्तों की । काम अपने पाँव ही आते सफर में
वह न ईश्वर के उठाये भी उठेगा। जो स्वयं गिर जाए अपनी ही नजर में,
हर लहर का कर प्रणय स्वीकार । जाने कौन तट के पास पहुँचा जाए

संदर्भ:- रामावतार त्यागी आधुनिक हिंदी गीतकारों में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं । उन्होंने गहन मानवीय अनुभुतियों को अपने गीतों में अभिव्यक्ति दी है । उनके गीतों का ही एक संग्रह आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी का संपादन क्षेमचंद्र सुमन ने किया है । इसी संग्रह में संकलित एक भी आँसू न कर बेकार नामक गीत से प्रस्तुत पंक्तियाँ ली गई हैं ।

प्रसंग :- लघुता के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कवि का यह मानना है कि इस संसार में कोई ऐसा प्राणी नहीं है, जिसके पास दूसरों को देने के लिए कुछ भी नहीं है । अतः हमारे पास जो कुछ और जितना भी हो,उसे सँभाल कर रखना चाहिए । इसी संदर्भ में कवि कठिन परिस्थितियों में हिम्मत न हारने का संदेश देते हुए आत्मविश्वास के साथ संघर्ष करने की प्रेरणा भी देता है ।

स्पष्टीकरण :- मनुष्य के जीवन में कठिनाइयाँ आती रहती हैं किंतु कठिन समय में भी अपने लक्ष्य तक वे ही लोग पहुँच पाते हैं जिन्हें अपने पर भरोसा होता है । अतः रास्तों की खुशामद करना व्यर्थ होता है । यात्रा में अपने पाँव ही काम आते हैं । रास्ते कभी भी अपने आप हमें मंजिल तक नहीं पहुँचाते । अपने पैरों पर भरोसा करके ही पहुँचा जा सकता है । जो व्यक्ति अपनी ही नजर में गिर जाता है यानी कि उसे अपनी शक्ति पर ही विश्वास नहीं रह जाता है, उसकी सहायता ईश्वर भी नहीं कर सकता । अतः हर लहर के महत्व को स्वीकार करना चाहिए। पता नहीं कौन सी लहर हमें किनारे तक पहुँचा जाये ।

विशेष: इस तरह कवि रामावतार त्यागी ने लघुता के महत्त्व को स्वीकार करने के साथ-साथ आत्मविश्वास पूर्वक अपने पैरों पर भरोसा करते हुए मंजिल तक पहुँचने का संदेश दिया है ।

२.२.४ बोध प्रश्न :

१) एक भी आँसू न कर बेकार में आत्मविश्वास और लघुता का महत्त्व किस प्रकार प्रतिपादिता किया गया है ?

२) एक भी आँसू न कर बेकार का कथ्य स्पष्ट कीजिए ।

२.२.५ लघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

१) कवि एक भी आँसू बेकार न करने के लिए क्यों कहता है ?

उत्तर कवि एक भी आँसू बेकार न करने के लिए कहता है क्योंकि कभी भी समंदर उसे माँगने आ सकता है ।

२) एक कहावत के अनुसार प्यासे के पास कौन नहीं आता ?

उत्तर कहावत के अनुसार प्यासे के पास कुआँ नहीं आता है।

३) कवि किसका श्रृगांर करने के लिए कहता है ?

उत्तर कवि हर गीत का श्रृगांर करने के लिए कहता है।

४) चोट खाकर कौन टूट जाते हैं ?

उत्तर चोट खाकर दर्पण टूट जाते हैं ।

५) आदमी से क्या नहीं रुठता ?

उत्तर कवि के अनुसार आदमी से समस्याएँ कभी नहीं रुठतीं ।

६) आत्मा को कौन नहला सकता है ?

उत्तर आत्मा को कोई भी अश्रुकण नहला सकता है।

७) कवि त्यागी के अनुसार किसकी खुशामद करना व्यर्थ होता है ?

उत्तर कवि त्यागी के अनुसार रास्तों की खुशामद करना व्यर्थ होता है ।

८) सफर में कौन काम आते हैं ?
उत्तर सफर में अपने पाँव ही काम आते हैं ।

९) ईश्वर के उठाए भी कौन नहीं उठ पाता ?
उत्तर अपनी नजर में गिर जाने वाला ईश्वर के उठाए भी नहीं उठ पाता ।

१.३ जिंदगी आरंभ होती है

२.३.१ प्रस्तावना

जिंदगी आरंभ होती है कविता में कवि रामावतार त्यागी ने यह संकेत किया है कि जब-जब जीवन में अभाव, कठिनाइयाँ और विवशताएँ होती हैं, संघर्षशील एवं आशावान व्यक्ति का जीवन वहीं से आरंभ होता है । अत: कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हमें हिम्मत नहीं हारना चाहिए बल्कि जीवन संघर्ष जारी रखते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए । यह जीजीविषा ही इस कविता के केंद्र में है ।

२.३.२ भावार्थ : कवि के अनुसार जहाँ तक उसकी नजर जाती है, धुआँ ही धुआँ नजर आता है । जीवन में सब तरफ अस्पष्टता है । कहीं भी जल नहीं दिखायी देता । सब ओर रेगिस्तान का अभाव ही पसरा है । कहीं भी घुँघरू बजने का धोखा तक नहीं होता । आदमी इस तरह विवश है कि न तो वह खुलकर रो पाता है न हँस पाता है। इन अभावों और विवशताओं के बीच ही जिंदगी आरंभ होती है ।

जीवन में हर तरफ कठिन परिस्थितियों के रूप में चट्टानें खड़ीं है । हाथ में धनुष ताने बिजलियाँ चमक रही हैं । चारों ओर सन्नाटा फैला है और एक पत्ता भी नहीं हिल रहा है, ऐसे संकटपूर्ण समय में एक तिनके की भी सहायता नहीं मिल रही है । उन्मादवश विपरीत स्थितियाँ कभी हँसती हैं तो कभी विवश होकर रोती हैं लेकिन जब-जब उम्मीदों पर आघात होता है, तब-तब उन कठिनाइयों के बीच जिंदगी आरंभ होती है ।

कवि जीवन में व्याप्त विषम स्थितियों में इस तरह उलझा है कि उसे जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं प्रतीत होता । सिर्फ नाम मात्र के लिए जीना-मरना है । जीवन में अंधेरा फैला हुआ है । कठिनाइयों अंधेरों से भरे जीवन और उजाले के बीच का पर्दा हटता ही नहीं है कि जीवन में थोड़ा उजाला आ सके । सुबह हो या न हो, रात से पीछा नहीं छूटता । संकटों की रात नहीं बीतती । जीवन में सोते-जागते उदासी ही फैली रहती है । ऐसी कठिन परिस्थितियों में जीते हुए भी कवि निराश नहीं है क्यों वह मानता है कि यहीं से जिंदगी आरंभ होती है ।

कवि ने अपनी किस्मत स्वयं बनायी है । उसके जीवन में विफलता की पूँजी है और निराशा ही उसकी कमाई है । जलन से उसकी दोस्ती है और उलझनों से उसे प्रेम है । वह अपने अस्तित्व से ही लड़ाई लड़ता है । जो पतवार नाव को किनारे लगाती है, वही उसे किनारे पर डुबो देने के लिए तैयार है लेकिन इन कठिनाइयाँ के बीच भी वह हिम्मत नहीं हारता बल्कि यहीं से नई जिंदगी आरंभ करता है । कवि मानता है कि जमाने की खुशियाँ उसे आवाज देती हैं लेकिन एक अंतराल (दायरा) बनकर रुकावट हमेशा बीच में आ जाती है । कभी तमाम पुकारों

और विचारों का मेला लगा रहता है तो कभी आसान और मासूम सवालों का भी कोई उत्तर नहीं मिलता । कवि के पास कुछ भी शेष नहीं रहता । सिर्फ उसकी आँखों में भविष्य के सपनों का एक मोती है जो जिजीविषा बन कर उसे प्रोत्साहित करता रहता है, परंतु यहीं से जिंदगी आरंभ होती है ।

कवि के अनुसार उसे दुःख और बेचैनी में जागते देख कर रात उस पर हँसती है । उसके जीवनरूपी शरद की रात में भी शीतलता के स्थान पर आकाश से आग बरसती है । उसका जीवन इतना दुर्भाग्यशाली है कि जिसे भी वह देख देता है, वह सितारा टूट जाता है । यदि वह धारा का साथ पकड़ता है तो किनारा छूट जाता है । कलियाँ भी हँसती हैं तो उसकी आँखों में काँटे चुभोती हुई लगती हैं । इस तरह प्रकृति के वे सभी तत्व जो जीवन में सुख देनेवाले हैं, वे ही उसके जीवन में दुख बिखेरते हैं लेकिन कवि इन्हें स्वीकार करते हुए कहता है कि यहाँ से जिंदगी आरंभ होती है । इन दुखों के बीच से ही जीवन के सुख आरंभ होते हैं ।

उसके जीवन में कभी श्यमशान की धमकी मिलती है तो कभी तूफान की गाली । अर्थात कभी मौत की धमकी दी जाती है तो कभी तूफान की मुसीबतों का हवाला दिया जाता है । रेगिस्तान में भी बादल बरसते हैं लेकिन वह समंदर के बीच रहते हुए भी पानी के लिए तरसता रहता है । मौत उसका चुंबन लेती है । लेकिन इन सब का सामना करते हुए भी कवि मानता है कि यहीं से जिंदगी आरंभ होती है ।

कवि के अनुसार वह तैर कर भी भँवर में डूब जाता है । तस्वीर को जिलाने के लिए वह मरना स्वीकार कर लेता है । उसके दिल में कभी बारात की खुशियाँ नहीं होतीं । उसकी राह कभी भी मंजिल तक नहीं पहुँचती । इसके बदले आँधी रूपी कठिनाइयाँ उसे सिंदूर की तरह अपने सिर माथे पर चढ़ाती हैं । किंतु उसे पता है कि यहीं से जिंदगी आरंभ होती है ।

इस तरह कवि ने यह संकेत किया है कि तमाम कठिनाइयों मुसीबतों को झेलने के बाद भी उसके जीवन में खुशियाँ नहीं आतीं लेकिन इससे वह निराश नहीं होता । वह मानता है कि यहीं से जीवन आरंभ होता है । यह जिजीविषा उसकी अन्य कविताओं में भी व्यक्त हुई है ।

२.३.२ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :-

बनाने के लिए हमने स्वयं किस्मत बनाई है,
विफलता मात्र पूँजी है, निराशा ही कमाई है,
जलन से दोस्ती है, उलझनों से आशनाई है,
लड़ाई है, अगर अस्तित्व से अपनी लड़ाई है,
स्वयं पतवार कश्ती को किनारे पर डुबोती है ।

संदर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी में संकलित जिंदगी आरंभ होती है कविता से ली गई हैं । इसके रचयिता हिंदी के प्रसिध्द गीतकार रामावतार त्यागी हैं । यह संकलन क्षेमचंद्र सुमन द्वारा संपादित है ।

प्रसंग :- इस कविता में कवि ने जीवन में व्याप्त कठिनाइयों, अभावों और विवशताओं का उल्लेख करते हुए यह संकेत किया है कि जीवन विषम परिस्थितियों से घिरा होता है । कदम-कदम पर चुनौतियों का पहाड़ प्रगति की राह रोके खड़ा होता है । जीवन में उजाले की कोई उम्मीद नजर नहीं आती । फिर भी जिंदगी रुकती नहीं है । इन कठिनाइयों के बीच भी जीवन चलता रहता है ।

व्याख्या :- कवि के अनुसार अपना भाग्य उसने खुद ही लिखा है किंतु जीवन में उसे असफलता के सिवाय कुछ नहीं मिला । वही एक मात्र पूँजी है । असफलताओं के कारण उसने जीवन में निराशा ही कमाई है । जो लोग सफल हैं उनके प्रति जलन और ईर्ष्या का भाव भी है । इस तरह संपूर्ण जीवन में तमाम उलझने हैं जो जीवन की राह में रुकावट बनती रहती हैं । जीवन में संघर्ष अपने ही अस्तित्व से है। जो पतवार नाव को किनारे तक पहुँचाने वाली है, वही जीवन-नौका को किनारे पर डुबो देती है । ऐसी कठिन परिस्थितियों के बीच भी कवि हिम्मत नहीं हारता और उसकी जिंदगी इन्ही विषम परिस्थितीयों के बीच आरंभ होती है ।

विशेष : इस प्रकार कवि कठिन चुनौतियों को स्वीकार कर जीवन-संघर्ष जारी रखने में विश्वास रखता है । वह विषम परिस्थितियों से जुझते हुए आत्मविश्वास पूर्वक जीने का संदेश देता है ।

२.२.४ बोध प्रश्न :

१) कवि रामावतार त्यागी के अनुसार जिंदगी किन परिस्थितियों में आरंभ होती है ?
२) 'जिंदगी आरंभ होती है' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।
३) कवि रामावतार त्यागी ने विषम परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास के साथ जीवन जीने का संदेश किस तरह दिया है ?

२.२.५ लघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

१) कवि रामावतार त्यागी को किसकी गूँज का धोखा नहीं होता ?
उत्तर कवि रामावतार त्यागी को घुँघरू की गूँज का धोखा नहीं होता ।

२) त्यागीजी के अनुसार आदमी खुलकर क्यों नहीं रो पाता ?
उत्तर त्यागीजी के अनुसार विवशता के कारण आदमी खुलकर नहीं रो पाता।

३) कवि को हर ओर बाँह फैलाए कौन खड़ी नजर आती हैं ?
उत्तर कवि को हर ओर बाँह फैलाए चट्टानें खड़ी नजर आती हैं ।

४) कवि त्यागी जी को किसका समर्थन नहीं मिलता ?
उत्तर कवि त्यागी जी को किसी कमजोर तिनके तक का समर्थन नहीं मिला ।

५) कवि त्यागी जी के अनुसार किसके बीच का पर्दा नहीं उठता ?
उत्तर कवि त्यागी जी के अनुसार उजाले और उनके बीच का पर्दा नहीं उठता ।

६) कवि के अनुसार किससे पीछा नहीं छूटता ?
उत्तर कवि के अनुसार रात से पीछा नहीं छूटता ।

७) कवि त्यागी के अनुसार उनकी किस्मत किसने बनायी है ?
उत्तर कवि त्यागी के अनुसार उनकी किस्मत उन्होंने स्वयं बनायी है ।

८) कवि त्यागीजी के पास कौन सी पूँजी और कमाई है ?
उत्तर कवि त्यागीजी के पास विफलता की पूँजी और निराशा की कमाई है ।

९) त्यागीजी की लड़ाई किससे है ?
उत्तर त्यागीजी की लड़ाई अपने ही अस्तित्व से है ।

१०) कवि की कश्ती किनारे पर कौन डुबोता है ?
उत्तर कवि की कश्ती किनारे पर स्वयं पतवार डुबोती है ।

११) कवि और खुशी के बीच दायरा बन कर कौन घेर लेती है ?
उत्तर कवि और खुशी के बीच रुकावट दायरा बन कर घेर लेती है ।

१२) कवि को जागा हुआ पाकर कौन हँसती है ?
उत्तर कवि को जागा हुआ पाकर रात हँसती है ।

१३) धारा पकड़ने पर कवि से क्या छूट जाता है ?
उत्तर धारा पकड़ने पर कवि से किनारा छूट जाता है ।

१४) कवि को शरद की रात में भी अंबर से क्या बरसता प्रतीत होता है ?
उत्तर कवि को शरद की रात में भी अंबर से आग बरसती प्रतीत होता है ।

१५) कवि की आँख में काँटे कौन चुभोती है ?
उत्तर कवि की आँख में काँटे हँसती हुई कली चुभोती है।

१६) कवि की उम्र का प्याला किससे खाली नहीं रहता ?
उत्तर कवि की उम्र का प्याला गम से खाली नहीं रहता ।

१७) समुंदर में बसे होकर भी कवि किसके लिए तरसता है ?
उत्तर समुंदर में बसे होकर भी कवि जल के लिए तरसता है ।

१८) तस्वीर को जिलाने के लिए कवि ने क्या प्रयास किया है ?
उत्तर तस्वीर को जिलाने के लिए कवि खुद मरा है ।

१९) कवि को सिंदूर समझ कर माँग में कौन सँजोती है ?
उत्तर कवि को सिंदूर समझ कर अपनी माँग में आँधी सँजोती है ।

३

इकाई की रुपरेखा

३.० उद्देश्य
३.१ अपना अहं नहीं बेचूँगा
३.१.१ प्रस्तावना
३.१.२ भावार्थ / कथ्य
३.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
३.१.४ बोध प्रश्न
३.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न
३.२ सागर से यह बात कहूँगा
३.२.१ प्रस्तावना
३.२.२ भावार्थ / कथ्य
३.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
३.२.४ बोध प्रश्न
३.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न
३.३ भयभीत उसी लोचन के जल से हूँ
३.३.१ प्रस्तावना
३.३.२ भावार्थ / कथ्य
३.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
३.३.४ बोध प्रश्न
३.३.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न

३.० उद्देश्य

इस इकाई में पाठ्यक्रम में निर्धारित तीन कविताओं - अपना अहं नहीं बेचूँगा, सागर से यह बात कहूँगा और भयभीत उसी लोचन के जल से हूँ - संबंधी विवेचन किया गया है। इससे आप

- कविता का मूल भाव और कथ्य जान सकेंगे।
- कविता से चुने हुए अंश की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे।
- कविता से संबंधित संभावित प्रश्न का उत्तर लिख सकेंगे।
- कविता से संबंधित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

३.१ अपना अहं नहीं बेचूँगा

३.१.१ प्रस्तावना :

कवि रामावतार त्यागी ने अपने समय की सच्चाई को गीतों के माध्यम से व्यक्त किया है। आज के समय में सच का बयान करना तमाम विरोधों को आमंत्रित करना होता है किंतु कवि ने इन विरोधों से डरकर कभी समझौता नहीं किया। इसी लिए उसे जीवन भर तमाम कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा। 'अपना अहं नहीं बेचूँगा' गीत में कवि ने यही भाव व्यक्त किया है कि उसके अपने जीवन के सारे सपने भले ही सूली पर लटका दिये जाएँ किंतु वह बेईमान समय से समझौता करके अपने अहं को नहीं बेचेगा।

३.१.२ भावार्थ / कथ्य :

कवि अपने सपनों की कुर्बानी देने को तैयार है किंतु आज के स्वार्थी एवं बेईमान समय के हाथों अपना स्वाभिमान नहीं बेचना चाहता। इस तरह कठिन परिस्थितियों में निरंतर संघर्ष करना उसे मंजूर है किंतु भ्रष्ट परिस्थितियों से वह समझौता नहीं करना चाहता। इसी आस्था के साथ वह संघर्षरत है। अत: उसका विश्वास है कि दुनिया उसे और कुछ भी कहे किंतु कायर नहीं कहेगी। वह इस दुनिया में रहे या न रहे परन्तु उसकी यह आस्था अवश्य रहेगी। कवि को यह स्वीकार है कि उसकी खुशियाँ मरघट में जिंदा ही दफना दी जाएँ किंतु वह बदचलन पतन को अपना जीवन नहीं बेचना चाहता।

जिस व्यक्ति के भीतर चेतना न हो या जिसका अंतर्मन ज्योतिर्मान न हो वह इस भ्रष्ट समय में बिक सकता है किंतु जिसके मन में क्रांतिकारी विचारों की आग धधक रही हो, उसे खरीदना आसान नहीं है। इसी लिए कवि कहता है कि उसके गीत भले ही कारावास भोगते रहें, उन्हें कोई चर्चा का विषय न बनाये किंतु वह भ्रष्ट धनवानों के प्रलोभन में आकर अपनी कलम नहीं बेचेगा।

आज ईमान को खरीदने वालों में होड़- सी लगी है। रेगिस्तान बागीचों को खरीदने की जिद कर रहा है। इस तरह परिस्थितियाँ इतनी विषम हैं कि अमानवीय शक्तियाँ जीवन के सत् मूल्यों को अपने प्रभाव में लेने के लिए तत्पर हैं। गीतकार मानता है कि उसका दर्पण भले ही खंड-खंड हो जाए किंतु तन की इच्छा पर अपने मन का नियम नहीं बेचेगा। भौतिक सुखों के लिए अपनी आत्मा की सत्य की आवाज नहीं बेचेगा। उसके जीवन की कहानी कोई काल्पनिक किंवदंती नहीं है। उसके गीत भी किसी विज्ञापनदाता की इच्छाओं के पीछे-पीछे चलने वाले नहीं हैं। उसके अपने स्वतंत्र विचार हैं, उन विचारों के विरुद्ध वह कोई समझौता नहीं कर सकता। भले ही वह किसी सूनी काल-कोठरी में कैद होकर सारी उम्र बिता दे लेकिन किसी लालच में पड़कर अपना कवि-धर्म नहीं बेचेगा। कवि का धर्म होता है कि वह अन्याय-अत्याचार का विरोध करते हुए सत्य का समर्थन करे। वह दीन-हीन के प्रति संवेदनशील एवं उनके संघर्ष का पक्षधर होता है। अत: वह अपने इस दायित्व का निर्वाह करना चाहता है।

इस तरह कवि अपना कवि-धर्म निभाते हुए स्वयं अभाव झेलने एवं संघर्ष करने के लिए तैयार है किंतु गलत एवं अन्यायी-अत्याचारी शक्तियों से समझौता करके अपना अहं बेचने को तैयार नहीं है।

३.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

दीपक बिक सकता है जिसका। अंतर ज्योतिर्मान नहीं है
पर अंगारे को खरीदना। दुनिया में आसान नहीं है
मेरे गीत रहें जीवन भर चाहे कारावास भोगते,
लेकिन मै गुमराह स्वर्ण को अपनी कलम नहीं बेचूँगा!

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी' नामक संग्रह में संकलित 'अपना अहं नहीं बेचूँगा' गीत से उद्घृत की गयी हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध गीतकार रामावतार त्यागी हैं तथा इस संग्रह के संपादक क्षेमचंद्र सुमन जी हैं।

प्रसंग : इस गीत में गीतकार ने अपने कवि - धर्म का पालन करने का संकल्प दोहराया है। अपने समय की सच्चाई व्यक्त करने के लिए वह अपने सपनों और इच्छाओं की कुर्बानी देने को तैयार है किंतु जन-विरोधी ताकतों से कोई समझौता नहीं करना चाहता। जीवन भर तमाम कठिनाइयों का सामना करने को वह तत्पर है किंतु भ्रष्ट शक्तियों से समझौता कर के अपने कवि-धर्म के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहता।

स्पष्टीकरण : कवि के अनुसार आज वही दीपक बिक सकता है जिसका अंतर्मन ज्योतिर्मान नहीं है। अर्थात जिस व्यक्ति के भीतर चेतना न हो वही इस भ्रष्ट व्यवस्था के हाथों बिक सकता है किंतु जिसके मन में क्रांतिकारी विचारों की आग धधक रही हो, उसे नहीं खरीदा जा सकता। कवि अपने गीतों के माध्यम से अपने इन्हीं विचारों को व्यक्त करता है। अत: वह स्पष्ट रूप में घोषित करता है कि उसके गीतों को भले ही जीवनभर उपेक्षा का कारावास भोगना पड़े किंतु वह भ्रष्ट धनवानों के प्रलोभन में आकर अपनी कलम की ताकत नहीं बेचेगा।

विशेष : यहाँ कवि की मानव जीवन के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त हुई है। वह मानता है एक कवि का दायित्व मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाले साहित्य की रचना करना है। अत: वह अपनी कलम को भ्रष्ट धनवानों के हाथ बेचना नहीं चाहता।

३.१.४ बोध प्रश्न

'अपना अहं नही बेचूँगा' कविता में कवि अपने दायित्व के विपरीत कोई समझौता क्यों नहीं करना चाहता।

अथवा

अपना अहं नहीं बेचूँगा कविता का कथ्य अपने शब्दों में लिखिए।

३.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न :

प्र. १ कवि रामावतार त्यागी अपना अहं किसे नहीं बेचना चाहते ?

उत्तर कवि रामावतार त्यागी बेईमान समय को अपना अहं नहीं बेचना चाहते।

प्र. २ कवि त्यागी के अनुसार दुनिया उन्हें क्या नहीं कहेगी ?

उत्तर कवि त्यागी के अनुसार दुनिया उन्हें और जो भी कहे लेकिन कायर नहीं कहेगी ?

प्र. ३ कवि त्यागी अपना जन्म किसे नहीं बेचना चाहते हैं ?

उत्तर कवि त्यागी जी अपना जन्म बदचलन पतन को नहीं बेचना चाहते।

प्र. ४ कवि के अनुसार कौन-सा दीपक बिक सकता है ?

उत्तर कवि के अनुसार जिसका अन्तर ज्योतिर्मान नहीं है, वह दीपक बिक सकता है।

प्र. ५ दुनिया में किसे खरीदना आसान नहीं है ?

उत्तर दुनिया में अंगारे को खरीदना आसान नहीं है।

प्र. ६ कवि अपनी कलम किसे नहीं बेचना चाहता ?

उत्तर कवि गुमराह स्वर्ण को अपनी कलम नहीं बेचना चाहता।

प्र. ७ कवि त्यागी जी के अनुसार दूकानों में किस बात की होड़ लगी है ?

उत्तर कवि त्यागी जी के अनुसार दूकानों में ईमान को खरीदने की होड़ लगी है।

प्र. ८ कवि के अनुसार रेगिस्तानों ने किस बात की जिद पकड़ी है ?

उत्तर कवि के अनुसार रेगिस्तानों ने उद्यानों को खरीदने की जिद पकड़ी है।

प्र. ९ कवि तन की इच्छा पर क्या नहीं बेचना चाहता ?

उत्तर कवि तन की इच्छा पर मन का नियम नहीं बेचना चाहता।

प्र. १० त्यागी जी के अनुसार कौन विज्ञापन के स्वामी की अनुगता नहीं है।

उत्तर त्यागी जी के अनुसार उनकी रचना किसी विज्ञापन स्वामी की अनुगता नहीं है।

प्र. ११ रामावतार त्यागी जी किसे अपने कवि का धर्म नहीं बेचना चाहते ?

उत्तर कवि रामावतार त्यागी जी किसी मोह को अपने कवि का धर्म नहीं बेचना चाहते।

३.२ सागर से यह बात कहूँगा ।

३.२.१ प्रस्तावना :

कवि रामावतार त्यागी वर्तमान स्थितियों के प्रति सजग गीतकार हैं। उन्होंने आम आदमी के अभावग्रस्त जीवन के साथ-साथ रक्षक व्यवस्था के भक्षक बन जाने तथा सब तरफ लालच, अवसरवादिता और स्वार्थ का बोलबाला होने का स्पष्ट संकेत दिया है। कवि को लगता है कि जिन लोगों पर जीवन को सुखमय बनाने की जिम्मेदारी थी। वे ही लोग सारी खुशियाँ छीन कर सिर्फ अपने आप को सुखी बनाने में व्यस्त हैं।

३.२.२ भावार्थ / कथ्य :

कवि के अनुसार गंगा मैया के किनारे रह कर भी वह प्यासा रह गया। अपने प्यासे होठों को दिखाकर सागर से यह बात कहेगा। रक्षक व्यवस्था के ही भक्षक बन जाने की स्वार्थ परता

और अमानवीयता की ओर संकेत करते हुए कवि कहता है कि जिन जलभरी घटाओं को बूँदे बरसाकर दूसरों के तप्त जीवन की प्यास बुझानी थी, वे स्वयं ही बूँदों की तकदीर पी गईं। जिन कलियों की मुस्कराहट देखकर कोयल को संगीत सुनाना था, उन कलियों ने ही विषकन्या बनकर कोयल के संगीत को डँस लिया। कवि कहता है कि धरती माँ के आँगन में खिलकर भी वह उदास ही रह गया। अपनी सारी उम्र की उदासी दिखाकर अंबर से यह बात कहेगा।

सब तरफ फैले हुए अवसरवाद और लालच की प्रधानता को उजागर करता हुआ कवि मानता है कि लालच ने ही यमुना की भाँवर खारे जल के सागर से डलवा दी है। उसका दोष इतना ही था कि उसने पनघट को अपनी प्यास बता दी थी जिसका फायदा पनघट ने उठाया। काँटों के भय से फूलों ने गीतों का अपमान कर दिया। कवि कहता है कि मधुवन की सौगंध खाकर वह भौरों से यह बात कहेगा।

घन-दौलत के संकेतों पर सभ्यता का मूल्य निरन्तर कम होता जा रहा है। सभ्यता भी दौलत के संकेतों पर ही नाच रही है। जड़ बुद्धि वालों से पुरस्कार पाने के लिए बुद्धिजीवी वर्ग रामायण सुनाने में लगा हुआ है। सभ्यता का ह्रास इतना हो गया है कि अपनी शरण में आनेवाले कोमल पत्तों को लोग आँधी के हाथों नीलाम कर देने में थोड़ा भी नहीं हिचकते हैं। यह बात वह शोर मचाकर तरुवर से कहेगा।

युवा वर्ग अपनी पूरी योग्यता और क्षमता के साथ कार्य करने के लिए तैयार है लेकिन अनुभव के नाम पर बूढ़े लोगों को अवसर मिल रहे हैं। ताजी कलियाँ पूजा के काम नहीं आ रही हैं बल्कि बासी फूल मंदिर में चढ़ाए जा रहे हैं और अनुभव की दुहाई दी जा रही है। इस तरह जो अपनी शक्ति और निष्ठा के साथ काम करना चाहते हैं उनको अयोग्य माना जा रहा है। अर्पित निष्ठा की पवित्रता को ही मंदिर द्वारा दूषित ठहरा दिया जाता है। कवि निश्चय करता है कि अपनी पूरी शक्ति लगाकर वह ईश्वर से यह बात कहेगा।

इस तरह इस कविता में कवि ने एक तरफ व्यवस्था के भक्षक रूप का उद्‌घाटन किया है तो दूसरी ओर समाज में फैले हुए अवसरवाद लालच, धन के बल पर प्रतिभा को खरीदने की प्रवृत्ति और अनुभव के नाम पर युवा प्रतिभाओं को कुंठित करने की वर्तमान स्थितियों को भी अभिव्यक्त किया गया है।

३.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

कलियों की बेदाग ताजगी / पूजा के कुछ काम न आई,
बासी फूल चढ़े मंदिर में / अनुभव की दी गई दुहाई;
अर्पित निष्ठा की पावनता मंदिर ने दूषित ठहरा दी -
अपनी पूरी शक्ति लगाकर ईश्वर से यह बात कहूँगा।

संदर्भ : प्रस्तु पंक्तियाँ हिंदी के वरिष्ठ गीतकार रामावतार त्यागी द्वारा लिखित 'सागर से यह बात कहूँगा' गीत से ली गयी हैं। यह गीत क्षेमचंद्र सुमन द्वारा संपादित संग्रह 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी' में संकलित है।

प्रसंग : इस गीत में कवि ने आम आदमी की अभावग्रस्त स्थितियों का चित्रण करने के साथ-साथ रक्षक व्यवस्था के भक्षक बन जाने तथा चारों और फैले हुए अवसरवाद और स्वार्थपरता को भी उजागर किया है। कवि मानता है कि जिन लोगों को जीवन सुंदर

बनाने की जिम्मेदारी दी गई थी, आज वे ही स्वार्थी बनकर अपनी सुख-सुविधाएँ जुटाने में लग गए हैं। यहाँ तक कि बुद्धिजीवी वर्ग भी पुरस्कार की लालच में रामायण बाँचने में जुटा हुआ है। ऐसे समय में निष्ठावान व्यक्ति की कोई कीमत नहीं रह गयी है। इन पंक्तियों में कवि ने जीवन की इन्हीं विषम स्थितियों की ओर संकेत किया है।

स्पष्टीकरण : कवि के अनुसार लोग इतने अवसरवादी एवं स्वार्थी हो गए हैं कि धन के संकेतों पर ही सभ्यता नाच रही है। युवा वर्ग अपनी शक्ति एवं योग्यता के साथ कार्य करने के लिए तत्पर है लेकिन उसे अवसर नहीं दिया जा रहा है और अनुभव के नाम पर बूढ़े लोगों को अवसर मिल रहा है। कलियों की बेदाग ताजगी किसी काम नहीं आ रही है बासी फूल मंदिर में चढ़ाए जा रहे हैं। इस तरह का निर्णय लेने के पीछे अनुभव की दुहाई दी जा रही है। ईश्वर के प्रति युवा वर्ग की निष्ठा को मंदिर ही दूषित ठहरा दे रहा है। योग्य युवा वर्ग निष्ठा और ईमानदारी के साथ काम करना चाह रहा है किंतु उसकी निष्ठा और ईमानदारी पर प्रश्नचिन्ह लगाकर उसे अयोग्य ठहरा दिया जा रहा है। कवि इस विडंबनापूर्ण स्थिति को पूरी ताकत के साथ ईश्वर के सामने कहना चाहता है जिससे इन स्थितियों को बदला जा सके।

विशेष : यहाँ गीतकार युवा वर्ग की योग्यता और शक्ति को स्थापित करना चाहता है। उसका लक्ष्य सिर्फ अनुभव की दुहाई देकर अवसर हथियाने वालों के बदले निष्ठा और शक्ति के साथ योग्य और शक्तिशाली युवाओं को अवसर दिलाने का है।

३.२.४ बोध प्रश्न :

१) 'सागर से यह बात कहूँगा' गीत में समाज में फैले अवसरवाद और स्वार्थपरता पर किस तरह प्रहार किया गया है ?

अथवा

२) 'सागर से यह बात कहूँगा' गीत का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा

३) कवि रामावतार त्यागी सागर से कौन सी बात कहना चाहते हैं ?

३.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न :

प्र. १ कवि अपने प्यासे अधर दिखाकर सागर से क्या कहना चाहता है ?
उत्तर अपने प्यासे अधर दिखाकर कवि सागर से यह कहना चाहता हैं कि गंगा के तट पर बसकर भी वह प्यासा रह गया है।

प्र. २ बूँदों की तकदीर कौन पी गई ?
उत्तर बूँदो की तकदीर जलभरी घटाएँ पी गईं।

प्र. ३ कोकिल के संगीत को किसने डँस लिया ?
उत्तर कोकिल के संगीत को कलियों रुपी विषकन्याओं ने डँस लिया।

प्र. ४ धरती माँ के आँगन में खिलकर भी उदास रहने की बात कवि किससे कहना चाहता है ?

उत्तर धरती माँ के आँगन में खिलकर भी उदास रहने की बात कवि अंबर से कहना चाहता है।

प्र. ५ लालच ने यमुना की भाँवर किससे डलवा दी ?

उत्तर लालच ने यमुना की भाँवर खारे सागर से डलवा दी।

प्र. ६ शूलों के भय से गीतों का अपमान किसने किया ?

उत्तर शूलों के भय से गीतों का अपमान फूलों ने किया।

प्र. ७ सभ्यता किसके संकेतों पर नाच रही है ?

उत्तर चाँदी के संकेतों पर सभ्यता नाच रही है ?

प्र. ८ पुरस्कार पाने के लिए पंडित ने क्या किया ?

उत्तर पुरस्कार पाने के लिए पंडित ने रामायण बाँची।

प्र. ९ शरणागत पल्लव को दुनिया ने किसके हाथों नीलाम कर दिया ?

उत्तर शरणागत पल्लव को दुनिया ने आँधी के हाथों नीलाम कर दिया।

प्र. १० बासी फूलों को किसकी दुहाई देकर मंदिर में चढ़ाया गया ?

उत्तर अनुभव की दुहाई देकर बासी फूलों को मंदिर में चढ़ाया गया।

प्र. ११ अर्पित निष्ठा की पावनता को किसने दूषित ठहरा दिया ?

उत्तर अर्पित निष्ठा की पावनता को मंदिर ने दूषित ठहरा दिया।

३.३ भयभीत उसी लोचन के जल से हूँ

३.३.१ प्रस्तावना

रामावतार त्यागी उन गीतकारों में से है जिन्होंने कठिन परिस्थितियों के बीच निरंतर संघर्ष करने की प्रेरणा दी है। इसी लिए वे आँधी-तूफानों जैसी कठिनाइयों से नहीं बल्कि उन आत्मीय लोगों की संवेदनाओं से डरते हैं क्योंकि ऐसे लोगों की भावनाओं के वेग को सँभालना कठिन होता है। वे विरोधियों के बदले हमदर्दों से और शूलों के बदले फूलों से डरते हैं।

३.३.२ भावार्थ / कथा :

कवि जीवन में आने वाली कठिनाइयों से नहीं बल्कि अपने आत्मीय लोगों के आँसुओं से डरता है। वह स्पष्ट रूप से घोषित करता है कि उसे शोर मचाने वाली आँधियों से डर नहीं लगता किंतु वह उन तूफानों से अवश्य डरता है जो मौन रह कर स्थितियों का जायजा लेते रहते हैं किंतु कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते। धरती पर विरोधियों के शोर मचाने या बिजलियों के कड़कने पर वह निश्चिंत और निर्भीक बना रहता है लेकिन जो सभी स्थितिओं को चुपचाप

सहता रहा और कभी भी किसी बात की शिकायत नहीं की, उसके आँसुओं से उसे डर लगता है। वह यह भी कहता है कि उसकी जो कमजोरियाँ सबको मालूम हैं, उनसे वह कभी नहीं भयभीत होता लेकिन अपने इन आरमानों से वह डरता है, जिनके बारे में उसे कुछ ज्ञात नहीं।

कवि विरोधों की चिंता नहीं करता और न ही बाधाओं के चरणों पर नतमस्तक होकर अपनी हार स्वीकार करता है। विरोधों और बाधाओं से वह संघर्ष करता है किंतु वह उन हमदर्दों से बहुत डरता है जो बिलकूल पराये नहीं अपने हैं। उसे साफ दिखायी देने वाले काँटों से भय नहीं लगता परन्तु फूलों की मुस्कानों से डरता है। दुनिया में मिलने वाले कड़वे अनुभवों और कठिनाइयों को वह विष की तरह पी लेता है। जब-जब वह संकटों में घिरकर मरता है तब-तब अपनी संघर्ष क्षमता एवं जिजीविषा के कारण और अधिक जीवित हो उठता है। जब-जब उसे कोई रस से युक्त पनघट के समान बताता है तो उसे लगता है कि वह और अधिक रिक्त हो गया है। जो मदिरालय में पास खड़े हैं, वे कैसे भी हों, उनसे वह भयभीत नहीं होता है क्योंकि उनकी कमजोरियों और शक्तियों के बारे में वह जानता है किंतु जो दूर अनजान लोग बैठे हैं, उनसे वह बहुत डरता है।

इस तरह इस गीत में कवि ने यह संकेत किया है कि प्रकट रूप से आने वाली कठिनाइयों और संकटों का सामना करने में वह समर्थ है। विपरीत परिस्थितियों की चुनौती वह सहज ही स्वीकार कर लेता है किंतु वह अपने निकट के लोगों और हितैषियों की कोमल भावनाओं से डरता है क्यों कि ये लोग भावनावश विरोध तो नहीं करते हैं किंतु उसे पता है कि उनकी संवेदनाओं का सामना करने का साहस उसमें नहीं है।

३.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

चिंता न विरोधों की इतनी करता। बाधा के पग पर शीश नहीं धरता।
जो मेरे हैं बिलकुल न पराये हैं। उन हमदर्दों से किंतु बहुत डरता हूँ
मैं साफ दिखाई देते शूलों से भयभीत नहीं,
पर फूलों की उत्कंठित मुस्कानों से डरता हूँ।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ वरिष्ठ गीतकार रामावतार त्यागी द्वारा लिखे गए गीत 'भयभीत उसी लोचन के जल से हूँ' से ली गई हैं। यह गीत हमारी पाठ्य पुस्तक 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी' में संकलित है। इस संग्रह के संपादक श्री क्षेमचंद्र सुमन हैं।

प्रसंग : गीतकार प्रकट रूप में आने वाली कठिनाइयों और परेशानियों से नहीं डरता। इसके बदले उसे अपने आत्मीय लोगों की खामोशी और उनके आँसुओं से डर लगता है। इसीलिए वह कहता है कि शोर मचाने वाली आँधियों या कड़कने वाली बिजलियों से वह नहीं डरता लेकिन जो कभी शिकायत नहीं करते और चुपचाप आँसू बहाते हैं, उनसे वह भयभीत होता है।

स्पष्टीकरण : गीतकार विरोधों की चिंता नहीं करता क्योंकि वह उनका सामना करने के लिए स्वयं को सक्षम बना लेता है। जीवन पथ पर जो भी बाधाएँ आती हैं, कभी भी वह उनके सामने सिर नहीं झुकाता बल्कि पूरी शक्ति के साथ उनका सामना करता है। इसके विपरीत जो उसके पराये नहीं हैं, उन अपने हमदर्दों से बहुत डरता है। जो काँटे

साफ-साफ दिखायी देते हैं, उनसे वह कभी भी भयभीत नहीं होता किंतु फूलों की उत्कंठा भरी मुस्कानों से वह डरता है। इस तरह कवि कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करने से नहीं घबराता लेकिन अपने लोगों की कोमल संवेदनाओं से उसे डर लगता है।

विशेष : यहाँ गीतकार ने अपने संघर्षशील किंतु संवेदनशील मन का परिचय दिया है। जहाँ भी विपरीत परिस्थितियाँ एवं बाधाएँ हैं, उनका वह डटकर सामना करता है किंतु भावनाओं के आगे वह स्वयं को विवश पाता है।

३.३.४ बोध प्रश्न :

१) कवि कठिनाइयों के बदले भावनाओं से भयभीत क्यों है ?

अथवा

२) कवि किससे भयभीत हो जाता है ?

अथवा

३) भयभीत उसी लोचन के जल से हूँ कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

३.३.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न

प्र. १ कवि किन तूफानों से डरता है ?
उत्तर कवि मौन बैठे तूफानों से डरता है।

प्र. २ कवि किस लोचन के जल से भयभीत है ?
उत्तर जिसने मुझसे मेरी शिकायत कभी नहीं की, उसी लोचन के जल से कवि भयभीत है।

प्र. ३ कवि अपने किन अरमानों से डरता है ?
उत्तर कवि अपने उन अरमानों से डरता है जो ज्ञात नहीं हैं।

प्र. ४ कवि किसकी चिंता नहीं करता ?
उत्तर कवि विरोधों की चिंता नही करता ?

प्र. ५ कवि किसके पग पर शीश नहीं धरता ?
उत्तर कवि बाधाओं के पग पर शीश नहीं धरता ?

प्र. ६ कवि को अपना घर रीता हुआ कब लगता है ?
उत्तर जब कोई कवि को रस का पनघट कहता है तब उसे लगता है कि उसका घर रीता है।

४

इकाई की रूपरेखा

४.० उद्देश्य
४.१ जब मिलेगी रोशनी मुझसे मिलेगी
४.१.१ प्रस्तावना
४.१.२ भावार्थ /कथ्य
४.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
४.१.४ बोधप्रश्न
४.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न
४.२ उस लहर के हाथ का कंगन बनूँगा
४.२.१ प्रस्तावना
४.२.२ भावार्थ /कथ्य
४.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
४.२.४ बोधप्रश्न
४.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न
४.३ खिलौना : एक उद्‌बोधन
४.२.१ प्रस्तावना
४.२.२ भावार्थ /कथ्य
४.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
४.२.४ बोधप्रश्न
४.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न

४.० उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत पाठ्यक्रम में निर्धारित तीन कविताओं- जब मिलेगी रोशनी मुझसे मिलेगी, उस लहर के हाथ का कंगन बनूँगा और खिलौना: एक उद्‌बोधन का विवेचन किया गया है। इस के माध्यम से आप-

- कविता का भावार्थ और कथ्य जान सकेंगे।
- कविता के निर्धारित अंश की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे।
- बोध प्रश्नों की जानकारी हो सकेगी।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।

४.१ जब मिलेगी रोशनी मुझसे मिलेगी

४.१.१. प्रस्तावना –

कवि रामावतार त्यागी ने अपने जीवन में लगातार उपेक्षा और अभाव अनुभव किया है। उनका जीवन अनेक तरह के संघर्षों से घिरा रहा है। संघर्ष-उपेक्षा और छले जाने का दर्द झेलते हुए भी वे अपना कवि-धर्म निभाते हैं। उन्हें लगता है कि जब सब तरफ नफरत का बोलबाला है, मूल्य भ्रष्ट हो रहे हैं, सभ्यता भी समाप्त होती जा रही है, ऐसे कठिन समय में उनके जैसा कलाकार ही समाज को दिशा दे कर उनके जीवन में रोशनी भर सकता है।

४.१.२ भावार्थ / कथ्य-

कवि स्वयं अभाव, उपेक्षा और संघर्ष में जीते हुए भी दूसरों के जीवन में उजाला भरने और उनका पथ प्रदर्शन करने में विश्वास रखता है। इस लिए वह कहता है कि इस घर रूपी समाज में अकेले दिये जैसा वही टिमटिमा रहा है। अतः इस दिये को मत बुझाओ। लोगों को रोशनी जब भी मिलेगी, उससे ही मिलेगी। निरंतर संघर्ष करते हुए वह पूरी तरह थक चुका है। उसके पैर थकन ने छील डाले हैं। अब वह अपने संघर्षशील व्यक्तित्व और विचारों के सहारे ही चल रहा है। वह स्वयं आँसुओं को पीकर दूसरों के जीवन में हँसी बिखेरते हुए मंदिर के दिए की तरह पवित्र जीवन जी रहा है। वह अपने जीवन में दुख झेलते हुए भी दूसरों को सुखी करने की कोशिश करता रहा है। अतः वह जिस मार्ग पर चल रहा है, वही राजपथ है। उसके कदमों के निशान देखकर ही दुनिया चलेगी । इसलिए इन कदमों के निशान न मिटाने का संकेत करता है।

कवि उन लोगों को संबोधित करता है जो उसे विवश कर रहे हैं। उसके अनुसार रचनाकारों को समाज में इतना विवश नहीं कर दिया जाना चाहिए कि वे अपना मूल्य बतलाते फिरें क्योकि ऐसी स्थिति में वे अपने कवि- धर्म का पालन नहीं कर पाएँगे। नफरत फैलानेवालों से भी कवि कहता है कि समाज में इतनी नफरत न फैलाओ कि हर गाँव में प्यार को दफना दिया जाए। मूल्यों की रक्षा के लिए संघर्ष की आग कवि में ही बची है। इसलिए वह कहता है कि यह आग मत बुझाओ क्योकि आरती का दिया भी इसी आग से जलेगा।

त्यागी जी के अनुसार जिस कला का नाम लेकर हम जी रहे हैं और सभ्यता के जिस उँचे महल पर हम खड़े हैं, वह इनके जैसे कलाकारों ने ही निर्मित किया है। जीवन में खुशियों की बहार लाने वाले ये कलाकार ही हैं। अतः इन कलाकारों को बचाना होगा। इन्हें सूखने नहीं देना होगा। ये खिलकर प्रसन्न रहेंगे तभी नये जीवन का बागीचा खिलेगा।

सब तरफ रात का अंधेरा है लेकिन ये कलाकार दीपक की तरह स्वयं जलकर भी दूसरों के जीवन में सुबह का उजाला लाते हैं। ये स्वयं अपनी जिंदगी अभावों में जीकर भी दूसरों के जीवन को खुशियों से भरने का प्रयत्न करते हैं। इसीलिए इन्होंने भले ही गुनाहों में सारी जिंदगी बितायी हो किंतु मरने के बाद देवता बनकर पूजे जाएँगे। कवि कहता है कि उसके अभावों और आँसुओं को देखकर उसकी हँसी उड़ाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वह अपने दुखों की अनुभूतियों से जो कुछ व्यक्त करता है, उसी से मानव जीवन की कठिनाइयों रूपी बड़ी-बड़ी शिलाएँ गल जाती हैं।

इस तरह कवि ने अपने जैसे गीतकारों के संघर्ष और उनकी पीड़ा का हवाला देते हुए यह विचार प्रकट किया है कि ये लोग ही समाज को सही दिशा देनेवाले हैं। इसलिए इनको उपेक्षित करना या इन्हें विवश करना उचित नहीं है।

४.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

बेबसी, मेरे अधर इतने न खोलो
जो कि अपना मोल बतलाता फिरूँ मैं,
इस कदर नफरत न बरसाओ नयन से
प्यार को हर गाँव दफ़नाता फिरूँ मैं;
एक अंगारा गरम मैं ही बचा हूँ;
मत बुझाओ!
जब जलेगी, आरती मुझसे जलेगी!!

संदर्भ –

प्रस्तुत पंक्तियाँ ''आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी'' नामक संग्रह में संकलित ''जब मिलेगी रोशनी मुझसे मिलेगी कविता से ली गई हैं। इस संग्रह के संपादक ''क्षेमचंन्द्र सुमन'' हैं।

प्रसंग –

इस कविता में गीतकार ने यह स्पष्ट किया है कि जीवन के अभाव और संघर्ष झेलते हुए भी कवि अपना धर्म निभाता है। इस अंधेरे समय में वह अकेले ही दिये की तरह जल रहा है और लोगों में रोशनी बाँट रहा है।

व्याख्या –

कवि कहता है कि संघर्ष करते हुए थकान के कारण उसके पैर छिल गये हैं। अब उसमें शक्ति नहीं रह गयी है लेकिन अपने संघर्षशील विचारों के कारण वह चल रहा है। इसीलिए वह कहता है कि उसे इतना विवश न कर दिया जाये कि उसके ओठ खुल जायें और वह व्यावसायिक रूप में अपने कार्यों की कीमत माँगता फिरे। कवि लोगों से यह भी कहता है कि इतनी नफरत न फैलाओ कि प्यार को हर गाँव में दफन कर देना पड़े। माननीय मूल्यों की रक्षा करने के लिये संघर्ष करने की एक उम्मीद मात्र कवि से ही बची है। अत: वह कहता है कि उसके भीतर की संघर्ष की आग को मत बुझाओ। वह आग बची रहेगी तभी आरती का दीपक जल सकेगा।

विशेष –

यहाँ कवि ने विवश न किये जाने और नफरत न फैलाने की प्रेरणा देते हुए अपने भीतर स्थित माननवीय मूल्यों की रक्षा करने और संघर्ष की भावना बचाये रखने का संकेत किया है।

४.१.४ बोध प्रश्न :-

१) 'जब मिलेगी रोशनी मुझसे मिलेगी' में कलाकारों की संघर्ष भावना को बचाये रखने का संदेश किस तरह दिया गया है ?

अथवा

२) कवि रामावतार त्यागी ने 'जब मिलेगी रोशनी मुझसे मिलेगी' में कौन-सा संदेश दिया है ?

४.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी

१) कवि के पाँव किसने छील डाले थे ?
उत्तर कवि के पाँव थकन ने छील डाले थे।

२) कवि किसके सहारे चल रहा था ?
उत्तर कवि विचारों के सहारे चल रहा था।

३) कवि किसकी तरह जल रहा था ?
उत्तर कवि मंदिर के दिये की तरह जल रहा था ।

४) कवि के अनुसार दुनिया क्या देखकर चलेगी ?
उत्तर कवि के अनुसार दुनिया उसके पाँवों के निशान देखकर चलेगी ।

५) कवि के अनुसार आँखों से नफरत बरसाने का क्या परिणाम होगा ?
उत्तर कवि के अनुसार आँखों से नफरत बरसाने का परिणाम यह होगा कि वह प्यार को हर गाँव दफनाता फिरेगा।

६) कवि के अनुसार आरती किससे जलेगी ?
उत्तर कवि के अनुसार आरती उसके भीतर छिपी आग से जलेगी।

७) सभ्यता की अटारी किसने रची है ?
उत्तर सभ्यता की अटारी कवि जैसे बदनाम लोगों ने रची है।

८) कवि ने सारी जिंदगी किस बात में बितायी है ?
उत्तर कवि ने सारी जिंदगी गुनाहों में बितायी है।

९) कवि को मरने के बाद किस रूप में पूजे जाने का विश्वास है ?
उत्तर कवि को मरने के बाद देवता के रूप में पूजे जाने का विश्वास है।

१०) कवि के अनुसार शिला किस तरह गलेगी ?
उत्तर कवि के अनुसार शिला उसके रोने से ही गलेगी।

४.२ उस लहर के हाथ का कंगन बनूँगा

४.२.१ प्रस्तावना :-

प्रस्तुत कविता में कवि अपने समय और समाज में फैले अन्याय-अत्याचार और शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हुए हर अन्याय-पीड़ित के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता है। वह बेजुबान की आवाज-बनना चाहता है। शोषिता–पीड़ितों के भीतर स्थित विद्रोह और संघर्ष की भावना को वह समर्थन देता है।

४.२.२ भावार्थ / कथ्य :-

अपने समय के अन्याय-अत्याचार से संघर्ष करने वाली शक्तियों का समर्थन करते हुए कवि रामावतार त्यागी कहते हैं कि अब वे समंदर की सतह पर बाल खोले तैरने वाली विद्रोही लहर के हाथ का कंगन बनना चाहते हैं। विद्रोही का साथ देने के लिए भले ही कवि को प्यासा रखा जाय या उसके होठों को किरणों से छील दिया जाय अथवा उसे उदासी की गुफा में बंद कर दिया जाये, वे इन सारी बातों को माफ कर देंगे किंतु जिसकी लज्जा को बिना कारण ही स्वयंवर ने गाली दी, उस घायल दुल्हन की बेजुबान तड़पन बनकर वे प्रकट होना चाहते हैं।

कवि दहकते अंगारे की शक्ति अपने भीतर लाना चाहता है। इसलिए वह विषम स्थितियों की बिजलियों को भी चुनौती देता है। उसके अनुसार यदि वह बिजलियों की क्रूर और बेरहम चेतावनी पर मुस्कारा भर दे तो भी वे रो पड़ेंगी। इन बिजलियों का नियम ही है कि ये उजाले से लड़ती हैं और अंधेरे को सिर माथे पर बिठा लेती हैं। इस प्रतिकूल स्थिति से संघर्ष करते हुए कवि उस आग का अंगारा बनना चाहता है जो दहकने के साथ-साथ उस दिये को भी जन्म देना चाहता है जो अंधेरे के बीच उजाला फैलाता है।

वर्तमान समय छल-कपट और स्वार्थ से भरा हुआ है। काँटे भी ऐसे सुगंधित बोल बोलते हैं कि उनके फूल होने का धोखा हो जाता है। ऐसे ही कपटपूर्ण व्यवहार से प्रभावित होकर गीतकार कुछ समय के लिए गली में खो गया था। लेकिन अब वह फिर से राजमार्ग पर लौट आया है जहाँ उजाला ही उजाला है। कवि उस भावुक पुजारी का पूजन बनना चाहता है जिसकी आरती को स्वयं देवता ने अपवित्र मान लिया हो। इस तरह कवि हर उपेक्षित और ठुकराए हुए व्यक्ति का पक्ष-समर्थन करता है।

इस प्रकार इस गीत में कवि ने उपेक्षित- पीड़ित लोगों के प्रति अपनी संवेदना तो व्यक्त की ही है, वह उनके संघर्ष और विद्रोह में उनका साथी भी बनना चाहता है। वह अपने भीतर अंगारे की दहक पैदा करना चाहता है। छल-छद्म भरे युग में वह हर अपेक्षित की शक्ति बनकर उसकी कल्पनाओं को पूरा कराना चाहता है।

४.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

शूल ने ऐसे सुगंधित बोल बोले
फूल का धोखा मुझे भी हो गया था।
लौट आया राज पथ पर कुछ समय को-
मैं किसी बुजदिल गली में खो गया था;

मान ली हो देवता ने आरती जिसकी अपावन-
मैं उसी भावुक पुजारी का पतित पूजन बनूँगा।

संदर्भ:-

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी' में संकलित 'उस लहर के हाथ का कंगन बनूँगा' कविता से ली गई हैं। इसके रचियता हिंदी के वरिष्ठ गीतकार रामावतार त्यागी जी हैं। इस संकलन के संपादक क्षेमचंद्र सुमनजी हैं।

प्रसंग :-

इस गीत में गीतकार ने उन लोगों के प्रति संवेदना प्रकट की है जो हमेशा उपेक्षित और अन्याय-पीड़ित रहे हैं। कवि उनकी शक्ति बनना चाहता है। कभी वह बागी लहर के हाथ का कंगन बनना चाहता है तो कभी घायल दुल्हन की बेजुबाँ तड़पन। दीपक को जन्म देने वाले अंगारे की दहकन बनकर वह बेरहम बिजलियों को भी चुनौती देता है। इसी संदर्भ में कवि ने प्रस्तुत पंक्तियाँ भी लिखी हैं।

व्याख्या :-

गीतकार के अनुसार आज का समय छल-छद्म युक्त व्यवहारों से भरा है। काँटे भी ऐसी मीठी और सुगंधित भाषा में बात करते हैं कि उनके फूल होने का धोखा हो जाता है किंतु इस धोखे में वह बहुत देर तक नहीं रहता। कुछ समय को अवश्य वह गली में खो जाता है लेकिन शीघ्र ही वह राजपथ पर लौट आता है। यह ऐसा राजपथ है जिस पर चलते हुए वह दुखी उपेक्षित लोगों को सहारा देते हुए उनकी हिमायत करता है। इसी लिए जिस पुजारी की आरती को देवता ने स्वयं अपवित्र मान लिया था, उस भावुक पुजारी का पूजन बनना चाहता है।

विशेष :-

इस तरह कवि धोखे और छल का रहस्य समझकर उपेक्षितों का पक्ष लेता है।

४.२.४ बोध प्रश्न :

१) 'उस लहर के हाथ का कंगन बनूँगा' में कवि ने उपेक्षितों- पीड़ितों के विद्रोह और संघर्ष के समर्थन को किस तरह व्यक्त किया है ?

अथवा

'उस लहर के हाथ का कंगन बनूँगा' का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

४.२.५ लघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

१) कवि किसके हाथ का कंगन बनना चाहता है ?
उत्तर कवि समंदर की बागी लहर के हाथ का कंगन बनना चाहता है ।

२) लाज को बेबात किसने गाली दी ?
उत्तर लाज को बेबात स्वयंवर ने गाली दी।

३) कवि किसकी बेजुबाँ तड़पन बनना चाहता है ?
उत्तर कवि घायल दुल्हन की बेजुबाँ तड़पन बनना चाहता है।

४) बिजलियाँ कब रो पड़ेंगी ?
उत्तर कवि यदि बिजलियों की बेरहम चेतावनी पर मुस्करा भर दे तो वे रो पड़ेंगी।

५) बिजलियों का क्या नियम है ?
उत्तर बिजलियों का नियम है कि वे उजाले से लड़ेंगी और अंधेरे को सिर पर जड़ेंगी।

६) कवि किसका दहकता तन बनना चाहता है ?
उत्तर कवि तपसी अंगारे का दहकता तन बनना चाहता है।

७) कवि को शूल के फूल होने का धोखा कब हुआ था ?
उत्तर शूल ने जब सुगंधित बोल बोले तो कवि को उसके फूल होने का धोखा हो गया था।

८) कवि कुछ समय के लिए कहाँ खो गया था ?
उत्तर कवि कुछ समय के लिए किसी बुजदिल गली में खो गया था।

९) पुजारी की आरती को अपावन किसने मान किया था ?
उत्तर देवता ने पुजारी की आरती को अपावन मान लिया था।

१०) कवि किसका पतित पूजन बनना चाहता है ?
उत्तर जिसकी आरती अपावन मान ली गई, कवि उस भावुक पुजारी का पतित पूजन बनना चाहता है।

११) कवि को किस बात का दर्द है ?
उत्तर कवि को दर्द घटने का दर्द है।

१२) कवि को किसका हाथ छूटता अनुभव होता है ?
उत्तर कवि को उदासी का हाथ छूटता अनुभव होता है।

१३) कवि किसका सरल बचपन बनना चाहता है ?
उत्तर कवि सारे नियमों को तोड़कर कल्पना को पूजने वाली चंचल जवानी का सरल बचपन बनना चाहता है।

४.३ खिलौना : एक उद्‌बोधन

४.३.१ प्रस्तावना :-

गीतकार रामावतार त्यागी ने अपने गीतों में व्यक्तिगत दुख ही नहीं जगभर का दुख-दर्द व्यक्त किया है। उन्होंने दुख सहते हुए भी किसी तरह का समझौता न करने की दृढ़ इच्छा

प्रकट की है। एक गीतकार दीन-दुखी और उपेक्षित लोगों की पीड़ा को अभिव्यक्ति देता है, इसलिए उसे कई बार व्यवस्था -विरोधी भी बनना पड़ता है। व्यवस्था भी उसे अपने पक्ष में करने के लिए कई तरह के प्रलोभन देती है। ऐसे प्रलोभनों को इन्कार करते हुए गीतकार ने संघर्ष का मार्ग अपनाया है।

४.३.२ भावार्थ /कथ्य : -

गीतकार स्वयं तमाम कष्ट झेलते हुए भी कोई समझौता करने में विश्वास नहीं रखता। खिलौना : एक उद्‌बोधन कविता में वह स्पष्ट कहता है - दुनिया इसी लिए हाथ धोकर उसके पीछे पड़ी है क्योंकि उसने किसी भी नुमाइशघर में सजने से इनकार कर दिया है। वह सामान्य लोगों के दुख-दर्द को अभिव्यक्ति देता रहा है। अतः लोग उसे व्यवस्था-विरोधी मान कर तरह-तरह से प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। उसके अनुसार दुनिया कभी उससे विनती करती है, कभी उस पर हुक्म चलाती है। वह कभी रोकर प्रभावित करती है तो हँसकर या गाकर। इस तरह दुनिया तरह-तरह के रूप बदलकर उसको छलने का प्रयास करती है लेकिन उस पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मंदिर भी उसकी पूजा इसीलिए नहीं स्वीकार करता क्योंकि उसने किसी सिंहासन या व्यवस्था के हाथों पुजने से इनकार कर दिया है।

कवि की इच्छा रही है कि उसके मन में पलने वाली जग की पीड़ा के भी फेरे पड़ जाएँ। जो पीड़ा लोगों के दुख-दर्द देखकर बाल अभागिन की तरह उसके मन में बसी हुई है, वह दूर हो जाए। लोगों के सुख के दिन लौट आएँ । इसके लिए उसने रोज सवेरे उठकर हाथ की रेखाएँ देखीं। मन की पीड़ा को सौभाग्यशाली बनाने के लिए उसे जो भी दंड मिले, वह सहन करने को तैयार है लेकिन वह उस मुरली की गुंजन बनना चाहता है जिसने दुनिया के आदेशों पर बजने से इनकार कर दिया है। वह अपने मन के भावों को व्यक्त करने पर कोई नियंत्रण स्वीकार नहीं कर पाता। मन के भावों को व्यक्त करने के लिए मन का घाव हरा रखना पड़ता है। इसके लिए कई बार अनचाही हँसी हँसनी पड़ती है। दीपक अपनी रोशनी बिखेरता रहे, इसके लिए उसे प्रज्वलित करने हेतु कई बार अपने होठों के बीच अंगारा दबाना पड़ता है। लोगों के दुख दर्द को व्यक्त करने वाला साहित्य लिखने के लिए स्वयं भी दुख-दर्द सहना पड़ता है। इस तरह उसकी आँखों को रोते रहने का अधिकार उसने खुद दिया है। दुख पूर्ण जीवन उसने खुद चुना है क्योंकि सुख पाने के लिए सच को अस्वीकार करने से इनकार किया है।

सामान्य लोगों के दुख-दर्द के प्रति समर्पित होने की इच्छा उसमें जगी तो उसे तरह-तरह के आरोप सहने पड़े। उसे कलंकित किया गया। हर मंदिर पर उसकी निंदा अंकित कर दी गई लेकिन वह सत्य के मार्ग पर चलने वाली श्रद्धा के खंडहर का दीपक बना रहा जिसने जोर से आने वाली आँधी के सामने भी बुझने से इनकार कर दिया है। विपरीत स्थितियों में संघर्ष करते हुए सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा।

इस तरह गीतकार ने सामान्य लोगों के दुखदर्द को दूर करने के लिए सत्ता-व्यवस्था का विरोध सहते हुए भी समझौता न करने तथा संघर्ष करते हुए सत्य का साथ देने की प्रेरणा दी है।

४.३.२ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :-

मन का घाव हरा रखने को अनचाहा हँसना पड़ता है,
दीपक की खातिर अंगारा, अधरों में कसना पड़ता है,
आँखों को रोते रहने का खुद मैंने अधिकार दिया है,
सच को मैंने सुख की खातिर तजने से इनकार किया है।

संदर्भ:-

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'आज के लोकप्रिय कवि:रामवतार त्यागी' में संकलित 'खिलौना:एक उद्‌बोधन' कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता वरिष्ठ गीतकार रामावतार त्यागी जी हैं। इस संग्रह के संपादक श्री क्षेमचंद्र सुमनजी हैं।

प्रसंग :-

इस गीत में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि सामान्यजन के प्रति संवेदनशील रचनाकारों को एक तरफ अनेकों प्रलोभन देकर उन्हें अपने पक्ष में करने का प्रयास किया जाता है तो दूसरी तरफ उन्हें उपेक्षित और पीड़ित करने की कोशिश भी की जाती है किंतु सच्चा रचनाकार न तो किसी नुमाइश घर में सजना स्वीकार करता है और न ही सिंहासन पर बैठे सत्ताधारियों के हाथों सम्मान आदि लेकर पुजना चाहता है। वह दुनियावालों के इशारे पर लेखन नहीं करता। ऐसे रचनाकार की आंतरिक पीड़ा को कवि ने इन पंक्तियों में व्यक्त किया है।

व्याख्या :-

जन सामान्य के प्रति संवेदनशील रचनाकर मन पर लगे घावों को ही अपने साहित्य में व्यक्त करता है किंतु इन घावों को हरा रखने के लिए उसे कई बार न चाहते हुए भी खोखली हँसी हँसनी पड़ती है। दीपक अपनी रोशनी बाँटता रहे, इसके लिए उसे अपने होठों में अंगारा कसना पड़ता है। कवि इस पीड़ा को सहन कर ही लोगों के दुख-दर्द को व्यक्त कर पाता है। इसीलिए वह कहता है कि आँखों को रोते रहने की विवशता का अधिकार उसने खुद दिया है किंतु इन दुखों के बदले सुख पाने की इच्छा में उसने सच का साथ छोड़ने से इनकार किया है।

विशेष : -

कवि यहाँ स्पष्ट करता है कि जन सामान्य की पीड़ा वही व्यक्त कर सकता है जो स्वयं भी दुख और पीड़ा सह सकता है। सुखों की तलाश में सत्य का साथ छोड़ने वाले यह कार्य नहीं कर पाते।

४.३.४ बोध प्रश्न :

१) 'खिलौना : एक उद्‌बोधन' में कवि ने कौन सा संदेश दिया है ?

अथवा

२) जन सामान्य के दुखों को व्यक्त करने वाला कवि कोई समझौता करने से इनकार किस तरह कर देता है ?

अथवा

३) 'खिलौना : एक उद्‌बोधन' का कथ्य स्पष्ट कीजिए ?

४.३.५ लघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

१) कवि ने कहाँ सजने से इनकार कर दिया ?
उत्तर कवि ने किसी नुमाइश घर में सजने से इनकार कर दिया।

२) दुनिया कवि के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़ी है ?
उत्तर कवि ने किसी नुमाइश घर में सजने से इनकार कर दिया, इसलिए दुनिया हाथ धोकर उसके पीछे पड़ी है।

३) दुनिया भोले-भाले कवि को छलने के लिए क्या करती है ?
उत्तर दुनिया भोले-भाले कवि को छलने के लिए तरह तरह के रूप बदलती है।

४) मंदिर ने कवि की पूजा क्यों ठुकरा दी ?
उत्तर किसी सिंहासन के हाथों पुजने से इनकार करने के कारण मंदिर ने कवि की पूजा ठुकरा दी ।

५) कवि बाल अभागिन पीड़ा के लिए क्या चाहता रहा ?
उत्तर कवि बाल अभागिन पीड़ा के लिए चाहता रहा कि उसके फेरे फिर जाएँ।

६) जग के आदेशों पर बजने से किसने इनकार कर दिया ?
उत्तर मुरली की गुंजन ने जग के आदेशों पर बजने से इनकार कर दिया।

७) अनचाहे कब हँसना पड़ता है ?
उत्तर मन का घाव हरा रखने के लिए अनचाहे हँसना पड़ता है।

८) कवि के अनुसार दीपक की खातिर क्या करना पड़ता है ?
उत्तर कवि के अनुसार दीपक की खातिर अधरों में अंगारा कसना पड़ता है।

९) आँखों को रोते रहने का अधिकार किसने दिया है ?
उत्तर आँखों को रोते रहने का अधिकार स्वयं कवि ने दिया है।

१०) सुख की खातिर कवि क्या तजने से इनकार करता है ?
उत्तर सुख की खातिर कवि सच को तजने से इनकार करता है।

११) आँधी के चढ़ने पर बुझने से किसने इनकार कर दिया ?
उत्तर आँधी के चढ़ने पर बुझने से सतवंती श्रद्धा के खंडहर के दिये ने इनकार कर दिया ।

❖❖❖❖

५

इकाई की रूपरेखा

५.० उद्देश्य

५.१ गीत जगभर के दुखों की आत्मा है

- ५.१.१ प्रस्तावना
- ५.१.२ भावार्थ /कथ्य
- ५.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ५.१.४ बोधप्रश्न
- ५.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न

५.२ मौलिक सपने भटक रहे हैं

- ५.२.१ प्रस्तावना
- ५.२.२ भावार्थ /कथ्य
- ५.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ५.२.४ बोधप्रश्न
- ५.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न

५.३ सभाएँ बंद कर

- ५.२.१ प्रस्तावना
- ५.२.२ भावार्थ /कथ्य
- ५.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ५.२.४ बोधप्रश्न
- ५.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न

५.० उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत पाठ्यक्रम में निर्धारित तीन कविताओं- गीत जगभर के दुखों की आत्मा है, मौलिक सपने भटक रहे हैं और सभाएँ बंद कर का विवेचन किया गया है। इसके आधार पर आप-

- कविताओं का भावार्थ और कथ्य जान सकेंगे।
- कविताओं के महत्त्वपूर्ण अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे।
- संभावित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से संबंधित जानकारी हो सकेगी।

५.१ गीत जगभर के दुखों की आत्मा है

५.१.१. प्रस्तावना –

कवि रामावतार त्यागी ने अपने गीतों में समाज और जीवन के दुख-दर्द को सार्थक अभिव्यक्ति दी है। वे मानते हैं कि किसी व्यक्ति के आँसू उसके भीतर स्थित पीड़ा को प्रकट करते हैं किंतु वही व्यक्ति जब पीड़ा को गीतों के माध्यम से व्यक्त करता है तो उसमें पूरे संसार की दुख पूर्ण आत्मा प्रकट हो जाती है। कवि ने दीपक, बादल, सूर्य, फूल, बूँद और हिमालय के माध्यम से यही संकेत किया है कि ये सभी अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीते हैं।

५.१.२ भावार्थ / कथ्य-

कवि के अनुसार आँसू मन के भीतर छिपे दुख के प्रकट रूप होते हैं तो गीत संपूर्ण संसार के दुखों की आत्मा के रूप में व्यक्त होते हैं। कुछ लोग इतने अधिक दुखी होते हैं कि उनसे रोया भी नहीं जाता। उनके आँसू सूख जाते हैं। ऐसे में उनकी बेचैनी इतनी बढ़ जाती है कि चाँदनी रात की शीतलता भी उनके लिए कष्टदायक बन जाती है। वे सो नहीं पाते। ऐसे लोगों के दर्द को जो गीतकार लिखता है, उसके गीत समय की धारा के साथ बहकर नष्ट नहीं होते बल्कि ऐसा साहित्य ही दीर्घजीवी होता है। ज्ञान होना व्यक्तिगत विशेषता होती है लेकिन प्रेम हर व्यक्ति के भीतर स्थिर परमात्मा का स्वरूप होता है। इसीलिए प्रेम से भरा व्यक्ति समाज के लिए कुछ भी करने को तत्पर रहता है।

दीपक कुछ पाने की आशा में नहीं जलता और न ही उसे अपनी वंश परंपरा चलाने की चिंता होती है। वह तो इस लिए जलता है कि उसके जलने से किसी को सुख मिलेगा। लोगों के जीवन में व्यक्त अंधेरा दूर हो सकेगा। इसी तरह बादल भी रोकर अर्थात बूँदों के रूप में अपने आँसू बहाकर पृथ्वीवासियों को सुखी बनाना चाहता है। कवि के अनुसार बादल आँसू बरसाकर धरती की सारी उदासी धुल देता है।

इसी तरह सूर्य भी चंदन-वन की शीतलता में विश्राम नहीं करता बल्कि वह भी आग में तपता रहता है जिससे पूरे संसार को रोशनी और गरमाहट मिले । फूल में भी अपने जीवन का कोई मोह नहीं होता। वह उस व्यक्ति को भी सुगंध देता है जो उसे तोड़ लेता है। इस तरह वह अपनी हत्या करने वाले को भी सुख ही देता है। सत्य तो अपने कातिल को शरण नहीं देता है किंतु जिनमें भावना प्रधान होती है, वे सहज ही सब को क्षमा कर देते हैं।

बूँद अपने लिए कभी नहीं सोचती । वह अपनी कोई दुनिया नहीं बसाती। वह तो सागर को ही समृद्ध करती है। हिमालय यदि महान माना जाता है तो इसलिए कि उसने अपनी आँखों से गंगा बहाकर धरती की प्यास बुझाई है। इसी तरह हर किसी के प्रियतम तो अलग होते हैं लेकिन उनकी रचनाएँ हर किसी को प्रियतमा की तरह प्रिय होती हैं।

इस प्रकार कवि यह संकेत करता है कि गीतों में सारे जमाने का दुख-दर्द व्यक्त होता है। गीत की सार्थकता तभी होती है जब वह जगभर के दुखों की आत्मा बनकर उनके जीवन को सुखमय बना सके।

५.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

सूर्य बसता है न चंदन के सदन में
विश्व भर के वास्ते तपता अगन में
गंध देता है उसे भी तोड़ ले जो-
मोह अपना कुछ नहीं होता सुमन में
सत्य कातिल को शरण देता नहीं है
भावना की राजभाषा ही क्षमा है।

संदर्भ –

प्रस्तुत पंक्तियाँ क्षेमचंद्र सुमनजी द्वारा संपादित कवितासंग्रह ''आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी'' में संकलित ''गीत जगभर के दुखों की आत्मा है'' कविता से ली गई हैं। इस कविता के रचयिता रामावतार त्यागी ने गीतों में सभी लोगों के दुख-दर्द व्यक्त करने की क्षमता होने का उल्लेख किया है।

प्रसंग –

कवि की यह मान्यता है कि किसी व्यक्ति के आँसू उसके व्यक्तिगत दुखों की अभिव्यक्ति होते हैं किंतु गीतों के माध्यम से कवि सारे जग के दुखों को व्यक्त करता है। गीतकार में दीपक और बादल जैसी परोपकार की भावना होती है। दीपक स्वयं अपने लिए कुछ पाने की इच्छा से नहीं जलता, बल्कि वह दूसरों को रोशनी बाँटने के लिए जलता है। इसी तरह बादल भी अपनी आँखों से आँसुओं को बरसाकर पूरी धरती की प्यास बुझाता है। इसी क्रम में कवि सूर्य और फूल की नि:स्वार्थता भी प्रकट करता है।

व्याख्या –

कवि के अनुसार सूर्य किसी चंदन के घर की छाँव में नही रहता बल्कि वह दुनिया भर के लोगों के कल्याण के लिए आग में तपता रहता है जिससे लोगों को रोशनी और ऊष्मा मिलती रहे। फूल भी उस व्यक्ति तक को सुगंध देता है जो उसे तोड़कर उसकी डाली से अलग कर देता है। फूल में अपने लिए कोई मोह नहीं होता। सत्य कभी कातिल को शरण नहीं देता किंतु जो भावना प्रधान है, वह हमेशा क्षमा करते हुए उसे भी अपनी सुगंध प्रदान करता है।

विशेष –

सूर्य और फूल के माध्यम से कवि जीवन की सार्थकता दूसरों की भलाई करने में ही मानता है।

५.१.४ बोध प्रश्न :-

१) कवि रामावतार त्यागी ने 'गीत को जगभर के दुखों की आत्मा' क्यों माना है ?
२) 'गीत जगभर के दुखों की आत्मा है' में कवि ने परोपकार के महत्त्व को किस तरह प्रतिपादित किया है ?
३) 'गीत की सार्थकता लोगों के दुख-दर्द की अभिव्यक्ति में ही है'स्पष्ट कीजिए।

५.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी

१) कवि ने जगभर के दुखों की आत्मा किसे माना है ?
उत्तर कवि ने गीत को जगभर के दुखों की आत्मा माना है।

२) कवि ने अश्रु को किसका निर्वसन तन माना है ?
उत्तर कवि ने अश्रु को अपनी ही व्यथा का निर्वसन तन माना है।

३) किन लोगों को रोया नहीं जाता ?
उत्तर कुछ दुखी लोगों को रोया भी नहीं जाता।

४) समय की धार से कौन धोया नहीं जा सकता ?
उत्तर सभी का दर्द जिस गीत में लिख दिया गया हो, वह गीत समय की धार से धोया नहीं जाता।

५) कवि के अनुसार ज्ञान किस तरह की चेतना होता है ?
उत्तर कवि के अनुसार ज्ञान सबकी व्यक्तिवादी चेतना होता है।

६) भूमि की उदासी किस तरह धुल गई ?
उत्तर भावुक बादलों के रोने के कारण भूमि की उदासी धुल गई।

७) सूर्य विश्व भर के लिए क्या करता है ?
उत्तर सूर्य विश्व भर के लिए आग में तपता है।

८) कवि के अनुसार तोड़ लेनेवाले को भी फूल क्या देता है ?
उत्तर कवि के अनुसार तोड़ लेनेवाले को भी फूल सुगंध देता है।

९) सत्य किसे शरण नहीं देता ?
उत्तर सत्य कातिल को शरण नहीं देता।

१०) क्षमा किसकी राजभाषा होती है ?
उत्तर क्षमा भावना की राजभाषा होती है।

११) बूँद किसकी नगरी सजाता है ?
उत्तर बूँद सिंधु की नगरी सजाता है।

१२) हिमालय को बड़प्पन क्यों मिला ?
उत्तर भूमि को अपनी आँख से गंगा पिलाने के कारण हिमालय को बड़प्पन मिला।

१३) कवि ने हर किसी की प्रियमता किसे कहा है ?
उत्तर कवि ने हर किसी की प्रियतमा रचना को कहा है।

५.२ मौलिक सपने भटक रहे हैं

५.२.१ प्रस्तावना :-

इस गीत में कवि ने वर्तमान समय की विडंबना को व्यक्त किया है कि जो सचमुच यश और प्रतिष्ठा के हकदार हैं, उनकी उपेक्षा हो रही है तथा जो नकली होते हुए भी असली होने का भ्रम फैलाने में सफल हो जाते हैं, वे पूजे जा रहे हैं। जो मौलिक कल्पनाओं वाला सृजन है, उसे कोई नहीं पूछ रहा और अनुकृतियों को सम्मानित किया जा रहा है। सृजन के बदले अनुवाद बढ़ रहे हैं और प्रतिभाएँ भी खुशामद करने में लगी हुई हैं। इन स्थितियों के प्रति गहरी चिंता इस गीत में व्यक्त की गई है।

५.२.२ भावार्थ / कथ्य :-

वर्तमान समय की विडंबनाओं के प्रति गीतकार की चिंता यह है कि उसे किस विशेषण से संबोधित किया जाय या कौन-सा नाम दिया जाय क्योंकि यह ऐसा विकट समय है कि मौलिक सपने दर-दर भटक रहे हैं और उनकी नकल करने वाले सम्मानित हो रहे हैं। आज का समय ऐसा है कि उजाले को आँगन-आँगन घूमकर गीत गाते हुए भिक्षा माँगनी पड़ रही है और अंधेरा सूरज का नकली मुकुट लगाकर बेरोकटोक सब तरफ घूम रहा है। कवि को समझ में नहीं आता कि, ऐसे युग का किन शब्दों में अपमान किया जाए। यह ऐसा भयानक समय है कि असली रचनाओं की चर्चा भी नहीं हो रही है और अनुवादों के वंशवृक्ष बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में यश के लिए आत्महत्या करने के अलावा और कोई रास्ता शेष नहीं रह जाता। रचयिता की यह विवशता देखकर उसकी रचना आँख मूँद कर रोती है।

कवि बहुत दुखी है कि न जाने उसकी पीढ़ी का उपसंहार कैसा होगा क्योंकि भाषा तो बंद पुस्तक-सी पड़ी हुई है और आलोचकगण व्याकरण पढ़ने में व्यस्त हैं। भाषा के बदले व्याकरण को महत्त्व देना वैसे ही है जैसे मूल को छोड़कर अनुवाद को महत्व देना। पहले भाषा बनती है तब उसका व्याकरण निश्चित किया जाता है। संन्यास अकेला रो रहा है और सारी दुनिया मुस्काती है।

परिस्थिति की जटिलता यह भी है कि प्रतिभाशाली बुद्धिजीवी आज व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए पदों पर आसीन सत्ताधारियों को प्रणाम करने सुबह-सुबह जाने लगे हैं। कलाकार का इस तरह चाटुकारिता करना कवि को कचोटता है। इसीलिए वह ऐसे चाटुकार बुद्धिजीवियों से सवाल करता है कि आने वाला युग जब उनकी इस असलियत के बारे में पूछेगा तो वे क्या जवाब देंगे क्योंकि वे तो राम के शरीर से मिट्टी नोच-नोचकर रावण की मूर्ति गढ़ने में व्यस्त हैं। बुद्धिजीवियों का दायित्व समाज को सही दिशा दना है किंतु वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए राम के बदले रावण की मूर्ति गढ़ने में लगे हुए हैं।

इस तरह इस गीत में कवि ने आज के बुद्धिजीवियों की असलियत को उजागर करते हुए वर्तमान समय की विडंबनाओं पर प्रहार किया है। आज सत्य के बदले झूठ को प्रतिष्ठा मिल रही है। जो नकली होते हुए भी असली होने का भ्रम पैदा करने में सफल हैं, वे ही पूजे जा रहे हैं। जिन पर समाज को दिशा देने का दायित्व है, वे भी सत्ताधारियों की खुशामद करने में व्यस्त हैं। ऐसे समय में कवि की चिंता झूठ का पर्दाफाश करते हुए सच्चाई को सामने लाने की है।

५.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

प्रतिभा पद को प्रणाम करने । उठकर सुबह-सुबह जाती है
आने वाले युग को बोलो। कलाकार क्या उत्तर दोगे!
मिट्टी नोच राम के तन से। तुम रावण की मूर्ति गढ़ रहे!

संदर्भ:-

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी' में संकलित 'मौलिक सपने भटक रहे हैं' नामक गीत से ली गई हैं। क्षेमचंद्र सुमन जी द्वारा संपादित इस संग्रह के रचयिता वरिष्ठ गीतकार रामावतार त्यागी जी हैं। इस गीत में कवि ने वर्तमान समय की इस विडंबना को उजागर किया है कि आज मौलिकता की पूछ नहीं हो रही बल्कि उसकी अनुकृतियाँ सराही जा रही हैं।

प्रसंग :-

कवि इसलिए चिंतित है कि वर्तमान युग को किस विशेषण से संबोधित किया जाय क्यों कि आज की विडंबना यह है कि मौलिक सपने तो भटक रहे है और उनकी नकल को सम्मानित किया जा रहा है। उजाला दर-दर ठोकरें खा रहा है और अंधेरा सूरज का मुखाटा लगाए बेरोक टोक घूम रहा है। मूल सृजन के बदले अनुवाद बढ़ रहे हैं? ऐसे समय में बुद्धिजीवियों के बीच भी स्वार्थ साधने की भावना विकसित हो रही है। इन पंक्तियों में कवि ने इसी बात पर चिंता व्यक्त की है।

व्याख्या :

गीतकार इस बात से आहत है कि प्रतिभाशाली बुद्धिजीवी वर्ग सत्ताधारियों के यहाँ प्रणाम करने सुबह-सुबह जाने लगे हैं। बुद्धिजीवी जब पदासीन लोगों को नतमस्तक होने लगता है तो वह अपने दायित्व को पूरा नहीं कर पाता। बुद्धिजीवी कलाकार से अपेक्षा होती है कि वह समाज को सही दिशा दे। इसीलिए गीतकार ऐसे कलाकारों से प्रश्न करता है कि वे आने वाले युग को क्या उत्तर देंगे क्योंकि वे तो समाज को सही दिशा देने के बदले आपना स्वार्थ साधने के लिए राम की मूर्ति से मिट्टी नोच-नोच कर रावण की मूर्ति गढ़ने में लगे हुए हैं।

विशेष :

गीतकार ने सच्चे कलाकार को उसके दायित्व का अहसास कराते हुए उसे स्वार्थ के बदले समय और समाज को सही दिशा देने की प्रेरणा दी है।

५.२.३ बोध प्रश्न

प्र. १ वर्तमान समय में पथ – भ्रष्ट कलाकारों को त्यागी जी ने किस तरह सचेत किया है?

अथवा

प्र. २ रामावतार त्यागी ने 'मौलिक सपनों को भटकते देखकर कौन सी चिंता प्रकट की है?'

अथवा

प्र. ३ 'मौलिक सपने भटक रहे हैं का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

५.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघूत्तरी प्रश्न

प्र. १ मौलिक सपने क्या कर रहे हैं ?
उत्तर मौलिक सपने भटक रहे हैं।

प्र. २ सूरज वाला मुकुट लगाए कौन निर्बाध घूम रहा है ?
उत्तर सूरज वाला मुकुट लगाए अंधेरा निर्बाध घूम रहा है।

प्र. ३ उजियाला कहाँ भिक्षा माँग रहा ?
उत्तर उजियाला आँगन-आँगन गीत सुनाते हुए भिक्षा माँग रहा है।

प्र. ४ कवि के अनुसार सृजन के बदले किसके वंश बढ़ रहे हैं ?
उत्तर कवि के अनुसार सृजन के बदले अनुवादों के वंश बढ़ रहे हैं।

प्र. ५ यश के लिए कौन-सा रास्ता शेष रहता है ?
उत्तर यश के लिए आत्महत्या का रास्ता शेष रहता है।

प्र. ६ निर्माता की बेबसी देखकर कौन रोती है ?
उत्तर निर्माता की बेबसी देखकर रचना आँख मूँद कर रोती है।

प्र. ७ बंद पुस्तक-सी कौन पड़ी है ?
उत्तर भाषा बंद पुस्तक-सी पड़ी है।

प्र. ८ आलोचक क्या पढ़ रहे हैं ?
उत्तर आलोचक व्याकरण पढ़ रहे हैं।

प्र. ९ पद को प्रणाम करने कौन जाता है ?
उत्तर प्रतिभा पद को प्रणाम करने जाती है।

प्र. १० कवि के अनुसार कलाकार किसकी मूर्ति गढ़ रहे हैं ?
उत्तर कवि के अनुसार कलाकार रावण की मूर्ति गढ़ रहे हैं।

प्र. ११ त्यागी जी के अनुसार कलाकार रावण की मूर्ति गढ़ने के लिए कहाँ से मिट्टी नोच रहे हैं ?
उत्तर त्यागी जी के अनुसार कलाकार रावण की मूर्ति गढ़ने के लिए राम के तन से मिट्टी नोच रहे हैं।

५.३ सभाएँ बंद कर

५.३.१ प्रस्तावना :

'सभाएँ बंद कर' कविता में कवि ने यह संकेत किया है कि सिर्फ नारे लगाने, जुलूस-प्रदर्शन करने और बातें बनाने से कोई देश प्रगति नहीं करता। देश की प्रगति के लिए ऐसे कर्मठ लोगों की आवश्यकता होती है जो किसान की तरह खेतों में या मजदूर की तरह कारखानों में

काम करें। अत: निरी बातें बनाने के बदले खेतों – कारखानों में काम करके देश को अधिक समृद्ध किया जा सकता है।

५.३.२ भावार्थ / कथ्य

कवि रामावतार त्यागी ने कर्मठता को महत्त्व देते हुए यह स्पष्ट किया है कि कोई देश जुलूसों और नारों के रूप में प्रदर्शन करने या प्रचार करने से नहीं जीतता है। अत: सभाएँ बंद करके खेतों – कारखानों में काम करना अधिक उचित है। सिपाहियों के लिए कपड़े चाहिए जो कोई सभा नहीं बुन सकती। उसके लिए कपड़ा मिलों में काम करने वाले श्रमिक की आवश्यकता होती है। इसी तरह जवानों की रोटी सभाओं में बड़े-बड़े नारे देने वाले नहीं उगा सकते। रोटी तो मिलती है खेतों में काम करने वाले किसानों के श्रम से। अत: कवि संकेत एवं प्रेरणा देता है कि समूचे देश पर संकट आ पड़ा। लोग जान की बाजी लगाकर देश की रक्षा में जुटे हैं। यही वक्त है जब देश के लिए कुछ काम किया जाए। अत: कवि खेतों और कारखानों में काम करने के लिए समूचे देशवासियों का आह्वान करता है।

विवादग्रस्त बातें उठाने और गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई देश कभी नहीं जीतता। अत: कवि ने सभाएँ करना बंद करके देश के लिए खेतों और कारखानों में काम करने की प्रेरणा दी है। उसका मानना है कि यदि आकाश गरजता हो या धरती लरज रही हो अर्थात कितनी भी कठिन परिस्थितियाँ क्यों न हों खाली बैठना देश के हित में नहीं है। अत: कवि कहता है कि हजारों आँधियाँ आएँ या हजारों बिजलियाँ टूटें, यदि हम कुदाली को थामे रहे तो भी हिमालय कोई छीन नहीं सकेगा। इसके बदले कवि का मानना है कि निजी बातें बनाने और बैठक जमाने से कोई देश कभी नहीं जीतता है। अत: सभाएँ करना बंद कर खेतों और कारखानों में काम करना चाहिए।

५.३.३ संदर्भ सहित व्याख्या :-

सिपाही के लिए कपड़े, जवानों के लिए रोटी,
सभाएँ बुन नहीं सकतीं उगा सकते नहीं नारे,
पड़ा है देश पर संकट लगी है जान की बाजी,
यही तो वक्त है कुछ काम कर, कुछ काम कर प्यारे

संदर्भ:-

प्रस्तुत पंक्तियाँ क्षेमचंद्र सुमन द्वारा संपादित 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी' में संकलित 'सभाएँ बंद कर' कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता हिंदी के वरिष्ठ कवि रामावतार त्यागी जी हैं। इस कविता में कवि ने सभाएँ करने या जुलूम में नारे लगाने के बदले खेतों-कारखानों में काम करने को अधिक महत्त्व दिया है।

प्रसंग :-

इस कविता में कवि ने देश के सामने आये संकट का हवाला देते हुए कहा है कि कोई भी देश जुलूस निकालने, नारे लगाने या प्रदर्शन करने से प्रगति नहीं करता। सिपाहियों को रोटी और कपड़ा चाहिए जिसे जुलूस और नारों द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता है।

व्याख्या :-

कवि के अनुसार सिपाही के लिये कपड़े सभाएँ नहीं बुन सकती और न ही जवानों के लिए रोटी का अनाज नारे उगा सकते है। कारखानों में काम करनेवाले मजदूर कपड़ा बुनते हैं और खेतों में काम करनेवाले किसान अनाज उगाते हैं। अत: कवि मानता है कि देश पर जो संकट आ पड़ा है, उसमें जान की बाजी लगाकर हमें देश की रक्षा करनेवाले सिपाहियों के लिये रोटी और कपड़े की व्यवस्था करनी है। यह काम विवाद खड़ा करने या गड़े मुर्दे उखाड़ने से नहीं होगा। इसके लिए सभा करने या जुलूस निकालने के बदले खेतों और कारखानों में काम करना होगा। अत: कवि प्रेरणा देता है कि इस संकट के समय में हम कुछ काम करें, सिर्फ सभाएँ नही करें।

विशेष : -

इस तरह कवि ने जुलूस प्रदर्शन के बदले कर्मठ बनने की प्रेरणा दी है।

५.३.४ बोध प्रश्न :

१) रामावतार त्यागी ने सभाएँ बंद करके खेतों कारखानों में काम करने की प्रेरणा किस तरह दी है ?

२) सभाएँ बंद कर कविता के माध्यम से कवि ने देश के लिए कर्मठ बनने का संदेश किस तरह दिया है ?

५.३.५ लघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

१) कवि सभाएँ बंदकर कहाँ चलने का संदेश देता है ?

उत्तर कवि सभाएँ बंदकर खेतों या कारखानों की ओर चलने का संदेश देता है।

२) सिपाही के लिए कपड़े कौन नहीं बुन सकता ?

उत्तर सिपाही के लिए कपड़े सभाएँ नही बुन सकतीं।

३) जवानों के लिए रोटी कौन नहीं उगा सकता ?

उत्तर जवानों के लिए रोटी नारे नहीं उगा सकते।

४) कवि ने देश पर आए संकट के समय क्या करने के लिए कहा है ?

उत्तर कवि ने देश पर आए संकट के समय कुछ काम करने के लिए कहा है।

५) कवि के अनुसार देश की जय किस बात में निहित है ?

उत्तर कवि के अनुसार देश की जय खाली न बैठने में निहित है।

६) कवि के अनुसार निरी बातें बनाने या बैठक जमाने से क्या नहीं होता ?

उत्तर निरी बातें बनाने या बैठक जमाने से कोई देश नहीं जीतता।

❖❖❖❖

१

श्रध्दा – भक्ति (आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

इकाई की रुपरेखा

१.० उद्देश्य

१.१ प्रस्तावना

१.२ निबंध का सार

१.३ संदर्भसहित स्पष्टिकरण

१.४ बोधप्रश्न

१.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.० उद्देश्य

इस खंड की पहली इकाई में हम आ. रामचंद्र शुक्ल का प्रख्यात निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' दे रहे हैं। इस निबंध के वाचन के साथ आप इसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या भी पढ़ेंगे तथा निबंध के विभिन्न पक्षों की विशेषताएँ भी जानेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

-निबंध में प्रयुक्त कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे;

-निबंध के परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे;

-निबंध की शैली, भाषा और संवाद की विशेषताएँ बता सकेंगे; और

-उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से निबंध के महत्त्व को पहचान कर सकेंगे।

१.१ प्रस्तावना

हिन्दी समीक्षा तथा निबंध के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुल्क के कृतित्व का महत्त्वपूर्ण स्थान है। खड़ीबोली गद्य की जो परंपरा भारतेन्दु युग से सजीवता और सरसता को लेकर उभरी थी, आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जिसे व्याकरण सम्मत, स्वच्छ और विचारात्मक बनाने का प्रयत्न किया। शुक्लजी ने अपनी गंभीर अभिव्यक्ति क्षमता, मौलिकता तथा पाण्डित्य द्वारा उसे सशक्त, गंभीर और सुगठित बनाया। शुक्ल जी के निबंधों के भीतर उनका व्यक्तित्व झाँकता हुआ दिखाई देता है। यह व्यक्तित्व एक चिंतक का है। जो साहित्य के गंभीर प्रश्नों पर सूक्ष्मता से मनन करता है। यह व्यक्तित्व एक भावुक और संवेदनशील व्यक्ति का है जो अनुकूल और प्रतिकूल प्रसंगों पर रीझता और खीझता है। शुक्ल जी के व्यक्तित्व में और उनके निबंधों में सर्वत्र वाग्वैदग्धता, त्व्खा व्यंग्य और उनकी सूक्ष्म दृष्टि सर्वत्र झलकता है।

शुल्क जी वृत्ति से एक अध्यापक थे। इसलिए व्यास-शैली उनके निबंधों की पहचान है। भावात्मक शैली भी शुक्ल जी की प्रमुख विशेषता है। उनके निबंधों के सम्बन्धों में बाबु गुलाबराय ने लिखा है कि, ''शुक्ला जी के निबंधों में उनका अपना मस्तिष्क ही नहीं, ह्रदय भी रमता है। 'श्रद्धा-भक्ति' शीर्षक निबंध आ. शुक्ल जी का बहुत ही चर्चित निबंध है।''

१.२ निबंध का सार

'श्रद्धा-भक्ति' निबंध में आचार्य शुक्ल जी ने श्रद्धा, भक्ति और प्रेम का विवेचन बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ किया है। किसी मनुष्य में जन साधारणसे विशेष गुण व शक्ति का विकास देख उसके संबंध में जो एक स्थायी आनंद पद्धति ह्रदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं। प्रेम और श्रद्धा में अंतर यह है कि, प्रेम कभी-कभी किसी का रूप मात्र देखकर भी उत्पन्न हो जाता है। जिसमें उसका कोई हाथ नहीं है। लेकिन, श्रद्धा में ऐसा नहीं होता। प्रेम के लिए यह आवश्यक है कि कोई मनुष्य हमें अच्छा लगे, लेकिन कारण हमारे सम्मान का पात्र हो। श्रद्धा का व्यापार-स्थल विस्तृत है, जबकि, प्रेम का एकांत यही कारण है कि, किसी व्यक्ति पर प्रेम रखने वालों की संख्या दो-एक हो सकती है। जबकि, श्रद्धा रखनेवाली की संख्या अनगिनत हो सकती है।

श्रद्धा एक सामाजिक भाव है। इससे अपनी श्रद्धा के बदले हम श्रदधेय से अपने लिए कोई बात नहीं चाहते। किसी से श्रद्धा करते समय हमारे मन में यह भाव बना रहता है कि, हमारे श्रद्धेय के शुभ-कार्यों का प्रभाव अकेले हम पर नहीं बल्कि संपूर्ण समाज पर पड़ सकता है। श्रद्धा की सामाजिक विशेषता इस रूप में और स्पष्ट हो जाती है कि, जिस पर हम श्रद्धा की सामाजिक विशेषता इस रूप में और स्पष्ट हो जाती है कि, जिस पर हम श्रद्धा रखते हैं, उस पर हम चाहते हैं कि और लोग भी श्रद्धा रखे। जबकि, प्रेम में ऐसा नहीं होता। अपने प्रिय पर तो अपने लोभ के कारण एक प्रकार का अनन्य अधिकार चाहते हैं। गद्धातु अपने भाव के संसार को भी शामिल करना चाहता को स्वीकार करना। स्वार्थी और अहंकारी लोगों के मन में श्रद्धा का भाव नहीं आ सकता। क्योंकि उनका अंत:करण मलिन और संकोचित होता है। वे दूसरों के कार्यों की महत्ता को परखने में अक्षम होते हैं। मुख्य रूप से शुक्ल जी ने श्रद्धा को तीन रूपों में विभाजित किया है-

१) प्रतिभा संबंधिनी
२) शील संबंधिनी
३) साधन-संपत्ति संबंधिनी

इन तीनों में जन साधारण के लिए शील काही सबसे पहले ध्यान होना स्वाभाविक है, क्यों कि उसका संबंध मनुष्य मात्र की सामान्य स्थिति की रक्षा से है। मद्धावान द्वारा अपने श्रद्धेय को प्रसन्न करने की इच्छा व्यक्त की जा सकती है। लेकिन, उसमें स्वयं का कोई स्वार्थ नहीं होता है। समाज अपने श्रद्धातु प्रतिनिधियों को कभी-कभी सम्मानित भी करता है।

श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। जब पूज्य भाव को बढ़ाने के साथ-साथ श्रद्धावान व्यक्ति पहुँचने के विचार आये तब ह्रदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिए। जिसके प्रति हमारे मन में भक्ति उत्पन्न होती है उसका दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि से आनंद का

अनुभव होने लगता है। श्रद्धेय का उठना, चलना, फिरना, हँसना, बोलना, क्रोध करना आदि का अच्छा लगना हमारे भक्त बन जाने की पहचान है। भक्ति की अवस्था प्राप्त होने पर हम अपने जीवन क्रम पर भी अपना कुछ प्रभाव रखना चाहते हैं। वास्तव में अपनी भक्ति के माध्यम से हम अपने ईष्ट की सत्ता में विशेष सहयोग देना चाहते हैं।

श्रद्धालु जिसके प्रति श्रद्धा करता है उसके महत्त्व को स्वीकार करता है। लेकिन, भक्त महत्त्व की ओर अग्रसर होता है। भक्ति के लिए अपनी दीनता अर्थात् दूसरे के महत्त्व के साथ अपने लघुत्त्व की बात भी सोचनी पड़ती है। श्रद्धा और प्रेम के सहयोग से मानव-हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव (जन्म) होता है। जिस व्यक्ति के मन में भक्ति का भाव जागृत होता है, उसके सारे जीवन में अपूर्व माधुर्य और बल का संचार होता रहता है। जैसे कि, ईश्वर के किसी रूप के प्रति भक्ति-भाव जाग्रत हो जाने पर व्यक्ति उस प्रभु के चरित्र के कभी गीत गाता है, कभी उनके बाल-लीला का चित्रण करता है और कभी प्रेम भरे शब्दों में उलाहनाभी देता है। भक्ति के लिए हृदय सबसे महत्त्वपूर्ण है। बुद्धि का इसमें कोई स्थान नहीं है।

ळोगों की मान्यता है कि, श्रद्धा और प्रेम के मिश्रभाव को ही भक्ति कहते हैं। श्रद्धा पात्र में पूज्य बुद्धि के साथ जब उसके प्रति मन में घनिष्ठता प्राप्त करने की इच्छा जागती है और अपने श्रद्धेय के समीप जाने का भाव जागता है तभी भक्ति का उदय होता है। श्रद्धा में मनुष्य अपने जीवन में कमाई हुई किसी वस्तु को देने की बात करता है। लेकिन भक्ति में वह अपने जीवन को भी समर्पित कर देता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि, शुक्ल जी ने बड़ी ही सूक्ष्मता और गंभीरता के साथ श्रद्धा, प्रेम और भक्ति की भावनाओं का विवेचन किया है। 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध में विचारात्मक, सूत्रात्मक और संश्लिष्ट शैली का प्रयोग किया गया है।

१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

श्रद्धा एक सामाजिक भाव है, इससे अपनी श्रद्धा के बदले में हम श्रद्धेय से अपने लिए कोई बात नहीं चाहते।

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण डॉ. हरिचरण शर्मा द्वारा सम्पादित 'निबंध संचयन' में संकलित आधुनिक हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित श्रद्धा-भक्ति शीर्षक निबंध से लिया गया है। इस निबंध में शुक्ल जी ने 'श्रद्धा-भक्ति' पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये है।

प्रसंग :

श्रद्धा स्वयं ऐसे कर्मों के प्रतिकार में होती है, जिसका शुभ प्रभाव अकेले हम पर नहीं, बल्कि सारे मनुष्य समाज पर पड़ सकता है। श्रद्धा अंश पर चाहे हम व्यष्टि (व्यक्ति) रूप में उसके अंतर्गत न भी हो।

व्याख्या :

इस निबंध के अंतर्गत आ. शुक्ल ने श्रद्धा, भक्ति और प्रेम का विवेचन बड़ी सूक्ष्मता से किया है कि श्रद्धा का क्षेत्र व्यापक होता है । श्रद्धा यह हर मनुष्य में होती है। श्रद्धा धारण करते हुए हम अपने को उस समाज में समझते हैं जिसके किसी अंश पर चाहे हम व्यक्ति के रूप में उसके अंतर्गत न भी हो, जान-बुझकर उसने कोई शुभ प्रभाव डाला हो। श्रद्धा स्वयं ऐसे कर्मों के प्रतिकार में होती है जिसका शुभ प्रभाव अकेले हम पर नहीं बल्कि सारे मनुष्य समान पर पड़ सकता है। श्रद्धा एक ऐसी आनंदपूर्ण कृतज्ञता है जिसे हम केवल समाज के प्रतिनिधी रूप में प्रकट करते है। सदाचार पर श्रद्धा और अत्याचार पर क्रोध या घृणा प्रकट करने के लिए समाज ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिनिधित्व प्रदान कर रखा जिस समाज में सदाचार श्रद्धा और अत्याचार पर क्रोध प्रकट करने के लिए जितने ही अधिक लोग तत्पर पाये जायेंगे, उतना ही वह समाज जाग्रत समझा जायेगा।

विशेष :

१) उपर्युक्त पंक्तियों में संस्कृतनिष्ठा शब्दावली का प्रयोग किया गया है।
२) लेखिका महादेवी वर्मा ने प्रस्तुत निबंध में सूत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।

१.४ बोध प्रश्न

१) श्रद्धा, भक्ति और प्रेम के ऊपर प्रकाश डालिये।
२) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध का निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।

१.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) श्रद्धा में कितने पक्ष होते है ?
उत्तर : श्रद्धा में कूल तीन पक्ष होते हैं।
२) श्रद्धा किसे कहते है ?
उत्तर : बच्चों में कृतज्ञता का भाव पाया जाता है, पर सदाचार के प्रति उस कृतज्ञता का नहीं जिसे हम श्रद्धा कहते हैं।
३) श्रद्धा का मूल तत्त्व क्या है ?
उत्तर : श्रद्धा का मूल तत्त्व है दूसरे का महत्त्व स्वीकृत करना।
४) धर्म की पहली सीढ़ी है।
उत्तर ; श्रद्धा धर्म की पहली सीढ़ी है।
५) मनुष्य किसी की ओर किन तीन प्रकार से प्रवृत्त होता है ?
उत्तर : मन से, वचन से और क्रम से इन तीन प्रकार से मनुष्य किसी की ओर प्रवृत्त होता है।
६) मनुष्य के विश्व-विधान में कौन-सा चेतन अंश है ?
उत्तर : मनुष्य के विश्व-विधान में एक क्षुद्र चेतन अंश है।

❖❖❖❖

२

यथार्थ और आदर्श (महादेवी वर्मा)

इकाई की रुपरेखा

२.० उद्देश्य
२.१ प्रस्तावना
२.२ निबंध का सार
२.३ संदर्भसहित स्पष्टिकरण
२.४ बोधप्रश्न
२.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

२.० उद्देश्य

इस खंड की दूसरी इकाई में हम महादेवी वर्मा द्वारा रचित निबंध 'यथार्थ और आदर्श' दे रहे हैं। इस निबंध के वाचन के साथ आप इसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या भी पढ़ेंगे तथा निबंध के विभिन्न पक्षों की जानकारी एवं विशेषताएँ भी जानेंगे । इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- निबंध में प्रयुक्त कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे;
- निबंध का सार बता सकेंगे तथा निबंध के महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे;
- निबंध में अभिव्यक्त यथार्थ और आदर्श का विश्लेषण कर सकेंगे;
- निबंध के परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- निबंध की शैली, भाषा और उद्देश्य को बता सकेंगे;
- उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से निबंध के महत्त्व को विश्लेषित कर सकेंगे।

२.१ प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी साहित्य की मीरा कही जाने वाली महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभा धनी साहित्यकार है। कविता, रेखाचित्र, संस्मरण और कहानियों के साथ-साथ महादेवी वर्मा के निबंध भी हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। महादेवी जी के व्यक्तित्व स्नेहिल एवं कारूणिक सरिता उनके निबंधों में भी दिखाई देती है। महादेवी जी के निबंधों को मुख्यत: तीन वर्गों- भावात्मक, विचारात्मक और समीक्षात्मक में विभाजित किया जा सकता है। उनके विवेचनात्मक

निबंधों में विचारों की गंभीरता, विवेचनशीलता और स्पष्ट चिंतन सर्वत्र झलकता है। उनके निबंधों में कहीं संस्कृति की चर्चा है, कहीं करूणा का संदेश है तो कहीं देश और राष्ट्रभाषा की चर्चा के साथ-साथ आदर्श और यथार्थ की चर्चा भी मिलती है।

२.२ निबंध का सार

'आदर्श और यथार्थ' महादेवी जी के श्रेष्ठ निबंधों में से एक है। आज आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व को मानव स्पष्ट नहीं कर पा रहा है। इसलिए इन दोनों के बीच वह भटकता हुआ दिखाई देता है। आदर्श और यथार्थ का यह द्वंद्व हम भारतीय लोगों सबसे अधिक दिखाई देता है। हम या तो आध्यत्मिकता को इस प्रकार अपनाये हुए हैं कि जीवन की यथार्थता को स्पर्श भी करना नहीं चाहते। इस अवस्था में हमें सभी चीजों में और कार्यों में केवल आध्यात्मिकता ही दिखाई देती है। अथवा हम इतने स्वप्नदर्शी बन गये हैं कि अपने पैर के नीचे की धरती का अनुभव भी नहीं कर पाते और यथार्थ के ऐसे समर्थक बन गए है कि सामंजस्य का आदर्श भी झूठा जान पड़ता है। या ता हम अलौकिकता के पूजारी बन गये हैं। या अपनी मिट्टी में सने रहने को ही अपना संस्कार मानते हैं। यह दोनों परिस्थितियाँ अतिवादी कही जा सकती है। महादेवी वर्मा का मानना है कि यथार्थ से परिचित होकर ही हमे अपने आदर्शों की ओर आगे बढ़ सकते हैं। वह क्षेत्र कविता का हो या जीवन का व्यावहारिक क्षेत्र इन दोनों में ही आदर्श और यथार्थ इन दोनों के समन्वय की आवश्यकता पड़ती है। इसका कारण यह है कि किसी भी युग का आदर्श और यथार्थ सभी युगों के लिए उचित नहीं लगते। कईबार दूसरी परिस्थितियों और उनके युगों के आदर्शों को अपना लेने से हमारे सामने संकट भी खड़ा हो जाता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य केवल यंत्र नहीं है कि उसे बाहरी रूप से केवल नियंत्रण में रखा जा सके। मानव के पास अंत:करण (ह्रदय) है, जहाँ उनकों प्रकार की कल्पनाएँ और उनेकों प्रकार के सपने जागते हैं। वह पूरे हो या न हो लेकिन अंत:करण में कहीं-न-कहीं बैठे अवश्य रहते हैं। सच्चाई तो वह है कि यथार्थ और आदर्श दोनों मिलकर ही हमारे जीवन को पूर्ण कर सकते हैं।

जिन युगों में हमारी यथार्थ की दृष्टि को स्वप्नों का आकार मिलता है, उन्हीं में हमारा विकास भी संभव हो सका है। विनाशकारी युगों में आधारहीन आदर्श हमारी सोच की भ्रमित करता है। विषम और खंडित यथार्थ हमेशा मानव के विकास में बाधक बनते रहे हैं। 'रामायण' और 'महाभारत' युग इन्हीं खंडित यथार्थों के उदाहरण है। आज मानव ने आदर्शों को अमूर्त (काल्पनिक) को और यथार्थ को एकांगी मान लिया है। परिणाम स्वरूप हमारे जीवन के उद्देश्य ही बदल गये हैं। हमें आदर्श को अपने जीवन में एक सच्चाई की तरह स्वीकार करना चाहिए और यथार्थता भी हमारे जीवन के साथ जुड़ी रहनी चाहिए। यथार्थ को हम जैसे-जैसे अपनाते हैं, वैसे-वैसे हमारी कल्पनाएँ उसकी कमियों को दूर करती चलती है और अंत में वह यथार्थता आदर्श के साथ सामंजस्य स्थापित कर देती है और यह देखकर हमें प्रसन्नता होती है। सामान्य रूप से लोगों कायह विचार बन गया है कि यथार्थ के चित्रों से हमें किसी चीज की आवश्यकता नहीं, लेकिन यह उचित नहीं है। दूसरी तरफ आदर्श किसी अखंड रूप में उसे व्यक्त करता है। आदर्श हमारी संकिर्ण दृष्टि को दूर कर जीवन में विविधता को अपनाने की बात करता हैं।

काव्य और कला के क्षेत्र में भी 9आदर्श और यथार्थ" महत्त्वपूर्ण स्थान रखते है। आधुनिक युग में बुद्धि का आदर्श भी वैसा ही असाधारण बन गया है। जैसा किसी समय सत्य,

त्याग, कर्तव्य आदि का था। जब हमारा आज का युग असाधारण बौद्धिक और भौतिक आदर्शों को सामंजस्य की दृष्टि से देखेगा तभी अपने अतीत वैभव समझ सकेगा। आज का कवि भी अपने युग के आदर्शों को विस्तृत अर्थ में स्वीकार कर ले तो यथार्थ से उसका अच्छा संतुलन बन सकता है। किसी भी देश, जाति अथवा समाज का मूल्यांकन तब तक नहीं किया जा सकता, जब तक उसके यथार्थ को न समझ लें। यह कार्य साहित्य और कला के क्षेत्र में ध्यान देने से शीघ्र संभव हो जाता है। इसीलिए सच्चा कलाकार व्यावसायिक कम परंतु संवेदनशील अधिक होता है। उसकी दृष्टि यथार्थ के संबंध में संकुचित और आदर्श के संबंध में व्यापक रहकर ही अपने लक्ष्य तक पहुँचती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महादेवी वर्मा ने यथार्थ और आदर्श दोनों के समन्वय पर बड़ी ही सारगर्भित टिप्पणी प्रस्तुत की है। कवि काव्यकला और चित्रकला आदि के विभिन्न उदाहरणों को स्पष्ट करते हुए लेखिका ने आदर्श और यथार्थ के सामंजस्य को स्पष्ट किया है। आदर्श और यथार्थ एक-दूसरे के पूरक रहकर ही जीवन को पूर्णता दे सकते हैं। दोनों के समन्वय से ही सृजन-कार्य संभव है। लेखिका के अनुसार कलाकार की प्रेरणा को सक्रियता प्रदान करने के लिए यथार्थ के ज्ञान के साथ-साथ आदर्श की भूमिका भी आवश्यक है। प्रस्तुत निबंध की भाषा संस्कृतनिष्ठ और इसकी शैली अलंकारयुक्त है, फिर भी सरलता और बोधगम्यता पूरे निबंध में बनी रहती है।

२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

जब हमने आदर्श को अमूर्त और यथार्थ को एकांगी कर लिया, तब एक बौद्धिक उलझनों और निर्जीव सिद्धान्तों में बिखरने लगा और दूसरा पाश्विक वृत्तियों की अस्वस्थ प्यास में सीमित होकर धिरे जल के समान दूषित हो चला।

संदर्भ :

उपर्युक्त अवतरण डॉ. हरिचरण शर्मा द्वारा संपादित 'निबंध संचयन' में संकलित महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'यथार्थ और आदर्श' निबंध से लिया गया है।

प्रसंग :

प्रस्तुत अवतरण में महादेवी वर्मा जी ने इस निबंध में संस्कृति की चर्चा की है। कहीं करूणा का संदेश है, तो कहीं देश और राष्ट्रभाषा की चर्चा के साथ-साथ आदर्श और यथार्थ की भी चर्चा मिलती है।

स्पष्टीकरण :

आधुनिक हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा को मीराँ कहते हैं। आदर्श और यथार्थ महादेवी जी के श्रेष्ठ निबंधों में से एक है। आज आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व को मानव स्पष्ट नहीं कर पा रहा है। इसलिए इन दोनों के बीच वह भटकता हुआ दिखाई देता है। आदर्श और यथार्थ का यह द्वंद्व हम भारतीय लोगों में सबसे अधिक दिखाई देता है।

आज मानव ने आदर्श को काल्पनिक और यथार्थ को एक पक्ष से मान लिया है। परिणाम स्वरूप हमारे जीवन के उद्देश्य ही बदल गये हैं। हमें आदर्श को अपने जीवन में एक सच्चाई की तरह स्वीकार करना चाहिए और यथार्थता भी हमारे जीवन के साथ जुड़ी रहनी चाहिए। यथार्थता को जैसे-जैसे हम अपनाते है, वैसे-वैसे हमारी कल्पनाओं, उसकी कमियों को दूर करती चलती है और अंत में वह यथार्थता आदर्श के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेती है। और बौद्धिक उलझनों और निर्जीव सिद्धांतों में बिखरने लगा है। इस संसार में दूसरा पाश्विक वृत्तियों की अवश्य प्यास से सीमित होकर धिरे जल के समान दूषित हो चला है।

इस प्रकार आदर्श को अमूर्त और यथार्थ को एकांगी मान लिया और कल्पना से डटकर यथार्थ में जीना चाहिए।

विशेष :

१) लेखिका ने आदर्श को अमूर्त और यथार्थ को एकांगी माना है।

२) उपर्युक्त उदाहरण में संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।

२.४ बोध प्रश्न

१) महादेवी वर्मा के अनुसार 'यथार्थ और आदर्श' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

२) 'यथार्थ और आदर्श' निबंध का निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।

२.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) साधारण रूप से गिरना, पड़ना, भटकना सभी किससे भिन्न है।

उत्तर : साधारण रूप से गिरना, पड़ना, भटकना सभी अचलता से भिन्न है।

२) कौन-सा विधान हमारे इस सूक्ष्म जीवन को बाँध नहीं पाते ?

उत्तर : राजनीति और समाज हमारे इस सूक्ष्म जीवन को बाँध नहीं पाते।

३) यथार्थ स्वयं ही जड़ की कौन-सी अभिव्यक्ति है ?

उत्तर : यथार्थ स्वयं ही जड़ की सचेतन अभिव्यक्ति है।

४) हमारे चारों ओर एक कौन-सा जगत है।

उत्तर : हमारे चारों ओर एक प्रत्यक्ष जगत् है।

❖❖❖❖

३(अ)

कुटज (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी)

इकाई -३ (अ) की रुपरेखा

३.० उद्देश्य
३.१ प्रस्तावना
३.२ निबंध का सार
३.३ संदर्भसहित स्पष्टिकरण
३.४ बोधप्रश्न
३.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

३.० उद्देश्य

इस खंड की तिसरी इकाई (अ) में हम 'कुटज' निबंध दे रहे हैं, जो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित सर्वाधित चर्चित निबंध है। इस निबंध के वाचन के साथ आप इसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या भी कर सकेंगे तथा निबंध के विभिन्न पक्षों की जानकारी एवं विशेषताएँ भी जानेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

-निबंध में प्रयुक्त कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे;
-निबंध का सार बता सकेंगे तथा निबंध के महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे;
-निबंध में प्रयुक्त कुटज से संबंधित विभिन्न अर्थों एवं उदाहरणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
-निबंध की शैली, भाषा और उद्देश्य को बता सकेंगे;
-उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से निबंध के महत्त्व को विश्लेषित कर सकेंगे।

३.१ प्रस्तावना

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के ललित निबंधकारों में आचार्य शुक्ल के बाद सबसे अधिक प्रभावी और श्रेष्ठ निबंधकार है। शुक्लोत्तर युग के मौलिक, मार्मिक और सशक्त निबंधकार एवं समीक्षक द्विवेदी जी के निबंधों में मानवतावादी दृष्टिकोण सर्वत्र झलकता है। आचार्य द्विवेदी जी निरंतर अध्ययनशील और साहित्य सर्जक बने रहे। द्विवेदी जी का सम्पूर्ण कृतित्व मानवता का पर्याय बनकर उभरता दिखाई देता है। डॉ. रामचंद्र तिवारी के अनुसार, ''पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी की भाषा शैली उनके व्यक्तित्व का प्रतीक है। उनमें संस्कृत भाषा का

पूर्ण वैभव, हिन्दी की सम्पूर्ण शक्ति और लोक जीवन की सरस व्यंजना एक साथ दिखाई देती है। इनके निबंधों में ऋतुओं, पुष्पों, पेड़ों और पर्व के पीछे हजारों वर्षों का मानव इतिहास छिपा दिखाई देता है।'' इनकी चर्चा करते हुए द्विवेदी जी कभी अविचित, कभी उदास होकर, कभी विव्हल मन से और उनका भी इतिहास के खण्डहरों में पाठकों को साथ लेकर रमने लगते हैं और पाठक उसमें अद्‌भुत आनंद का अनुभव करने लगता है। द्विवेदी के निबंध अपनी साहित्य यात्रा के पदचिन्ह है। 'अशोक के फूल', 'बसंत आ गया है', 'मेरी जन्मभूमि', 'एक कुत्ता और एक मैना', 'कुटज', 'देवदारू' आदि निबंधों में द्विवेदीजी का सहज एवं महिमामय व्यक्तित्व प्रतिष्ठित है।

३.२ निबंध का सार

आचार्य द्विवेदी जी द्वारा लिखित 'कुटज' एक प्रसिद्ध ललित निबंध है। इस निबंध में द्विवेदी जी ने समाज की जटिलतम समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'कुटज' में द्विवेदी जी ने उसकी स्थिति, परिस्थिति, उपयोगिता आदि पर बड़ी गंभीरता से विचार किया गया है। यद्यपि द्विवेदीजी 'कुटज' के संबंध में बहुत कुछ नहीं जानते। लेकिन, उसकी जिजीविषा को देखकर प्रभावित होते और लिखते हैं- मैं किसी का नाम नहीं जानता, कुल नहीं जानता, शील नहीं जानता, पर लगता है जैसे ये मुझे अनादिकाल से जानते हैं। इस ठिंगने पेड़ के पत्ते चौड़े और बड़े हैं। फूलों से लदा हुआ वह पेड़ मुस्काराता जान पड़ता है। जैसे पूछ रहा हो तुम मुझे पहचानते नहीं? यहाँ द्विवेदीजी उस पेड़ से प्रभावित होकर कहते हैं- पहचानता हूँ, उजाड़ के साथी तुम्हें अच्छी तरह पहचानता हूँ, नाम भूल रहा हूँ। यहाँ द्विवेदी के द्वारा उस पेड़ पत्थर की छाती को तोड़कर अपने जीवन के लिए रस ग्रहण करता है और तमाम इंझावातों को सहते हुए भी सर्वदा प्रसन्न बना रहता है। वह स्वयं में जीवंतता का प्रतीक है और उसकी जीवंतता ही उसका पहचान और समाज के लिए आदर्श होनी चाहिए। लेकिन, यह समाज सदैव नाम जानने के लिए उत्सुक बना रहता है।

द्विवेदी जी को अचानक उस छोटे से पेड़ का नाम याद आता है और वह है कुटज। प्रसिद्ध संस्कृत कवि कालिदास के महाग्रंथ 'मेघदूत' का नायक रामगिरि के यक्ष को इसी पेड़ के फूलों को अर्पित करता है। इसीलिए द्विवेदी जी 'कुटज'को गाढ़े का साथी मानते हैं। प्रकृति का वह भाग जहाँ मनुष्य तो दूर वनस्पतियाँ भी जल्दी नहीं उगती। ऐसे कठिन वातावरण में लहलहाते रहने वाला कुटज मानव के अपने जीवन की सम्पूर्ण कठिनाइयों को चुनौती देते हुए सदैव प्रसन्नचित बने रहने का संदेश देता है। वास्तव में यही द्विवेदी जी का वह व्यक्तित्व है, वह अदम्य साहस है, जिसके बल पर अपने जीवन की कठिनाईयों का वे सहर्ष सामना करते रहे। इस संबंध में वे लिखते हैं कि यह जो मेरे सामने कुटज का लहराता पौधा खड़ा है। वह नाम और रूप दोनों में अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा कर रहा है। संस्कृत की निरंतर स्फीयमान शब्द राशि में जमकर बैठे हुए इस कुटज की मादक शोभा पर सब कुछ न्योछावर है। पहाड़ो पर उगने वाले इस छोटे पेड़ कुटज में कठिन जीवन शक्ति है। इसकी जीवन शक्ति मानव की जीवन शक्ति को प्रेरणा देती है।

द्विवेदी जी पातालभेदी इस 'कुटज' के संदेशों को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि दुरन्त जीवन शक्ति है, कठिन उपदेश है। जीना भी एक कला है और साथ-ही-साथ एक तपस्या भी है । वैसे तो यह संपूर्ण संसार अपने स्वार्थ के लिए ही जी रहा है। इस दुनिया में कहीं त्याग नहीं है, कहीं प्रेम नहीं है और न ही कहीं परमार्थ है। चारों तरफ केवल प्रचण्ड स्वार्थ है। 'कुटज' को न तो किसी से परमार्थ की कामना है और न ही वह किसी के सहयोग का आकांक्षी है। वह न तो दूसरे के द्वार पर भीख माँगने जाता है और न ही किसी के निकट आने पर भयभीत होता है। वह न तो नीति और धर्म के उपदेश देता और न ही किसी बड़े व्यक्ति को रिश्वत देने का कार्य करता है। वह अंधविश्वासों में भी नहीं भटकता और किसीकी खुशामद भी नहीं करता। वह तो भीष्म पितामह की तरह निर्विकार भाव से कहता है कि, दु:ख – सुख, प्रिय – अप्रिय, जय-पराजय आदि इस जीवन के मार्ग पर जो ही मिल जाए उसे सहर्ष ग्रहण करो। लेकिन, जीवन में कभी हार मत मानो। दुख और सुख ता मन के विकल्प है। सुखी वह है जिसका मन अपने वश में हों, दु:खी वह होता है जिसका मन परवश में होता है। परवश होने का अर्थ है- खुशामद करना, दाँत-निपोरना और किसी की जी हुजूरी करना। जिसका मन अपने वश में नहीं है,वह दूसरों की कमियों को उजागर करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडम्बर रचता है और दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है। कुटज इन सभी मिथ्याचारों से मुक्त है। वह राजा जनक की तरह संपूर्ण भोगों को भोग कर भी उससे मुक्त है। कहने का तात्पर्य यह है कि कुटज न तो कठिनाइयों से न तो निराश होता है और न ही अनुकूलताओं पर उल्लास करता है।

इस निबंध के माध्यम से द्विवेदी जी यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि अपनी कठिनाइयों को चुनौति देने का कार्य वही कर सकता है जो अपने मन में स्वयं की शक्ति पर दृढ़ विश्वास रखता हो। जो व्यक्ति सांसारिक आडम्बरों के बीच रहकर भी उनसे दूरी बनाये रखता है वही अपने जीवन मार्ग की समस्याओं को सुलझा सकता है। ये समस्याएँ मानव जीवन की अभिन्न अंग है। ऐसा समझ कर यदि हम उन्हें स्वीकार करें तो कुटज की तरह प्रसन्न रहे सकते हैं। प्रस्तुत निबंध की भाषा अत्यंत माधुर्यपूर्ण और बोधगम्य है। द्विवेदी जी के निबंधों की संस्कृत निष्ठता, लालित्य और उनके व्यक्तित्व का अपराजेय साहस एवं उनकी प्रसन्नचित्तता इस निबंध में सर्वत्र दिखाई देती है। 'कुटज' के माध्यम से द्विवेदी जी ने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी प्रसन्नचित्त बने रहने का संदेश दिया है।

३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

मैं किसी का नाम नहीं जानता, कुल नहीं जानता, शील नहीं जानता, पर लगता है, ये जैसे मुझे अनादिकाल से जानते हैं।

संदर्भ :

उपर्युक्त अवतरण डॉ. हरिचरण शर्मा द्वारा संपादित 'निबंध संचयन' में संकलित आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'कुटज' निबंध से लिया गया है।

प्रसंग :

इस निबंध में द्विवेदी ने समाज की जटिलताओं, समस्याओं तथा परिस्थितियों के बारे में प्रस्तुत किया है।

व्याख्या :

इस निबंध में द्विवेदी जी ने समाज की जटिलतम समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'कुटज' में द्विवेदी जी ने उसकी स्थिति; परिस्थिति उपयोगिता आदि पर बड़ी गंभीरता से विचार किया है। यद्यपि कि द्विवेदी जी कुटज के संबंध में कुछ नहीं जानते। लेकिन उसकी जिजीविषा को देखकर प्रभावित होते हैं।

द्विवेदीजी कहते हैं क मैं किसी का नाम नहीं जानता, कुल नहीं जानता और शील नहीं जानता, पर लगता है, ये जैसे मुझे अनादिकाल से जानते हैं। समाज में फैले परिस्थितियों, जो मानव को भेद-भाव की भावनाा पैदा करती है।

विशेष :

१) उपर्युक्त संदर्भ में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

२) 'कुटज' के माध्यम से उसके कुल, शील सौंदर्य का वर्णन किया गया है।

३.४ बोध प्रश्न

१) 'कुटज' निबंध में अभिव्यक्त आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

२) 'कुटज' निबंध के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

३.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) संस्कृत में 'कुटहारिका' और 'कुटकारिका' को क्या कहते हैं?

उत्तर : संस्कृत में 'कुटहारिका' और 'कुटकारिका' को दासी कहते हैं।

२) 'कुट' किसे कहते हैं?

उत्तर : 'कुट' घड़े या घर को कहते हैं।

३) कौन-से ऋषि ब्रह्मवादी ऋषि थे?

उत्तर : याज्ञवल्य ऋषि बहुत बड़े ब्रह्मवादी थे ।

४) संपूर्ण हिमालय को देखकर किसी के मन में कौन-सी मूर्ति स्पष्ट हुई होगी?

उत्तर : संपूर्ण हिमालय को देखकर किसी के मन में समाधिस्थ महादेव की मूर्ति स्पष्ट हुई होगी।

❖❖❖❖

३(आ)

सभ्यता का संकट (अज्ञेय)

इकाई ३ (आ) की रुपरेखा

३.६ उद्देश्य
३.७ प्रस्तावना
३.८ निबंध का सार
३.९ संदर्भसहित स्पष्टिकरण
३.९.१ बोधप्रश्न
३.९.२ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

३.६ उद्देश्य

इस खंड की तिसरी इकाई (आ) में हम अज्ञेय द्वारा रचित 'सभ्यता का संकट' दे रहे हैं। इस निबंध के अध्ययन के साध आप इसके महत्त्वपूर्ण अंशों की संदर्भसहित स्पष्टिकरण भी कर सकेंगे तथा निबंध के विविध पक्षों की जानकारी तथा विशेषताएँ भी जान सकेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- निबंध में प्रयुक्त कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे;
- निबंध का सार बता सकेंगे तथा निबंध के महत्त्वपूर्ण अंशों की संदर्भसहित व्याख्या कर सकेंगे;
- निबंध में अभिव्यक्त 'सभ्यता का संकट' के विभिन्न अर्थों एवं उदाहरणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- निबंध से संबंधित परिवेश को बता सकेंगे;
- निबंध की शैली, भाषा और उद्देश्य को बता सकेंगे;
- उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से निबंध के महत्त्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।

३.७ प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार सच्चिदानंद हिरानंद वात्स्ययन 'अज्ञेय' के साहित्य में उनके व्यक्तित्व के तरह ही संतुलन और क्रमिक विकास पाया जाता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक क्रांतिकारी देशप्रेमी के रूप में कार्य करने वाले अज्ञेय साहित्य

के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन किये हुए हैं। निबंध, कहानी, कविता, उपन्यास, यात्रावृत्त आदि हिन्दी की लगभग सभी विधाओं को अज्ञेय जी ने अपनी लेखनी का पावन-स्पर्श प्रदान किया है। वै तो मूल रूप से हिन्दी साहित्य-संसार में अज्ञेय जी की पहचान एक कवि की तरह बनी। लेकिन, एक कवि के क्षेत्र में भी उनका विशेष योगदान रहा है। उनके निबंध इस बात की गवाही देते हैं कि, अज्ञेय जी एक कवि होने के साथ-साथ एक अच्छे निबंधकार भी थे।

३.८ निबंध का सार

'सभ्यता और संकट' शीर्षक निबंध एक विवेचनात्मक निबंध है। यहाँ लेखक द्वारा सर्वप्रथम सभ्यता को परिभाषिक करने का प्रयास किया गया है। इस कार्य के लिये लेखक का मानना है कि समाजशास्त्री, कलाकार, वैज्ञानिक, इतिहासकार और समाज के सभी बौद्धीक लोगों को एकत्र आकर विचार-विमर्श करना चाहिए। लेखक सभ्यता को परिभाषित करना आवश्यक मानते हैं। क्योंकि लोगों द्वारा सभ्यता की परिभाषा अपने-अपने ढंग से दी जाती है। उनके अनुसार 'सभ्यता' समाज में रहने का ढंग या व्यवहार जो कुछ है वही है, उससे अधिक कुछ भी नहीं...। अब सभ्यता मुख्य रूप से दूसरों के बीच रहने की विद्या या कौशल या हुनर या कला है। ''लोगों के व्यवहार और रहन-सहन आदि को देखकर एक ही सभ्यता को हम विभिन्न नाम दे सकते हैं। यदि भारतीय सहन-सहन पर नजर डाले तो इसे भारतीय सभ्यता, हिन्दू सभ्यता, मारवाडी सभ्यता माना जा सकता है।'' सभ्यता के इस प्रकार के विचार-विमर्श के लिए लेखक के अनुसार साहित्यकार की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

यहाँ अज्ञेय जी 'सभ्यता' के साथ 'संकट' शब्द का भी विवेचन करते हैं। उनका मानना है कि आज सभ्यता पर संकट इसलिए है कि, दुनिया में इतनी शुद्ध जानकारी और तथ्य का अंबार लग गया है कि सामान्य आदमी उसके नीचे दब गया है। 'सभ्यता' को समझने के लिये जानकारियों के सागर में जब हम किसी एक निश्चित दिशा की तलाश करेंगे तभी हम सभ्यता को समझ सकते हैं। यहाँ लेखक द्वारा 'सभ्यता और संस्कृति' के बीच चलने वाले विवादों परभी चर्चा की गई है। यहाँ सभ्यता के संकट को लेखक द्वारा संस्कृति का संकट कहा गया है। हमारे देश में तो बिल्कुल ही नहीं। क्योंकि पहले इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता था। अब ज्यादा तर सभ्यता की चर्चा करते हुए हम बाह्य उपकरणों की बात करते हैं और संस्कृति की चर्चा करते हुए हम बाह्य उपकरणों की बात करते है और संस्कृति की चर्चा करते हुए हम बाह्य उपकरणों की बात करते हैं और संस्कृति की चर्चा करते समय आभ्यंतर (आंतरिक) जीवन की । अज्ञेय जी यह मानकर चलते है कि, सभ्यता अथवा संस्कृति का संकट दोनों में कोई अंतर नहीं है। मानव एक श्रेष्ठ प्राणी है। इसलिए उससे सभ्यता की आकांक्षा करना अनिवार्य हो जाता है। मनुष्य को इसलिए उससे सभ्यता की आकांक्षा करना अनिवार्य हो जाता है। मनुष्य को इसलिए भी श्रेष्ठ माना गया है कि, उसके पास भाषा है, जो किसी भी अन्य प्राणी के पास नहीं है। लेखक यहाँ संस्कृति का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मूल्य स्वाधीनता को मानते हैं, क्योंकि स्वाधीनता से ही मूल्यों का निर्माण होता है।

संस्कृति के संकट की चर्चा करते हुए लेखक ने आस्था के संकट को एक महत्त्वपूर्ण पक्ष माना है। यहाँ लेखक मानवता के निरंतर ऱ्हास होने की बात नहीं मानता, क्यों कि मनुष्य पहले से ही सभी कार्यों की परिकल्पना करके चलता है। यहाँ तक कि वह अपनी मृत्यु की भी

परिकल्पना कर सकता है। मानव ही एक मात्र ऐसा प्राणी है, जो इतिहासजीवी होता है। पायी जाती है। वह स्वाधीन (स्वतंत्र) है। उसके पास भाषा है और इन्हीं सब चीजों ने उसे सभ्य भी बनाया है। मानव अपनी स्वतंत्रता को सदैव बचाना चाहता है और अपने मूल्यों के लिए प्राण भी देने के लिए तैयार हो जाता है। लेखक के अनुसार यही से संस्कृति का आरंभ होता है। जब अगर अपनी संस्कृति को निभाने में कोई परेशानी आने लगी है तो हम कह सकते है कि यह संस्कृति का सबसे बड़ा संकट है, क्योंकि लाखों वर्षों के सांस्कृतिक विकास के अंत में एक दीवार आ गई है और वहाँ से मनुष्य पीछे हट रहा है। फिर भी ऐसा है कि, हम गये मूल्यों की स्थापना कर सकते हैं। अब हम अपने मूल्यों की तुलना पश्चिम के मूल्यों से करने लगे है। और यह देखने लगे है कि हमारे मूल्यों में कुछ यथार्थता है कि नहीं, यही हमारे लिए सबसे बड़ा संकट है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि, हम ऐसे समाज में जी रहे हैं, जहाँ सबकुछ संदेह के घेरे में है। धीरे-धीरे अपनी संस्कृति के प्रति हमारी श्रद्धा में कमी होती दिखाई दे रही है। क्योंकि हम ये मानने लगे है कि आधुनिक होने का एक लक्षण है अपने सभ्यता और संस्कृति में विश्वास न करना। ऐसे समय में साहित्यकार और कलाकार भी जब अपने सभ्यता और संस्कृति को अनदेखा कर देता है, तो ये संकट और गहरा हो जाता है। लेखकों को और कलाकारों को अपने साहित्य एवं कला के माध्यम से समय के सत्त्वाइयों को प्रकट करना चाहिए। आज हमारी स्थिति यही बनती जा रही है कि, जिसके पास आर्थिक सम्पन्नता है, पूँजी है और सुख के अधिक यंत्र, उसे ही सभ्य माना जाने लगा है। एक समय हमारे भारत में ऐसा था आर्थिक सफलता को सुसंस्कृत होने का अथवा सभ्य होने का आधार नहीं माना जाता था। आज तो सभी लोगों को सभ्य होने की शीघ्रता है और सभ्यता का मानक है- आर्थिक सम्पन्नता।

इस प्रकार संपूर्ण निबंध में लेखक ने सभ्यता और उसके सामने आये संकट के रूपों का विवेचन करते हुए ये निष्कर्ष दिया है कि, संस्कृति का प्रारंभ स्वतंत्रता की परिकल्पना से और अपने जीवन से बड़ी किसी चीज की संभावना स्वीकार करना होता है। मनुष्य का विकास उसकी सभ्यता और संस्कृति का विकास है। इसके लिए आस्था की आवश्यकता होती है। यहाँ पर तो संकट आस्था पर ही आ गया है। जिसे प्रकट करते हुए अज्ञेय जी लिखते है कि, ''हमारे साहित्य में न तो हमे अपनी आस्था है और न ही अपनी चिंता दिखती है। उनकी चिंता, उनकी अनास्था, उनका त्रास हमको दिखता है और उसी आधार पर हम अपने को आधुनिक मानते हैं। हम व्यक्ति पश्चिम का मुहावरा बोलने के लिए चिंतित है। हमारी क्या चिंता होनी चाहिए, इसकी चिंता हमको नहीं है।''

निबंध के अंत में अज्ञेय जी इस बातों को स्पष्ट करते है कि, संकट का जो वास्तविक रूप हमारे सामने है, उसके निराकरण के लिए सबसे आवश्यक है उस संकट को पहचानना। इसलिए सभ्यता के सामने उत्पन्न संकट को पहचानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। हमारे अंदर यह विश्यास होना चाहिए कि, हम मनुष्य है, नये मूल्यों का निर्माण कर सकते हैं। अपनी आस्था को मजबूत बना सकते हैं और अपनी संस्कृति या सभ्यता के प्रति अपनी आस्था को दृढ़ करके इस संकट को मिटा सकते हैं। यदि पश्चिम की नकल करते हुए हमारे सामने कोई संकट उत्पन्न हुआ है, तो उससे उभरने की संभावना भी है। हमारी आस्था हमें सभ्यता और संस्कृति से जोड़े रहती है और रचनाशीलताके नये-नये अवसर प्रदान करती है। इसीलिए ''मैं समझता हूँ कि वह आस्था का बहुत बड़ा आधार हमारे पास है और हमारे पास अनेकों संभावनाएँ है।''

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'सभ्यता का संकट' शीर्षक निबंध में अज्ञेय जी ने सभ्यता, संस्कृति और आस्था इन तीनों का विवेचन करते हुए वह स्पष्ट किया है कि, सभ्यता और संस्कृति के संकट को दृढ़ आस्था के बल पर ही दूर किया जा सकता है।

३.९ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

वास्तव में हमारे 'संकट' का एक रूप यह भी है कि दुनिया में शुद्ध जानकारी का निरे तथ्यों का इतना अंबार लग गया है। कभी-कभी ऐसा जान पड़ता है कि इनसान उसके नीचे दब जाएगा।

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतर डॉ. हरिचरण शर्मा द्वारा संपादित 'निबंध संचयन' में संकलित, आधनिक हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'सभ्यता का संकट' निबंध से लिया गया है।

प्रसंग :

लेखक अज्ञेय जी ने आधुनिक मनुष्य की पीड़ा से अवगत कराया है।

स्पष्टीकरण :

प्रस्तुत निबंध 'सभ्यता का संकट' एक विवेचनात्मक निबंध है। यहाँ लेखक द्वारा सर्व प्रथम सभ्यता को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। सभ्यता को हम विभिन्न नाम दे सकते हैं। यदि भारतीय रहन-सहन पर नजर डाले तो इसे भारतीय सभ्यता, हिन्दू-सभ्यता, मानव-सभ्यता अथवा विश्व सभ्यता भी कह सकते हैं। इस निबंध में अज्ञेय जी ने सभ्यता के साथ-साथ शब्द का भी विवेचन किया है। उनका मानना है कि दुनिया में इतनी शुद्ध जानकारी और तथ्यों का अंबार लग गया है कि सामान्य आदमी उसके नीचे दब गया है। सभ्यता को समझने के लिए जानकारियों के इस सागर में जब हम किसी एक निश्चित दिशा की तलाश करेंगे तभी हम सभ्यता को समझ सकते हैं।

इस प्रकार सभ्यता पर संकट पड़ते जा रहे हैं और हमें इस संकट को बचाना चाहिए। सभ्यता पर संकट विश्वभर में पड़ रहा है, इसीलिए हमें अपनी संस्कृति को बचाना चाहिए।

विशेष :

१) उपर्युक्त उदाहरण में लेखक ने सभ्यता के संकट को परिभाषित किया है।
२) इस आधुनिक सभ्यता से इन्सान दब रहा है, इससे दुनिया में सभ्यता का संकट दिखाई देने लगा है।

३.९.१ बोध प्रश्न

१) 'सभ्यता का संकट' निबंध का उद्देश्य समझाइये।

२) 'सभ्यता का संकट' निबंध में अभिव्यक्त अज्ञेय के विचारों को समझाइये।

३) 'सभ्यता का संकट' निबंध का भावपक्ष स्पष्ट कीजिये।

३.९.२ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) मानव कैसा प्राणी है ?

उत्तर : मानव पहला इतिहासजीवी प्राणी है।

२) सभ्यता का संकट का दूसरा नाम लेखक ने क्या बताया है ?

उत्तर : सभ्यता का संकट का दूसरा नाम लेखक ने संस्कृति का संकट बताया है

३) लेखक के अनुसार सभ्यता में कौन-सी कलाएँ हैं।

उत्तर : लेखक के अनुसार सभ्यता में- दूसरों के बीच रहने की विद्या या कौशल या हुनर या कला है।

४) संस्कृति का सबसे पहला मूल्य क्या है ?

उत्तर : संस्कृति का सबसे पहला मूल्य स्वाधीनता है ।

५) मानव के उन्नत होने का लक्षण बताइये।

उत्तर : मानव के उन्नत होने का लक्षण यह है कि अपनी मृत्यु की परिकल्पना भी कर सकता है।

❖❖❖❖

४(अ)

मेरा राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र)

इकाई ४ (अ) की रुपरेखा

४.० उद्देश्य
४.१ प्रस्तावना
४.२ निबंध का सार
४.३ संदर्भसहित स्पष्टिकरण
४.४ बोधप्रश्न
४.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

४.० उद्देश्य

इस खंड की चौथी इकाई (अ) में हम हम पं. विद्यानिवास मिश्र द्वारा रचित 'मेरा राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध दे रहे हैं। इस निबंध के वाचन के साथ आप इसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे तथा निबंध के विभिन्न पक्षों की जानकारी एवं विशेषताओं से भी परिचित होंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

-निबंध में प्रयुक्त कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे;
-निबंध का सार बता सकेंगे तथा उसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे;
-निबंध में अभिव्यक्त विभिन्न अर्थों एवं उदाहरणों का विश्लेषित कर सकेंगे;
-निबंध से संबंधित परिवेश को बता सकेंगे;
-निबंध की शैली, भाषा और उद्देश्य को बता सकेंगे;
-उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से निबंध के महत्त्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।

४.१ प्रस्तावना

ललित निबंध परंपरा में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाद की पीढ़ी के सर्वाधिक सशक्त निबंधकार पंडित विद्यानिवास मिश्र जी है। उनके निबंधों में एक तरफ आचार्य द्विवेदी जी की सामंजस्यमूलक प्रवृति मिलती है तो दूसरी तरफ वर्तमान की परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण भी मिलता है। मिश्र जी मूलत: संस्कृत के विद्यार्थी रहे है। इसलिए उनके शब्दों पर भी संस्कृतनिष्ठता का प्रभाव दिखाई देता है। उनके विश्व-दृष्टि ने अंग्रेजी साहित्य को भी नकारा

नहीं है। यही कारण है कि, उनके निबंधों में संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी का साहित्य का एक अनूठा संगम दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति और लोकतत्व मिश्रजी के निबंधों की पहचान है। उनके निबंधों में प्राकृतिक संवेदना और समाजिक परिवेश की सत्त्वाई बड़ी ही जीवंतता के साथ अभिव्यक्त हुई है।

४.२ निबंध का सार

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' मिश्र जी का एक श्रेष्ठ ललित निबंध है। यहाँ लेखक एक ऐसे अभिभावक के रूप में दिखाई देता है जो आधुनिकता और परंपरा की क्रोड़ (गोद) में पैठा हुआ है। वर्तमान का हर अभिभावक शायद इसी असमंजस्य में पड़ा हुआ है कि, अपनी अगली पीढ़ी को वह किस हद तक छूद प्रदान करें। एक तरफ वह आधुनिक वातावरण में अपने बच्चों को स्वच्छंद आकाश में विचरण करने देना चाहता है। वह चाहता है कि उसके बच्चे संसार के सित-आसित (भले-बुरे) सभी पक्षों से परिचित हो सके और दुनिया के साथ दौड़ सके। दूसरी तरफ वह उस भारतीय वातावरण में जी रहा है। जहाँ माता-पिता अपने बच्चों को सदा अपनी आँखों के सामने देखना चाहते हैं। जीवन का लंबा समय व्यतीत कर देने और ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद भी हमारे माता-पिता हमें नादान और अनुभवहीन समझकर ही सदैव हमारे लिए चिंतित बने रहते हैं। कदम-कदम पर वे हमें निर्देश देते रहते हैं और हमारे संरक्षण की कामना करते रहते हैं।

निबंध के प्रारंभ में ही लेखक का मन उदास दिखाई देता है। उदासी का कारण मात्र यह है कि, दिल्ली से आई हुई एक युवती और एक युवक लेखक की अनुमति लेकर शहर में आयोजित संगीत का कार्यक्रम देखने के लिए चले जाते हैं। चूँकि वे दोनों लेखक के घर आये हुए है। इसलिए वही उनके अभिभावक की भूमिका में है। उन दोनों का आग्रह मानकर लेखक संगीत का कार्यक्रम देखने की अनुमति प्रदान कर देता है। क्योंकि वह व्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थक है। लेकिन, संगीत कार्यक्रम में उनके चले जाने के बाद लेखक के अंदर बैठा हुआ वह मन जागता है जो अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए भयभीत रहता है। लेखक का यह मन उस भारतीय माता-पिता का मन है, जो अपने बड़े बच्चों को भी अपनी गोद में खेलता हुआ अबोध बालक के रूप में ही देखता है। लेखक की पत्नी को चिंता होती है। लेखक के द्वारा समझाने पर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बात करने पर वह शांत हो जाती है। फिर भी लेखक का अंत:करण अत्यंत व्याकुल हो जाता है। उसकी नजरें उस सड़क पर लगी हुई है जिधर से वे दोनों लौटने वाले हैं।

ऐसे में मिश्र जी को एक लोकगीत का स्मरण होता है, जिसमें राम के वन चले जाने के बाद कौशल्या की व्याकुलता बढ़ जाती है-

मोरे राम के भीजै मुकुटवा,
लछिमन के पटुकवा
मोरी सीता के भीजे सेनुरवा
त राम घर लौटहिं।

(मेरे राम का मुकुट भीग रहा होगा, मेरे लखन का पटुका (दुपट्टा) भीग रहा होगा, मेरी सीता की माँग का सिन्दूर भीग रहा होगा, मेरे राम घर लौट आते) कौशल्या की यह व्याकुलता भारत के उस हर माता-पिता की व्याकुलता है जिसके बच्चे घर से बाहर गये हुए है। इसलिए लेखक को इस लोकगीत की कौशल्या पूरे विश्व की कौशल्या लगती है। इसके पाश्चात्य मन में राम के अभिषेक की बात उठती है। अभिषेक की बात उठते ही लेखक के मन में राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो जाता है, वह सोचता है- राम सब कुछ त्याग देते हैं किंतु, मुकुट को कैसे त्याग सकेंगे, वह तो लोगों के मन में था, कौशल्या के मान-स्नेह में था, उसे उतारा ही नहीं जा सकता। इसलिए वह मस्तक पर सदा विराजमान रहा और राम भीग तो भीगे, मुकुट न भीगने पाये। इस बात की चिंता बनी रही। वहाँ लोक मानस में विद्यमान विचारों को आगे बढ़ाते हुए मिश्र जी कहते हैं कि राम के मुकुट के न भीगने की कल्पना प्रारंभ से ही की जाती रही है। नर के रूप में लीला करनेवाले नारायण वनवास की व्यवस्था झेल सकते हैं। लेकिन, उनकी ईश्वरता की बोध और उसके मान सम्मान में कोई कमी नहीं आना चाहिए। लक्ष्मण का दुपट्टा भी न भीगने पाये। इन दोनों के गौरव की रक्षा करने वाला सीता का सिंदूर भी न भीगने पाये। राम और लक्ष्मण की सकुशलता में ही सीता का अखण्ड सौभाग्य छिपा हुआ है।

इसी चिंता में डूबे भोर के चार बज जाते हैं। दरवाजे पर दस्तक होती है। संगीत सुनकर वे दोनों व्यक्ति आ चुके हैं और लेखक के मन में पुनः द्वन्द्व प्रारंभ होता है। वे सोचते हैं कि मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, यह भीतर से कहाँ पाऊ ? मैं शब्दों के घने जंगल में हिरा गया हूँ। यहाँ लेखक को एक बार पुनः उस जॅतसर (चक्की) गीत की याद आती है जिसमें राम के मुकुट भीगने की कल्पना और उसके प्रति दुःख व्यक्त किया गया है। मिश्र जी के इस निबंध में भूत, भविष्य, वर्तमान अथक प्राचीनता और नवीनता में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया है। जैसा कि-मिश्र जी लिखते हैं ''पर इस प्रतिक्षा में एकाएक उसका दर्द ढ़लती रात में उभर आया और सोचने लगा, आनेवाली पीढ़ी पिछली पीढ़ी की ममता की पीड़ा नहीं समझ पाती और पिछली पीढ़ी अपनी संतान की संभावित कल्पना मात्र से उद्विग्न हो जाती है।''

मिश्र जी संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित है। साथ ही साथ भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन से भी जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि, लोक प्रचलित मुहावरे और संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग भी इस निबंध में मिलते हैं। चिरई का पूत, जॅतसर, बिसरना आदि शब्द लोकजीवन के ही शब्द है । व्यवंग्यात्मक शैली, भावात्मक शैली, आत्मपरक शैली तथा प्रश्नात्मक शैली भी इस निबंध में दिखाई देती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' शीर्षक निबंध मिश्र जी का एक आत्मव्यंजक निबंध है। इस निबंध में सर्वत्र लेखक की तीक्ष्ण बुद्धि तथा उदार, विशाल एवं भावुक ह्रदय देखा जा सकता है।

४.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

कोई गीत नहीं गाता। सीता जंगल की सूखी लकड़ी बीनती हैं, जलाकर अंजोर करती हैं और जुड़वाँ बच्चों का मुँह निहारती है।

संदर्भ :

उपर्युक्त अवतरण डॉ. हरिचरण शर्मा द्वारा संपादित 'निबंध संचयन' में संकलित आधुनिक हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार विद्यानिवास मिश्रद्वारा लिखित 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' शीर्षक निबंध से अवतरित है। इस निबंध में मिश्र जी ने 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में सीता की पीड़ा अभिव्यक्त की है।

प्रसंग :

प्रस्तुत अवतरण में मिश्र जी कहते है कि जब राम के द्वारा अयोध्या से निकाले जाने पर जब जंगल में प्रसव अवस्था में सूखी लकड़ी बीनती है और जब जुड़वाँ बच्चे पैदा होते है, तब उजाला कर उनका मुँ निहारती है।

व्याख्या :

प्रस्तुत अवतरण में विद्या निवास मिश्र ने समान में फैले नारी पर अत्याचार तथा उसे अग्नि-परीक्षा देना पड़ता है। इस निबंध 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में निबंधकार बताना चाहते हैं कि आज समाज कितनी भी ऊँचाई तक पहुँच जाये। लेकिन, वह अपने संस्कार नहीं भूलता । आज भी माता-पिता को अपनी बेटी की चिन्ता लगी रहती है।

इस निबंध के माध्यम से लेखक यह बताना चाहते हैं कि जब राम ने सीता माता को प्रसव अवस्था में जंगल में भेज दिया था। जब न कोई गीत गाता है। सीता प्रसव के दिन जंगल में जाकर लकड़ी बीनती है और जब उनके जुडवाँ बच्चे पैदा होते हैं, तब वह आग जलाकर उजाला करके उनका मुँह निहारती है और अपने बच्चों को प्यार करती है।

इस प्रकार लेखक हमें यह बताना चाहते हैं कि आज समाज कितना भी क्यों न बदल जाये, लेकिन आज भी माता-पिता को अपने बच्चों की चिंता लगी रहती है।

विशेष :

प्रस्तुत पंक्तियों में सीता के माध्यम से नारी की पीड़ा अभिव्यक्त हुई है।

४.४ बोध प्रश्न

१) 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का निहितार्थ समझाइये।

२) 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का भाव-पक्ष स्पष्ट कीजिए।

४.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) लेखक अपनी बचपन की बातों को याद करके कौन-सा गीत गाते हैं ?

उत्तर : लेखक अपनी बचपन की बातों को याद करते 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' नामक गीत गाता है।

२) राम के कौनसी कल्पना भीगना नहीं चाहिए ?

उत्तर : राम के उत्कर्ष की कल्पना भीगना नहीं चाहिए ?

३) सीता जंगल में क्या बीनती है ?

उत्तर : सीता जंगल में सूखी लकड़ी बीनती है।

❖❖❖❖

४(आ)

संवाद की मर्यादाएँ (निर्मल वर्मा)

इकाई ४ (आ) की रुपरेखा

४.६ उद्देश्य
४.७ प्रस्तावना
४.८ निबंध का सार
४.९ संदर्भसहित स्पष्टिकरण
४.९.१ बोधप्रश्न
४.९.२ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

४.६ उद्देश्य

इस खंड की चौथी इकाई (आ) में हम हम निर्मल वर्मा द्वारा रचित निबंध 'संवाद की मर्यादा' दे रहे हैं। इस निबंध के वाचन के साथ आप इसके विभिन्न पहलुओं की व्याख्या भी पढ़ेगे तथा निबंध में अभिव्यक्त इसके विविध पक्षों की विशेषताओं से अवगत होंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

-निबंध में प्रयुक्त कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे;
-निबंध का सार बता सकेंगे तथा निबंध के महत्त्वपूर्ण संदर्भों की व्याख्या कर सकेंगे;
-निबंध में निहित संवाद की मर्यादाओं से परिचित होंगे;
-निबंध के परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे;
-निबंध की शैली, भाषा और उद्देश्य को बता सकेंगे; और
-उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से निबंध के महत्त्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।

४.७ प्रस्तावना

निर्मल वर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक ऐसे लेखक है, जिन्होंने अपने सम-सामायिक समस्याओं पर सदैव लेखनी चलाने का कार्य किया है। समाज की समस्या से संघर्ष करते हुए निर्मल वर्मा के विचार निरंतर प्रौढ़ता प्राप्त करते हैं। जैसा कि उनके संबंध में टिप्पणी करते हुए एक विद्वान ने लिखा है कि, ''निर्मल वर्मा हिन्दी साहित्य के विविध विधाओं में समाज की लगभग सभी समस्याओं की चर्चा करते हुए दिखाई देते हैं। जूझारू व्यक्ति वाले वर्माजी

सक्ती से केवल भीड़ते ही नहीं बल्कि उन्हें पराजित करते हैं। एक सुंदर समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि लगभग सभी विधाओं पर लेखनी चलाने का श्रेष्ठ कार्य-निर्मल वर्मा ने किया है। निबंधों के क्षेत्रों में साहित्यिक, समीक्षात्मक, विचारात्मक निबंध इनके द्वारा अधिक लिखे गये हैं। वैसे तो इनका दृष्टिकोण अधिकतर तेज रहा है। लेकिन उदासी भी उसके साथ-साथ जुड़ी रहती है। उनके निबंध पूर्णत: मौलिक और नवीनता से पूर्ण होते हैं। 'संवाद की मर्यादा' शीर्षक निबंध इसी प्रकार का एक प्रसिद्ध निबंध है जिसमें निर्मल वर्मा ने संवाद को आत्मा की आवश्यकता बताते हुए, उसे एक प्रकार की भूख बताया है।''

४.८ निबंध का सार

निर्मल वर्मा जी ने इस निबंध में यह मानते हैं कि, मनुष्य अकेला है किंतु दूसरों के साथ रहता है। इसलिए उसे संवाद की आवश्यकता पड़ती है। एक-दूसरों को पहचानने का कार्य प्राचीन काल से ही चल रहा है और आज भी जारी है, शायद आगे भी जारी रहेगा। आज़ादी के बाद हम मुख्य रूप से तीन चीजों को अपना लिये पहला-प्रगति, दूसरा विज्ञान और तिसरा आधुनिकता। इन तीनों को प्राप्त करने के लिए हमने आँखें बंद करके इस प्रकार दौड़ना प्रारंभ किया कि अपने रास्ते को भी नहीं समझ सके। केवल आगे बढ़ने की हमारी उत्सुकता अब जीवन की भाग दौड़ हमें उद्देश्यही बना दिया है। अपने उद्देश्य से जुड़े रहने के लिए हमें पूर्ण जीवन की आवश्यकता होगी औरयह पूर्ण जीवन हमें तभी मिलेगा जब हमारे बिच सार्थक संवाद होता रहेगा। यह संवाद ही मानव-मानव को जोड़कर रख सकता है और प्रगति के उचित मार्ग पर ले जा सकता है।

यहाँ निर्मल जी का कहना है कि, सार्थक संवाद के लिए हमें तीन पीढ़ियाँ पार करनी पड़ती है- दुनिया को पहचानना, उस पहचान से अपने को जानना और उस जानने को दूसरों में परखना कला है। इसलिए संवाद का सर्वाधिक समर्थ और सार्थक माध्यम बनती है, क्योंकि उसमें उपर्युक्त तीनों पीढ़ियाँ मौजूद रहती है। यहाँ लेखक संवाद की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए लिखताहै कि, 'संवाद आत्मा की जरूरत है। हम अपनी आँखोंसे अपने को नहीं देख सकते। लेकिन, दूसरों को देख सकते हैं। और हमें यह आशा बधती है कि, हम भी उन्हीं तरह होंगे। वे दूसरे हमारी देह और आत्मा का आईना-सा बन जाते हैं। एक दूसरों को देखने की प्रक्रिया में शब्द का जन्म हुआ होगा। इस प्रकार शब्द संवाद का माध्यम ही नहीं होने का साक्षी भी है।'' यहाँ वर्मा जी की बातों पर बाइबिल का प्रभाव ध्वनित होता है। यहाँ लेखक स्पष्ट करना चाहते हैं कि, संवाद तो हम दूसरों से करते हैं, दूसरों के लिए नहीं स्वयं अपने को पहचानने के लिए करते हैं। यही कारण है कि संवाद की आवश्यकता बढ़ जाती है और संवाद स्वार्थ एवं परमार्थ से ऊपर उठकर जीने की अनिवार्य शर्त तथा मर्यादा बन जाता है। इन बातों से यह स्पष्ट होता है कि आत्मा की प्राप्ति या सत्य को प्राप्त करने के बाद ही संवाद की प्रक्रिया शुरू होती है।'' मूल्य नहीं संवाद की अनिवार्य शर्त। वर्मा जी के लिए यह है कि, मनुष्य अपने निजी परिवेश में सुरक्षित रह सके, तभी वह संपूर्ण मनुष्य की सीयत से अपने को संपूर्ण सृष्टि के संदर्भ में समझ सकेगा। लेकिन यह तभी संभव हो पायेगा, जब हम आधुनिकता और विकास के अभाव को छोड़कर छोटी-सी छोटी जाति, समाज, कबीले और धार्मिक संप्रदायों की महत्ता को समझेगे। हमें उन्हें जीने का अवसर प्रदान करना होगा। क्योंकि वही हमारा अतीत है। यहाँ पर निर्मल वर्मा ऐतिहासिक 'ईविल' को भी इसके सही नाम से पुकारते हैं और हमें सावधान भी

करते हैं कि, विकास की इस आँधी में भी हमें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अतीत को वर्तमान से जोड़ने वाली सबसे सशक्त और जीवंत कड़ी हमारी भाषा है। दूसरी तरफ संवाद का माध्यम भी हमारी भाषा ही है। इस रूप में यह भाषा संवाद बने रहने पर अतीत और वर्तमान को जोड़ती रहेगी।

लेखक के अनुसार आत्म-उन्मूलन आज संवाद के बारे में सबसे बड़ी बाधा है। इसे केवल आर्थिक से सम्पन्नता समाप्त नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए रूस अथवा अमेरिका का मजदूर भारत के मजदूर से अधिक सम्पन्न है। लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं कि वहाँ का मजदूर भारतीय मजदूर से अधिक विवेकशील और संवेदनशील मनुष्य बन गया हो। संवाद के लिए स्वतंत्रता भी आवश्यक है और वही स्वतंत्रता सार्थक मानी जाती है। जो प्रेम, न्याय, सौंदर्य और लोकतांत्रिक भावनाओं को बढ़ावा देती है। स्वतंत्रता के नष्ट होने पर संस्कृति के अन्य मूल्य भी टूट जाते हैं। किसी भी समाज में समाज की स्थिति मनुष्य के पारस्परिक रिश्तों पर निर्भर करती है। यदि रिश्तों मे ं मधुरता रहेंगी तो संवाद भी संकिर्ण बन जाते हैं। भारत में बहुत पहले से ही रिश्तों की आधारशिला मनुष्य का धार्मिक विश्वास रहा है। यह धर्म एक तरफ अपनी जगह पहचानने में मदद करता है, तो दूसरी तरफ पहचान बढ़ाने का कार्य भी करता है। यहाँ वर्मा जी का मानना है कि, धर्म, आस्था और जिज्ञासा इन दोनों को बढ़ाने का कार्य करता है, जो संवाद के कार्य में सहयोगी बनते हैं। यहाँ लेखक द्वारा मधुर संवाद के लिए धर्म-निरपेक्षता को आवश्यक बताया गया है।

आज़ादी के बाद लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता इन तीनों को ईमानदारी से स्वीकार नहीं किया गया। इसीलिए संवाद में कभी आयी। यहाँ पर लेखक ने समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के आधार पर विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा किये जाने वाले ढ़ोंग का खुलासा भी किया है। लेखक का मानना है कि आज समाज में धार्मिक, जातिगत आदि जो विभाजन दिखाई देते हैं। वह राजनीतिक दलोंद्वारा फैलाये जाने वाले भ्रमजाल के कारण ही उत्पन्न हुए है। इसके लिए लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता का आवश्यक बताते हुए, वे लिखते है कि हम इन तीन शब्दों को उनकी पुरानी मर्यादा और महिमा से मंडित करें। यह अपने में हमारे बीच सार्थक संवाद की शुरूवात हो सकती है।'' आगे संवाद पर दु:ख व्यक्त करते हुए वर्माजी लिखते हैं कि, ''आज जिनके पास शब्द है, उनके पास सत्य नहीं और जिनके पास अपने भीषण असहनीय अनुभवों का सत्य है, शब्दों पर उनका कोई अधिकार नहीं है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत निबंध में निर्मल वर्मा के 'संवाद की मर्यादाओं का' मूल्यांकन बड़ी गंभीरता और सूक्ष्म विवेचनात्मक शैली में किया है। संवाद मानव जाति को जोड़ने के लिए अति आवश्यक है और इसकी आवश्यकता सदैव बनी रहेगी।

४.९ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

किसी सार्थक संवाद के लिए हमें अनिवार्यत: ती न सीढ़ियाँ पार करनी पड़ती है- दुनिया को पहचानना, उस पहचान से अपने को जानना, उस 'जानने' को दूसरों में परखना।

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ निबंधकार निर्मल वर्मा द्वारा लिखित 'संवाद की मर्यादाएँ' शीर्षक निबंध से अवतारित है। इस निबंध में वर्मा जी ने संवाद जो मनुष्य अकेले नहीं बल्कि दूसरों के साथ प्रकट करता है।

प्रसंग :

इस निबंध में निर्मल वर्मा जी ने संवाद, जो शब्द वह मनुष्य को तीन सीढ़िया पार करता है तथा शब्द के माध्यम से एक-दूसरे से संवाद करके वह अकेला नहीं जान पड़ता है। वह दुनिया को पहचानता है और पहचानसे मनुष्य अपने आप को जानता है।

व्याख्या :

इस निबंध के माध्यम से वर्मा जी ने बताया है कि मनुष्य अकेला है किंतु दूसरों साथ रहता है। इसलिए उसे संवाद की आवश्यकता पड़ती है। एक-दूसरों को पहचानने कार्य प्राचीनकाल से ही चल रहा है और आज भी जारी है शायद यह आगे भी चलता रहेगा।

निर्मल वर्मा जी का मानना है कि सार्थक संवाद के लिए हमें तीन सीढ़ी पार करनी पड़ती है। दुनिया को पहचानना, उस पहचान से अपने को जानना और उस 'जानने को' दूसरों में परखना-कला का इसीलिए संवाद का सर्वा धिक समर्थ और सार्थक माध्यम बनती है।

विशेष :

१) उपर्युक्त उदाहरण में संवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।
२) लेखक ने पीढ़ा–दर-पीढ़ी में सामंजस्य स्थापित करने के लिए संवाद को जरूरी माना है।

४.९.१ बोध प्रश्न

१) 'संवाद की मर्यादाएँ' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
२) लेखक निर्मल वर्मा के अनुसार संवाद की मर्यादाएँ स्पष्ट किजिए।

४.९.२. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) संवाद किसकी जरूरत है ?
उत्तर : संवाद आत्मा की जरूरत है।

२) शब्द का जन्म कैसै हुआ होगा ?
उत्तर : एक दूसरे को देखने की प्रक्रिया में शब्द का जन्म हुआ होगा।

३) हमारे होने का रहस्य किसके भीतर निहित है ?

उत्तर : हमारे होने का रहस्य शब्द के भीतर निहित है।

४) कुरूक्षेत्र किसका मैदान है ?

उत्तर : कुरूक्षेत्र राजनीति का मैदान भी है और व्यक्तिगत नैतिकता का धर्मक्षेत्र भी।

५) हमें दूसरे मनुष्य का जानने का मौका किसके द्वारा मिलता है ?

उत्तर : हमें दूसरे मनुष्य को जानने का मौका इतर शक्तियों और स्वार्थों द्वारा निमित्त एक बनी बनायी 'इमेज' के द्वारा मिलता है।

५(अ)

राघवः करूणो रसः (कुबेरनाथ राय)

इकाई ५ (अ) की रुपरेखा

५.० उद्‌देश्य

५.१ प्रस्तावना

५.२ निबंध का सार

५.३ संदर्भसहित स्पष्टिकरण

५.४ बोधप्रश्न

५.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

५.० उद्‌देश्य

इस खंड की पाँचवी इकाई (अ) में हम कुबेरनाथ राय द्वारा रचित 'राघवःकरूणो रसः' निबंध दे रहे है। इस निबंध के अध्ययन के साथ आप इसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या भी पढ़ेंगे तथा निबंध के विभिन्न पक्षों की विशेषताएँ भी जानेंगे। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- -निबंध में प्रयुक्त कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे;
- -निबंध का सार बता सकेंगे तथा निबंध के महत्त्वपूर्ण संदर्भों की व्याख्या कर सकेंगे;
- -निबंध में अभिव्यक्त करूण रस एवं निर्वासन की पीड़ा का विश्लेषण कर सकेंगे;
- -निबंध के परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- -निबंध की शैली, भाषा और उद्‌देश्य को बता सकेंगे; और
- -उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से निबंध के महत्त्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।

५.१ प्रस्तावना

कुबेरनाथ राय साठोत्तर (१९६० के बाद) वर्षों के सर्वाधित चर्चित निबंधकारों में से एक है। पं. विद्यानिवास मिश्र की तरह ही कुबेरनाथ राय ने शास्त्रीय विषयों और सामाजिक वैचारिक स्तरों पर व्यापक मात्रा में ललित निबंधों की रचना की है। इनके निबंधों में एक तरफ भावुकता है तो दूसरी तरफ यथार्थ जीवन का सुंदर चित्रण भी मिलता है। अपने युग परिवेश की समस्याओं को इतिहास, पुराण के संदर्भ में एक नूतन आयाम देने का श्रेष्ठ कार्य राय साहब ने

अपने निबंधों में किया है। भारतीय संस्कृति के उदात्त स्वरों को आधुनिक जीवन संदर्भ में व्याख्यायित करने वाले रसधर्मा ललित निबंधकार कुबेरनाथ राय के संबंध में डॉ. जयचंद्र राय ने लिखा है कि, ''सामान्य विषयों को कल्पना शक्तिद्वारा भारत की व्यापक सांस्कृतिक उपलब्धियों को संबद्ध कर लेने की कला आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से ही पाई है, इनकी पहुँच और पकड़ अपनी है। ये प्राचीन और मध्यमकालीन धर्म साधनाओं एवं संप्रदायों की सामग्री से अपनी गद्य भाषा के अप्रस्तुत पक्ष का विधान करते हैं और उनके भीतर से ही प्रमाणों का संचय करके लोक जीवन के नाना उपेक्षित प्रकरणों को नवीन अर्थ और गौरव से मंडित कर देते हैं।''

५.२ निबंध का सार

'राघव:करूणो रस:' शीर्षक निबंध कुबेरनाथ राय का एक श्रेष्ठ ललित निबंध है। इस निबंध में लेखक ने राम के वनवास (निर्वासन) की स्थिति को उद्घाटित करते हुए आज के निवार्सित मनुष्य की स्थिति से उसकी तुलना की है। लेखन का मानना है कि, साहित्य में करूण रस की नवीनतम स्थिति निर्वासन की है। नये साहित्य के लिए निर्वासन का यह भाव स्थायी बन गया है। वैसे निर्वासन की पीड़ा संसार के सभी लोग भोग रहे हैं। जिन देशों में अर्थ और काम की अधिकता है, वह देश इससे कुछ अधिक ही पीड़ित है। सब की स्थितियाँ अलग है। लेकिन, निर्वासन का दु:ख थोड़ा बहुत सबसे पास है। नई पीढ़ी का मनुष्य तो बिना किसी कारण के ही निर्वासित महसूस कर रहा है। यहाँ लेखक ने वर्तमान क मानव की भावना को स्पष्ट करने के लिए राम के निर्वासन को उदाहरण के रूप में लिया है । उनका मानना है कि, राम का पूरा जीवन ही करूण-रस प्रधान है। उन्हें वनवास बिना किसी कारण के मिलाथा था । जहाँ जाकर राम को अनेकानेक कष्ट सहने पड़े। वैसे सीताहरण, जटायू का वध और रावण से युद्ध आदि ऐसी स्थितियाँ उनके जीवन में आई, जिनसे वे बहुत दु:खी रहे। फिरभी उन्होंने अपना धैर्य नहीं छोड़ा। अपनी दैवीय शक्ति का प्रयोग उन्होंने कहीं नही किया। सभी संकटों में राम मानव के रूप में ही दिखाई दिये । इसलिए उनका निर्वासन सामान्य जनता के लिए उदाहरण स्वरूप बन गया। मनुष्य के रूप में रहकर राम निर्वासन के समय दु:खी होते हैं। वर्षा की पीड़ा समझते हैं, रास्ते के काँटों को सहते हैं, फिर भी उनका अंत:करण (मन) कहीं भी विचलित नहीं होता है। सीताहरण के बाद भी किसी लाचार प्रेमी की तरह बैठकर आँसू नहीं बहाते बल्कि- ''हे खग, मृग, हे मधुकर श्रेणी। तुम देखी सीता मृगनयनी।'' इसी प्रकार पशु-पक्षियों और कोल, भीलों तक से सहायता लेते है और लंका तक पहुँच जाते है।

यहाँ राम द्वारा रावण आदि अन्य राक्षसों का संहार केवल स्वार्थ के लिए ही नहीं किया जाता। रावण-वध में सीता का हरण तो केवल एक माध्यम बनता है। सच्चाई तो यह है कि, रावण का वध राम द्वारा लोककल्याण के लिए ही किया गया। जैसा कि, अग्नि परीक्षा के समय राम सीता से कहते हैं कि, "मैथिली यह युद्ध तुम्हारे प्रति आसक्ति या कामना से नहीं किया। ऐसा मुझे करना था, अत: मैने किया है।" यदि राम केवल अपनी पत्नी की प्राप्ति के लिए रावण का वध करते तो उसका विश्वव्यापी मूल्य नहीं रह जाता।

राम का जीवन करुण रस प्रधान रहा। इसका वर्णन तुलसीदास, वाल्मीकि जैसे महान कवियों ने अलग-अलग रुपों में किया है। आज का मनुष्य जो निर्वासन भोग रहा है उसके दु:ख में और राम के निर्वासन के दु:ख में अंतर है। एक तरफ राम का निर्वासन लोक-कल्याण का कार्य करता है, तो दूसरी तरफ आज के मनुष्य का निर्वासन पूर्णत: व्यक्तिगत और स्वार्थ पर

आधारित है। आज मनुष्य 'स्व' के कमरे में बंद हो गया है। वह देश, राष्ट्र, समाज, परिवार, मानवीय भाव आदि इन सबसे अलग होकर जीना चाहता है। उसकी मानसिकता के अनुसार संसार का सारा धन उसी के पास होना चाहिए और किसी दूसरे की दखलअंदाजी भी उसे स्वीकार नहीं, वह पूरी तरह अपने 'स्व' में ही कैद हो जान चाहता है। यहाँ कुबेरनाथ जी यह स्पष्ट करना चाहते है कि "नए मनुष्य के निर्वासन में शांत, सौंदर्य बोध और परोपकार जैसे तत्त्वों का अभाव है। ऐतिहासिक शक्तियों ने उसके ऊपर जितना निर्वासन थोपा है, उससे अधिक उसने अपना लिहा है। परिणाम यह हो गया है कि विभिन्न आधारों पर बटा हुआ आदमी सबके साथ रहकर भी सबसे कटा हुआ महसूस करता है। वह किसी-न-किसी मोह में बंध गया है। आज के मनुष्य के निर्वासन की स्थिति राम के निर्वासन से बिल्कुल भिन्न हो गई है।"

वास्तव में कुबेरनाथ जी निर्वासन या अकेलेपन को शाप की स्थिति नहीं मानते। इस संबंध में वे लिखते हैं कि, "शाप कि स्थिति तब हो जाती है, जब इसमें अजनबीपन में भी आकर जुड जाये। जब निर्वासन का अर्थ स्वनाकार का नित्य अकेलापन हो, तो यह शाप की स्थिति नहीं है, पर जब निर्वासन का अर्थ विश्व से, मनुष्य से, सौंदर्य से, अपने आपसे अजनबीपन हो तो यह अवश्य ही शाप की स्थिति है। निर्वासन भी ऐसी ही स्थिति को मैं हेय मानता हूँ।"

लेखक का मानना है कि किसी भी बड़े कार्य के लिए किसी सत्य की स्थापना के लिए अगर कोई ट्रेजडी जीवन में आती है, तो उसका सामना करना हमारा कर्तव्य है। राम के जीवन का करुणा इसी प्रकार के सत्य को स्थापित करना हमारा कर्तव्य है। राम के जीवन की करुणा इसी प्रकार के सत्य को स्थापित करने वाली करुणा है। प्रारंभ में राम को निर्वासन मिलता है, सीता का हरण होता है। लंबे संघर्ष के बाद सीता का मिलन और पुनः निर्वासन आदि में सभी घटनाएँ राम के जीवन की त्रासदि है। फिर भी राम का व्यक्तित्व इस धरती पर चमकता हुआ दिखाई देता है। उनका जीवन साक्षात् करुण रस है। फिर भी ईश्वर की तरह अनासक्त और मनुष्य की तरह धीर, वीर, गंभीर राम का चित्रण और उन्हें महामानव बना देता है।

अंत में लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि राम का निर्वासन 'स्व' में बंद ले जाने वाला निर्वासन नहीं है। उनका निर्वासन रचनात्मक है। इसलिए लोक कल्याण के कार्यक्रम है और सामान्य जनता उसे स्वीकार करती है। उपर्युक्त सभी स्थितियों को इस निबंध में अभिव्यक्त किया गया है। संपूर्ण निबंध बहुत ही प्रभावी और मौलिक किनारों से समृद्ध दिखाई देता है। आज के मनुष्य के निर्वासन में शांत-सौंदर्यबोध के अमृतस्पर्श का अभाव है। राम के निर्वासन में ऐसा नहीं है। राम मनुष्य तो है किन्तु मनुष्यता का वरण (चुनाव) उन्होंने उसी सीमा तक किया है, जहाँ तक शील और करुणा का संबंध है।

५.३ संदर्भसहित स्पष्टिकरण

राम का जीवन साक्षात् करुण रस है। वे ईश्वर की तरह अनासक्त, तटस्थ और महिमामय है, जो मनुष्य की तरह धीर, वीर, गंभीर है। स्निग्ध, श्यामल करणा है।

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण डॉ. हरिचरण शर्मा द्वारा संपादित 'निबंध संचयन' में संकलित कुबेरनाथ राय द्वारा लिखित 'राघवः करणो रसः' शीर्षक निबंध से लिया गया है।

प्रसंग : लेखक ने इस निबंध में राम के जीवन की घटनाओं से परिचित कराया है।

व्याख्या : प्रस्तुत निबंध में एक तरफ भावुकता है तो दुसरी तरफ यथार्थ जीवन का सुंदर चित्रण भी मिलता है। लेखक ने राम के वनवास की स्थिति का वर्णन कर उसे आज के निर्वासित मनुष्य की स्थिति से उसकी तुलना की के लिए निर्वासन का यह भाव स्थाई बन गया है।

लेखक का मानना है कि किसी भी बड़े कार्य के लिए किसी सत्य की स्थापना के लिए अगर कोई ट्रेजेडी जीवन में आती है, तो उसका सामना करना हमारा कर्तव्य है। राम के जीवन की करुणा इसी प्रकार की सत्य को स्थापित करने वाली करुणा है। प्रारंभ में राय को निर्वासन मिला हो, सीता-हरण होता है। लंबे संघर्ष के बाद सीता का मिलन और पुनः निर्वासन आदि सभी घटनाएँ राम के जीवन की त्रासदी है। फिर भी राम का व्यक्तित्व इस धरती पर चमकता हुआ दिखाई देता है। उनका जीवन साक्षात करुण रस है, फिर भी ईश्वर की तरह अनासक्त और मनुष्य की तरह धीर, वीर, गंभीर, राम का चरित्र उन्हें महामानव बना देता है।

विशेष :

१) लेखन ने राम के जीवन को साक्षात् करुण-रस कहा है।
२) राम को ईश्वर की तरह अनासक्त और मनुष्य की तरह धीर, वीर, गंभीर कहा गया है।
३) संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

५.४ बोध प्रश्न

१. 'राघवः करुणो रसः' निबंध का भावपक्ष स्पष्ट कीजिए।
२. 'राघवः करुणो रसः' निबंध का निहितार्थ समझाइये।
३. 'राघवः करुणो रसः' निबंध का उद्देश रेखांकित कीजिए।

५.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) नये साहित्य में करुण रस की कौन-सी स्थिति है?
उत्तर नये साहित्य में करुण रस की नवीनतम स्थिति है।
२) राम किस तरह अकारण निर्वासित हुए थे?
उत्तर लेखक के अनुसार राम उसी तरह अकारण निर्वासित हुए थे, जैसे आज का नया मनुष्य।
३) राम को अपने शत्रु रावण का अन्दाज कैसे होता है?
उत्तर राम को नूपुर और वस्त्र देखकर उन्हें अंदाज हो गया कि उनका शत्रु रावण ही है।
४) वालि का वध राम ने किसकी रक्षा के लिए किया?
उत्तर वालि का वध राम ने 'ऋत' की रक्षा के लिए किया।
५) राम का जो निर्वासन हुआ था, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर राम का जो निर्वासन हुआ, उसे वनवास कहते हैं।
६) राम अपने अन्दर के घाव किसके ह्रदय में पाते है?
उत्तर राम अपने अन्दर के घाव को विश्व प्रकृति के ह्रदय में पाते है।

५ (आ)

वैष्णव की फिसलन (हरिशंकर परसाई)

इकाई ५ (आ) की रुपरेखा

५.६ उद्देश्य
५.७ प्रस्तावना
५.८ निबंध का सार
५.९ संदर्भसहित स्पष्टिकरण
  ५.९.१ बोध प्रश्न
  ५.९.२ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

५.६ उद्देश्य

इस खंड की पाँचवी इकाई (आ) में हम हरिशंकर परसाई के प्रख्यात निबंध 'वैष्णव की फिसलन' दे रहे हैं। इस निबंध के वाचन के साथ आप इसके महत्वपूर्ण अशों की व्याख्या भी पढ़ेंगे तथा निबंध के विभिन्न पक्षों की विशेषताएँ भी जानेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- निबंध में प्रयुक्त कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे।
- निबंध का सार बता सकेंगे तथा निबंध के महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे।
- निबंध में अभिव्यक्त व्यंग्य का विश्लेषण कर सकेंगे।
- निबंध के परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे।
- उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से निबंध के महत्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।

५.७ प्रस्तावना

आधुनिक युग के व्यंग्य लेखकों में हरिशंकर परसाई का नाम अग्रणी है। परसाई जी के निबंधो में समाज की सच्चाई झलकती है। सामाजिक और राजनीतिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में फैली असंगतियाँ परसाई जी के निबंधो के वर्ण्य-विषय रहे हैं। आज के जीवन और समाज में व्याप्त अंतराल की गहराइयों में भ्रष्टाचार और ढ़ोग की कलाई खोलने और अच्छाई का मुखौटा लगाने वालों को बेनकाब करने की कला में परसाई जी सर्वोपरि है। उन्होंने देश, जाति, धर्म और स्वतंत्रता के प्रति जनता की सहज भाऊकता जगाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाले नेताओं का पर्दाफाश भी किया है। उन्होंने पश्चिम के अलगावादियों की नकल करने वाले मध्यमवर्गीय,

बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों को सचते किया है। जीवन में जहाँ कहीं विसंगति, अन्याय, मिथ्याचार, शोषण, पाखण्ड एवं दो मुहाँपन है। वहाँ परसाई जी ने तीखा प्रहार किया है। 'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक निबंध भी एक ऐसा ही निबंध है। जिसमें धर्म के नाम पर व्यापार करने वालों की बखियाँ उधेड़ी गई है।

५.८ निबंध का सार

'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य स्वनाएँ' शीर्षक व्यंग्य-संग्रह में संकलित है - 'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक निबंध परसाई जी का एक व्यंग्य बिनोदयुक्त निबंध है। इस निबंध में लेखक की व्यंग्य चेतना मुखरित हुई है। लेखक के अनुसार आज धर्म ने व्यवसाय का रुप धारण कर लिया है। धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता का शोषण किया जा रहा है। एक तरफ साधु-संत, भक्ति के नाम पर अपना व्यापार फैलाये हुए तो दूसरी तरफ व्यापारियों का भी ऐसा वर्ग है जो भगवान के नाम पर हर प्रकार के अनैतिक कार्य करता है। परसाई जी इस निबंध के माध्यम से यह संकेत करते हैं कि, धर्म के मूल जो भाव है। वह पूरी तरह बदल गया है। लोक-कल्याण की धर्म की मूल-भावना समाप्त हो गई है और उसकी जगह विज्ञापन एवं व्यावसायिक मनोवृत्ति आ गई है तथा यह स्थिति समाज के लिए तथा धर्म के लिए पूर्णतः घातक है। 'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक निबंध यह संदेश देता है कि, आज के धर्माधिकारी और अपने को धार्मिक बताने वाले लोग किस प्रकार अपने मन की भावनाओं को पर्दे में ढ़ककर धर्म के नाम पर धन कमाने की नई-नई युक्तियाँ तलाशते रहते है। इन युक्तियों की आड़ में वे अपना व्यवसाय चलाते हैं। इस निबंध में भी जिस वैष्णव की चर्चा की गई है वह करोड़पति है और भगवान विष्णु का मंदिर उसकी जायदाद है। वह लोगों को सहायता के नाम पर व्याज कमाने के लिए पैसे बाँटता है। प्रातःकाल वह भगवान विष्णु की पूजा करते हैं। राम के नाम की चादर ओढ़ता है और दिनभर लोगों से किस प्रकार अधिक से अधिक व्याज कमाने के लिए नई-नई युक्तियों में लगा रहता है, जैसा कि परसाई जी ने उसके संबंध में लिखा है - "वैष्णव के पास नंबर दो का बहुत पैसा हो गया है। कई एजेंसियाँ ले रखी है, स्टॉकिस्ट है, जब चाहे माल दबाकर ब्लैक करने लगते है। मगर दो घण्टे विष्णु – पूजा में कभी नागा नहीं करते, सब प्रभू की कृपा से हो रहा है।"

वैष्णव गलत-सही जो भी कार्य करता है, उसे वह ईश्वर की कृपा बताते हैं, यद्यापि कि अवैध कार्यों से वह धन इकट्ठा करता है, लेकिन समाज के सामने यही प्रकट करता है कि, उसके घर में आने वाला धन विष्णु की कृपा से आ रहा है। इसलिए वह लोगों की सेवा के नाम पर अनेकों को प्रकार के नये-नये व्यवसाय प्रारंभ करता है। उसके द्वारा होटल का खोलना भी लोगों की सेवा के नाम पर किया जाने वाला एक छल है। वह उस होटल का विज्ञापन सभी माध्यमों से करता है। कमरे का भाड़ा अधिक रखता है। लेकिन, जब उसे लगता है कि केवल शाकाहारी भोजन से उसे अदिक कमाई नहीं हो पा रही है तो वह मांसाहारी, भोजन की व्यवस्था भी अपने होटल में कर देता है। इस कार्य को वह विष्णु का आदेश मानता है और अपने कार्य को आत्मा की आवाज बताते हुए महात्मा गाँधी के प्रसिद्ध भजन 'वैष्णव जन तो तेने जो कहिये जे पीर पराई जानै रे।' की गलत व्याख्या करता है और सो-बता है कि, होटल में आने वाले लोगों की माँग को देखते हुए, वह उनके उचित भोजन की व्यवस्था करता है। धीरे-धीरे पैसे की लालच में वह उस होटल में शराब, कैबरा, नृत्य और अवैध कार्यों की सारी व्यवस्थाएँ करता है। शराब के लिए वह भगवान विष्णु से अनुमति माँगता है और उस वैष्णव की आत्मा से आवाज

आती है कि, "मूर्ख, तू होटल बिठाना चाहता है, देवता भी सोमरस पीते थे। वही सोमरस यह मदिरा है। इसमें ते वैष्णव धर्म कहा भंग होता है? सामवेद में ६३ श्लोक सोमरस अर्थात मदिरा की स्तुति में हैं। तुझे धर्म की समझ है या नहीं।" यहाँ परसाई जी यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि, धर्म के नाम पर ढ़गी का व्यापार चलाने वाले लोग धर्म ग्रंथो के घटनाओं की व्याख्या भी अपने लाभ के अनुसार करते हैं। जैसाकि, होटल में आये हुए एक व्यक्ति द्वारा नृत्य की माँग की गई तो, वैष्णव की आत्मा से यह आवाज आती है कि, मुर्ख कृष्ण अवतार मै मैंने गोपियों को नचाया था, चिरहरण तक किया था। तुझे क्या संकोच है। और आत्मा की आवाज सुनते ही वह व्यक्ति अपने होटल में नृत्य की व्यवस्था कर देता है। सच्चाई तो यह है कि, वर्तमान में इस प्रकार की व्यवस्था रखने वाले होटल मालिको को अधिक धन मिलता है। काली कमाई वाले लोग मनमानी खर्च करते हैं और व्यापारी वर्ग भी उनसे मनचाही किमत वसुलता है। वैष्णव इस प्रकार के सभी अवैध – कार्य करता है, लेकिन भगवान विष्णु के अनुमति का ढ़ोग भी करता रहता है।

यहाँ परसाई जी यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि, समाज में धर्म के नाम पर छल-छद्म का व्यापार जोर पर चल रहा है। धर्म इन अवैध कायों के लिए एक ऐसा ढाल बन गया है। जिसके माध्यम से सभी बुरे कार्यों को बढ़ावा मिल रहा है। वह चाहे वेश्या व्यापार हो, या मदिरा का व्यापार। ये सभी धर्म के नाम पर जोर से चल रहे हैं। सच्चाई तो यह है कि ईश्वर के नाम पर व्यापार करने वाले अमीर वर्ग को यह पता है कि सामान्य जनता अवैध कार्यों को सामाजिक मान्यता नहीं दे सकती। हमारे समाज की स्थिति भी यही है। सभी अनैतिक कार्य चारों तरफ फूल–फल रहे हैं। लेकिन, मर्यादा की चादर से उन्हें ढकने का प्रयास सदैव किया जाता है, उस चादर के रुप में अथवा देवी-देवता सबसे सरल, उचित माध्यम मिल जाता है। शोषक-वर्ग उस माध्यम का भरपूर लाभ उठाता है। प्रस्तुत निबंध में वैष्णो द्वारा किये जाने वाले सभी व्यापार शोषण की विचारधारा पर ही आधारित है। फिर भी उनके पीछे ईश्वर की मर्जी का हवाला दिया जाता है। यहाँ वैष्णव के द्वारा अपने कार्यों को चलाने के लिए साम-दाम-दंड-भेद हर प्रकार के उपाय अपनाये जाते हैं। जैसा कि, वैष्णव अपने आदमी से कहता है "चुपचाप इंतजाम कर दिया करो। जरा पुलिस से बचकर पत्वीस फीसदी भगवान की भेंट ले लिया करो।"

निबंधकार यहाँ समाज की उस समस्या पर भी प्रकाश डालना चाहता है जिसमें रिश्वत द्वारा किसी भी अवैध कार्य को करने की अनुमति दे दी जाती है। यह वैष्णव भी अपने शराब और नृत्य आदि के लिए पुलिस को रिश्वत देने को बात करता है। साथ-ही-साथ लेखक समाज के उस पक्ष पर भी व्यंग्य करता है, जिसमें अवैध कार्य करने वाले लोगों का धर्म और ईश्वर के नाम पर दान देने और समाज सेवा करने का ढ़ोग करते है। निश्चित ही इस प्रकार के कोई भी कार्य समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए अथवा सहानुभूति प्राप्त करने के लिए किये जाते हैं। प्रस्तुत निबंध में भी वैष्णव द्वारा अपने होटल में हर प्रकार के अवैध कार्यों की व्यवस्था कर देने के बाद, वह होटल बहुत अच्छा चलने लगता है। जैसाकि परसाई जी लिखते हैं - "वैष्णव धर्म बराबर निभ रहा है और वैष्णव ने धर्म को धंधे से जोड़ लिया है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक निबंध में परसाई जी ने धर्म के नाम पर चलने वाले अवैध व्यापार और दिखावे की विचारधाराओं पर लिखा प्रहार किया है। प्रस्तुत निबंध का व्यंग्य गहरा और मारक है।

५.९ संदर्भसहित स्पष्टिकरण

अब वैष्णव का होटल खूभ चलने लगा।
शराब, गोश्त, कैबरे और औरत।
वैष्णव धर्म बराबर निभ रहा है।
इधर यह भी चल रहा है।
वैष्णव ने धर्म को धंधे से खूब जोड़ा है।

संदर्भ :

प्रस्तुत निबंध डॉ. हरिचरण शर्मा द्वारा संपादित 'निबंध संचयन' में संकलित आधुनिक युग के व्यंग्य निबंधकार हरिशंकर परसाई द्वारा रचित 'वैष्णव की फिसलन' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने वैष्णव भक्त के बारे में यह बताया है कि वैष्णव ने अपने धंधे को धर्म से पूरी तरह से जोड़ लिया है। उसने अपने होटल में मांस, मुर्गा, मछली और नाचने वाले स्त्रियों के साथ-साथ मदिरा (शराब) का प्रबंध अपने 'कैबरे' में चालु कराया है। और यह सब प्रभू की इच्छा से ही हो रहा है। ऐसी उसकी मान्यता है। धर्म और धंधा (व्यवसाय) को वैष्णव ने जोडे रखा है।

स्पष्टीकरण :

हरिशंकर परसाई प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक है। उनके 'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक निबंध व्यंग्य-पूर्ण विनोद है। इस निबंध के अंतर्गत लेखक की व्यंग्य-चेतना की मीठी मार मारती हुई इस तथ्य पर बल देती है कि आज धर्म ने व्यवसाय का रुप धारण कर लिया है। धर्म के मूल में जो भाव है, वह निःशेष (रिक्त, खाली) हो गया है और धर्म के नाम पर जो विज्ञापनी और व्यावसायिक मनोवृत्ति पना रही है, वह समाज के लिए घातक है। 'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक ही यह संकेत देता है कि आज के धर्माधिकारी और अपने आपको धार्मिक बताने वाले लोग किस प्रकार अपनी मनोगत भावनाओं अर्थात व्यावसायिक मनोवृत्ति को यथावत् बनाये रखने के लिए तरह-तरह की युक्तियाँ तलाश रहे हैं। उन युक्तियों की आड़ में वे अपना धर्मानमोदित कृत्रिम व्यवसाय चलाते रहते हैं।

संपूर्ण निबंध में जिस वैष्णव भक्त की चर्चा की गयी है, वह करोड़पति है और भगवान विष्णु का मंदिर उसकी जायदाद है। वहाँ आने वाला चढ़ावा नबंर दो की धनराशी के रुप में भेट करते हैं। और उस राशी का उपयोग करने के लिए वह वैष्णव भक्त एक होटल खोलता है, जिसमें वह पहले तो वह भोजन की व्यवस्था करता है, किन्तु धीरे-धीरे लोभ के बढ़ते जाने से वह उस होटल में मांस-मदिरा, कैबेरे-नृत्य और औरतों का धन्धा (वेश्या-व्यवसाय) भी प्रारंभ कर देता है। इस पर लेखक व्यंग्य से कहते हैं कि वैष्णव धर्म बराबर निभ रहा है और वैष्णव ने धर्म को धंधे से खूब जोड़ा है।

विशेष :

१) व्यंग्यत्मक शब्दों का प्रयोग किया गया है।
२) वैष्णव के माध्यम से आज के समाज का नग्न–यथार्थ प्रस्तुत हुआ है।

५.९.१ बोधप्रश्न

१) 'वैष्णव की फिसलन' निबंध का व्यंग्य समझाइये।
२) 'वैष्णव की फिसलन' निबंध का विहितार्थ स्पष्ट कीजिये।

५.९.२ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) वैष्णव किसकी पूजा करते है ?
उत्तर वैष्णव प्रतिदिन दो घण्टे भगवान विष्णु की पूजा करते हैं।

२) वैष्णव धर्म को किससे जोड़ता है ?
उत्तर वैष्णव धर्म को धन्धे से जोड़ता है

३) वैष्णव के पास क्या इकट्ठा हो गया है ?
उत्तर वैष्णव के पास अपार नंबर दो का पैसा इकट्ठा हो गया है।

४) वैष्णव ने कमरे का किराया कितना रखा ?
उत्तर वैष्णव ने कमरे का किराया तीस रुपये रखा।

५) वैष्णव का होटल खूब क्यों चलने लगा ?
उत्तर वैष्णव ने होटल में शराब, गोश्त, कैबरे और औरतों का इंतजाम करते हैं। इसलिए वैष्णव का होटल खूब चलने लगा।

❖❖❖❖

१

नाटककार शंकर शेष और उनका नाट्य साहित्य

१.१ जीवन :

स्वातंत्र्योत्तर हिंन्दी नाटककारों में शंकर शेष का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक विसंगतियों और विद्रूपताओं का प्रभावी अंकन उनके नाट्य साहित्य का प्रमुख वैशिष्ट्य है। शंकर शेष ने जहाँ एक तरफ अपने नाटको में भारतीय इतिहास और पुराण से प्राप्त कथासूत्र के माध्यम से समकालीन युग बोध को अभिव्यक्त किया वहीं समकालीन जीवन की अनेक समस्याओं को अपनी सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि से प्रस्तुत कर अनुभव की प्रामाणिकता का परिचय दिया।

हिन्दी साहित्य की विभिन्न पुराने विधाओं को अपनी रचनात्मक प्रतिभा के समृद्ध करने वाले नाटककार शंकर शेष का जन्ममध्य प्रदेश के विलासपुर (वर्तमान छत्रीए गढ़ में स्थित जिले के एक संपन्न जमींदार परिवार में दिनांक २ अक्टूबर १९३३ को हुआ। वे महाराष्ट्र के मूल निवासी थे और उनकी मातृभाषा मराठी थी। महाराष्ट्र के भोसले ???? ने उनके पूर्वजो को बिलास पुर की जागिरदारी दी थी। अंत: शंकर शेष का परिवार कई पीढीयों से बिलारपुर में रह रहा था। प्रारंभिक शिक्षा बिलासपुर में पूरी करने के बाद शंकर शेष नागपुर आ गए जहाँ उन्होंने १९५६ मे बी.ए. ऑनर्स की परीक्षा उत्तीर्ण की। आजीविका के लिए अनेक संस्थानों में कार्य करते हुए वे १९७० में मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी में सहायक संचालक नियुक्त हुए। यहाँ लगभग चार वर्ष कार्यरत रहने के बाद शंकर शेष भारतीय स्टेट बँक के मुंबई स्थित केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा विभाग में अधिकारी के रुप में नियुक्त हुए। मुंबई में रहते हुए उनके नाट्यकार व्यक्तित्व ने नई ऊचाइयों का स्पर्श किया। हिन्दी नाट्य साहित्य के दुर्भाग्य से शंकर शेष को लघु आयु प्राप्त हुई। अडतालिस वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में उन्होंने २२ नाटकों, ७ एकांकियों, दो बाल नाटको, तीन उपन्यासों की रचना, नाटकों का अनुवाद, तीन शोध ग्रंथों प्रणयन किया।

१.२ नाट्य साहित्य :

हिन्दी नाटकों के मंच पर शंकर शेष का उदय १९५५ के लगभग हुआ जब उनका पहला नाटक 'मूर्तिकार' नागपुर में मंचित हुआ। इसकी मंचीत प्रस्तुतियों को मिली भारी सफलता से उत्साहित होकर इसे श्रीनगर की नाटक प्रतियोगिता में भेजा गया जहाँ इसे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। शंकर शेष का दूसरा नाटक 'रत्नगर्भा' है जिसमें प्रतिष्ठित होने और विदेश में बसने के मोह से सौंदर्य की मरीचिका में भटका नायक लौटता है और अपने घर एवं प्रिया में वास्तविक सुख की प्रप्ति करता है। मिधकीय पात्रों को आधार बनाकर शंकर शेष ने 'नई

सभ्यता के नये नमूने' नाटक की रचना की जिखमें उन्होंने स्वार्थ में आकंठ् डूबे, अवसरवादी सफेदपोश लोगों के वास्तविक रुप को उजागर किया है।

'बेटो वाला बाप' नाटक में युवको को अपने परिश्रम के बल पर सफलता प्राप्त करने की सीख दी गई है। 'तिल का ताड़' में किराये पर मकान न मिलने की समस्या और झूठ बोलने के परिणाम का विनोदपूर्ण अंकन है। 'बीन बाती के दीप' में पुरुष की स्वार्थपरता और स्त्री के बलिदान का भावनात्मक निरुपण हुआ है। 'बाढ़ का पानी' में जाति – पाँति के भेद की समस्या है तो बंधन अपने- अपने में व्यक्ति की दुर्बलता को कथ्य बनाया जाता है। शंकर शेष ने 'फांदी मं ईनामदारी और नैतिकता की हार एंव दया मृत्यु जैसे महत्वपूर्ण विषय को नाट्यांकन का विषय बनाया है। एक और द्रोणाचार्य तड़ी –गली, पतनशील शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार है। शंकर शेष का बहुचर्चित नाटक 'घरौंदा' है। बड़े शहरों में घर बनाने और बसाने के स्वप्न को साकार करने के लिए हर रास्ता अपनानेवाले युवक -युवती की मार्मिक कथा पर बनी फिल्म 'धरौंदा' भी काफी चर्चित हुई थी। लौंटकी पर आधारित 'अरे मायावी सरोवर' व्यंग्य प्रधान कृति है जिसमें नाटककार समाज-निर्माण में हर मानव से सहयोग की कामना व्यक्त करता है। कीर्तन शैली में रचित 'पोस्टर' में नाटककार ने दिखाया है कि किस तरह अमीर लोग मजदूरों को पैसे के बल पर भ्रष्ट करतें है उनकी मेहनत से अपनी पूँजी में वृद्धि करते हैं। 'कोमल गांधार नाटक में शंकर शेष ने गांधारी के जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर किया है। शंकर शेष का अंतिम नाटक 'आधीरात के बाद' है जिसमें चोर, चोर न होकर सफेदपोशों को बेनकाब करनेवाला मसीहा बन जाता है।

शंकर शेष ने अनेक एकांकियों की भी रचना की जो अपने विषय की नवीनता के कारण विशेष चर्चित हुए। 'विवाह मंडप' नामक एकांकी में समाज सेवा के नाम पर स्थापित संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार का चित्रण हुआ है। 'हिंन्दी का भूत' एकांकी में हिन्दी प्रचार –प्रसार में जुड़ी संस्थाओं और व्यक्तियों के कार्यकलाषों की विसंगतियों का विनोदपूर्ण अंकन हुआ है। साथ अनूदित हिन्दी की कठिनता पर व्यंग्य किया गया है। 'त्रिभुज का चौथा कोण' में एक स्त्री तीन पुरुषों के साथ जुड़ कर भी अपने सपनों के पूर्ण पुरुष की तलाश करती है। 'एक प्याला कॉफी का' में संपत्ति की लालच में युवक की हत्या और एक मां के प्रतिशोध को विषय बनाया गया है। ' अजायबघर' में घर को अजायबघर बना देने वाले अमीर आदमी की स्थिती पर व्यंग्य है। 'सोप केस' में अपने अधिकारों का दुरुपयोग करनेवाले एक बड़े अधिकारी पर तीखा व्यंग्य किया गया है।

शंकर शेष ने अपने संक्षिप्त जीवन काल में कई मराठी नाटकों का हिन्दी अनुवाद किया, तीन उपन्यासों की रचना की, महत्वपूर्ण शोध प्रबंधों का प्रणयन किया एवं फिल्मों के लिए पटकथा एवं संवाद भी लिखे। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी शंकर शेष का निधन अडतालिस वर्ष की अवस्था में २८ अक्टूबर १९८१ को हुआ।

१.३ खजुराहो का शिल्पी :

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों में पौराणिक एवं ऐतिहासिक आख्यानों पर नाट्य लेखन की एक समृद्ध परंपरा रही है। इस कड़ी में शंकर शेष का नाम विशेष उल्लेखनीय है। शंकर शेष ने पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानकों पर नाट्य रचना कर भारतीय जीवन और

समाज के अनेक यथार्थ रुपों को साकार किया है। जब कोई रचनाकार अतीत से अपने कथानक का चयन करता है तो उसका उद्देश्य अतीत को दुहराना नहीं होता अपितु अतीत के बहुश्रुत कथानक के माधम से वर्तमान के संदेश को लोगों तक पहुँचाना होता है। यह रचनाकार की प्रतिभा पर निर्भर करता है कि वर्तमान की विसंगतियों, विडंबताओं को स्वर देने के लिए वह किस कथा प्रसंग का चयन करता है। शंकर शेष ने एक और द्रोणाचार्य, नई सभ्यता नये नमूने, कोमल गांधार, रक्तबीज, खजुराहो का शिल्पी आदि नाटकों के माध्यम से वर्तमान को संबोधित किया है। 'खजुराहो का शिल्पी' एक ऐतिहासिक नाटक है। इतिहास के कथानक से पात्रों का चयन कर शंकर शेष नक युग-युग के शास्वत सत्य को संप्रषित किया है। यह सर्व विदित है क चंदेल वंश के प्रथम पुरुष का जन्म चंद्रमा से हुआ है। चंदेल वंश के ही प्रतापी राजा यशोवर्मन ने खजुराहो में विशाल विष्णु मंदिर का निर्माण कराया और उसमें देवपाल से प्राप्त विष्णुमूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा की। महारानी पुष्पा, राजकुमारी अलका, हेमवती, शिल्पी के संबंध में बहुत कुछ ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलते। लेखक ने खजुराहो अंचल में प्रसिद्ध किंवदंतियों के आधार पर नाटक की कथावस्तु का ढाँचा खड़ा किया है और उसके माध्यम से मोह के क्षणों में मनुष्य के पहल और उसी से उन्नयन की कथा प्रस्तुत की है।

२

खजुरोह का शिल्पी की कथावस्तु

भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्रियों ने नाटक के मुख्य तत्व के रुप में कथावस्तु को महत्वपूर्ण माना है। भारतीय साहित्य में नाटक को दृश्यकाव्य कहा गया है। यद्यापि नाटक पात्र, अभिनय, संवाद, दृश्य विधान एवं मंचन से सफल होता है परंतु इन्हें एक सूत्र में पिरोने का कार्य कथावस्तु ही करती है। साहित्यशास्त्रियों ने कथावस्तु के अनेक भेद किए हैं परंतु कथावस्तु के मुख्य दो भेद हैं। पहली आधिकारिक कथा और दूसरी प्रासंगिक कथा। नाटक के नायक के जीवन से निकटमय संबंधित कथा अधिकरिक कथा होती है जो नाटक के आरंभ से अंत तक प्रवाहमान होती हैं। इसे ही मुख्य कथा भी कहते हैं।

एक नाटक में एक से अधिक प्रासंगिक कथाएँ हो सकती हैं। प्रासंगिक कथा आधिकारिक कथा के कार्य व्यापार तथा विकास में सहायक होती हैं। 'खजुराहो का शिल्पी' छह दृश्यों का नाटक है जिसकी आधिकारिक कथा को कई प्रासंगिक कथाओं से पुष्ट किया गया है। नाटक का आरंभ राजा यशोवर्मन और रानी पुष्पा की चर्चा से होता है जिसमें एक दासी को कथित त्यभिचार के लिए दंडित करने की बजाय राजा द्वारा क्षमादान दिये जाने का जिक्र है। राज भवन के भीतर दासी के द्वारा किये व्यभिचार के अपराध को क्षमा करते हुए राजा यशोवर्मन महसूस करते हैं कि पूरी मनुष्य जाति अपराधी है। दासी के अपराध को क्षमा करते हुए राजा को अपने पूर्वजों के किए अपराध का ध्यान हो आता है, जिसकी जातकारी राजा को स्वप्न के माध्यम से हुई है। राजाने स्वप्न में अपने वंश की अधिष्ठात्री देवी हेमवती से जान कि उनके वंश का आरंभ कैसे हुआ? स्वप्न में हेमवती के जीवन की व्यथा –कथा एवं निवेदन को सुन – समझकर राजा यशोवर्मन विचलित हैं। हेमवती के द्वारा राजा को ज्ञात होता हैं कि वह गहिरवार राजा इंद्रजीत के पुरोहित हेमराज की कन्या थी जो सोलह वर्ष की उम्र में विधवा हो गई थी। वह वैधव्य की कठोर तपस्या करते हुए आत्मनिग्रह का जीवन जी रही थी कि पूर्णिमा की एक रात्रि सरोवर मे स्नान करते हुए वह आत्म संयम नहीं कर पाई और एक चंद्रमा जैसे सुंदर, देवदूत जैसे पुरुष के प्रति परस्पर आसक्त हो जाती है वह 'मोह के क्षण में पड़कर अपना ब्राम्हणत्व, वैधव्य सब कुछ भूल जाती है। चंद्रमा जैसे सुंदर उस पुरुष और हेमवती के संयोग से एक पुत्र का जन्म होता है। यही पुत्र चंद्रत्रिय वंश का आदि पुरुष और संस्थापक बनता है। स्वप्न में अपनी यह व्यथा राजा यशोवर्मन को बताकर हेमवती यह अभिलषा व्यक्त करती है के मोह के क्षण पर विजय पानेवाले एक मंदिर का निर्माण कराया जाय। यशोवर्मन इस बात के लिए चिंतित हो उठे कि मोह के क्षण का चित्रण और उस पर विजय पाने का मार्ग, यह दोंनो की कठिन कार्य है। राजकवि माधव यशोवर्मन की इस चिंता को दूर करने के लिए एक ऐसे शिल्पी की तलाश करता है जिसने मोह के क्षण को पहचाना है, भोगा है और जीया है।

वह शिल्पी उसे खर्जुरवाह में ही मिलता है। वह भी खजुराहो के प्राकृतिक सौंदर्य से प्रभावित है। शिल्पी की शिल्प कला से प्रभावित राजकुमारी अलका उसकी मूर्तियों के लिए प्रतिदर्श बनती है। शिल्पी से मिलकर राजकवि माधव उस अद्वितीय मंदिर के निर्माण की योजना बनता है। वह शिल्पी एक ऐसे शिल्प संसार की रचना करना चाहता है - ' जिसमें जीवन का कोई पहलू न छूटा हो ———- ऐसा शिल्प संसार जिसमें जीवन का हर प्रामणिक चित्र हो। उस शिल्पी का यह विश्वास है कि उसमें लगनेवाली मिथुन मूर्तियाँ सांसारिक आकर्षण की चरम सीमाएँ बनकर मनुष्य के सामने मोह का क्षण प्रस्तुत करेंगी। मूर्तियों के निर्माण कार्य में राजकुमारी अलका शिल्पकार की वांक्षित मुद्रा में और अनेक भावों में बैठती है। इसी दौरान शिल्पी के प्रति उसके मन में आकर्षण भी जागता है लेकिन शिल्पी पूरी तरह तटस्थ है। अनेक मिथुन मुद्राओं में अलका के सामने देख कर भी शिल्पी के मन में विकार पैदा नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने 'मोह के क्षण' को जीत लिया है।

शिल्पी और अलका को लेकर राजशिल्पी चंडवर्मा अनेक प्रकार की अफवाहे फैलाता है। धर्मगुरुओं के द्वारा भी मंदिर कीं कामार्त मूर्तियों का प्रतिरोध किया जाता है किन्तुं शिल्पी अपनी तथ्यपूर्ण बातों से सबके भ्रम को दूर करता है। मंदिर तैयार होने पर मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा होती है। कवि माधव, शिल्पी, यशोवर्मन आदि सभी उस अवसर पर प्रसन्न हैं किन्तु उन मूर्तियों की प्रतिदर्श अलका व्यथित है। शिल्पी की और आकर्षित अलका शिल्पी को देह की दुनिया में खींचने का प्रयास करती है किंन्तु शिल्पी आत्मा के धरातल पर संघर्ष करता है। वह अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल को दोहराना नहीं चाहता। यहीं प्रासंगिक कथा के रुप में ज्ञात होता है कि युवावस्था में शिल्पी एक बार मोह के क्षण का शिकार हो चुका है। शिल्पी अपने पचहत्तर वर्षीय गुरु की षोडषी पत्नी की कामार्त पुकार को अनसुना नहीं कर पाता। गुरु पत्नी द्वारा सहज भाव से शरीर सौंप देने पर वह मोह के क्षण में स्वंय को पराजित पाता है और अपने आचार्य के साथ प्रतारगा करने को दोषी स्वयं को मानता है और उस पाप से मुक्त होने के लिए प्रायश्चित करना चाहता है। प्रायश्चित का अतिशय दुखभोग कर उसकी आत्मा निस्मंग हो चुकी है कि वह संसार और मोक्ष का एक साथ चित्रण करने में समर्थ हो जाता है। अंततः शिल्पी की साधना की विजय होती है। वह अलका के मोह के क्षण को अस्वीकार कर देता है । उसके लिए वह कला पूजनीय है जो उसकी आत्मा की अनुभूतियों को रुप प्रदान करती है।

३

' खजुराहो का शिल्पी' की पात्र योजना एवं चरित्र चित्रण

पात्र योजना और चरित्र – चित्रण नाटक का महत्वपूर्ण तत्व है। नाटक रचना का प्रथम और अंतिम उद्देश्य उसका मंचन होता है जिसमें दृश्य विधान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नाटक के कथ्य के अनुरुप दृश्य विधान और पात्र योजना में संतुलन आवश्यक होता है। नाटककार अपने कथ्य को चरित्रों के माध्यम से व्यक्त करता है अंत: नाटक में पात्र योजना और चरित्र-चित्रण की विशिष्ट का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। नाटका का प्रभाव उसकी कथावस्तु की विश्वसनीयता पर निर्भर होता है। कथावस्तु विश्वसनीय तभी लगती है जब पात्र योजना विश्वासनीय हो तथा चरित्रों का विकास स्वाभाविक हो । चरित्र की स्वाभाविकता स्थान, समय, परिस्थिति सापेक्ष होनी चाहिए। नाटककार चरित्र चित्रण की अनेक विधियाँ अपनाता है परंतु संवादात्मक पद्धति सबसे माध्यम से आगे बढ़ता है अत:उसी के माध्यम से पात्रों के चरित्र के गुण, वैशिष्ट्य का पता चलता जाता है। नाट्य शस्त्रियों ने नाटक के पत्रों के चरित्र चित्रण में अनुकूलता, स्वाभिकता, जीवंतता, मौलिकता और संवेदनशीलता को आवश्यक माना है।

शंकर शेष की महत्वपूर्ण नाट्य रचना ' खजुराहो का शिल्पी' में छह दृश्य तथा आठ पात्र हैं जिनके माध्यम से नाटककार ने अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने में सफलता प्राप्त की है। प्रस्तुत नाटक के आठ पात्रों में राजा यशोवर्मन, शिल्पी, अलका, तांत्रिक गौण पात्र हैं। खजुराहो का शिल्पी के पात्रों का चरित्र – चित्रण ? ? ? ? है।

३.१ राजा यशोवर्मन

राजा यशोवर्मन चंदेल वंश के एक पराक्रमी राजा हैं। वे स्वयं कलकारों तथा वीरों का सम्मान करते हैं। उन्हें अपनी सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास है और वे यह समझते है कि किसी भी कार्य को संभव बनाया जा सकता है। बलवान बुद्धिमान होते हुए भी वे अपने राज्य के विद्वानों से सलाह- मशविरा किया करते है। एक दिन सपने में चंद्रात्रेय वंश की अधिष्ठात्री देवी हेमवती उनके पास आती हैं और अपने जीवन की दुखभरी कथा सुनाती हैं। साथ ही साथ वह एक ऐसा मंदिर बनवाने की बात करती है जो भविष्य में लोगों के मोह के क्षण को समाप्त कर सके। यशोवर्मन उस मंदिर को बनवाने की प्रतिज्ञा करते हैं। बहुत तलाश के बाद जब एक शिल्पी उन्हें मिलता है और उस मंदिर को बनवाने की प्रतिज्ञा करते हैं। बहुत तलाश के बाद जब एक शिल्पी उन्हें मिलता है और उस मंदिर की मूर्तियों के प्रतिदर्श के रुप में उनकी बेटी अलका को तैयार करने की बात करता है तो यशोवर्धन तैयार हो जाते हैं। यशोवर्मन को अपनी पालित पुत्री अलका पर पूर्ण विश्वास है। उनकी पत्नी पुष्पा जब उनके इस कार्य का विरोध करती है तब भी वे अपना दृढ़ निश्चय सुनाते है और जब शिल्पी के चरित्र पर आरोप लगाए जाते है तो वह कहते है ' पुष्पा इससे पहले कि हम किसी के चरित्र के विषय में किसी निष्कर्ष पर पहुँचे, हमारे पास

प्रमाण होने चाहिए । शरीर पर आक्रमण करने से केवल हाड़ -मांस ही आहत होते है, पर चरित्र पर आक्रमण से आत्मा आहत होती है।'

राजा यशोवर्मन का यह वाक्य इस बात का प्रमाण है कि उन्हें उड़ती हुई बातों पर विश्वास नहीं होता। किसी भी निर्णय पर पहुँचने से पहले यशोवर्मन उसकी यथार्थता की तह तक जाँच – पडताल हैं। एक बीमार बूढ़े के रुप में शिल्पी के घर जान और अलका तथा शिल्पी के संबंधो का पता लगाना आदि सभी घटनाएँ उनके दृढ़ विचारों की परिचायक है। किसी व्यक्ति के आंतरिक गणों को पहचान लेना उनका प्रमुख गुण है। शिल्पी के चरित्र के संबंध में अपना निर्णय सुनाते हुए वह कहते है 'अब मै हाँ कर चुका हूँ पुष्पा! तुम तो जानती हो कि मेरी हाँ का अर्थ हाँ ही होता है।' इसी क्रम में वह पुष्पा से एक दूसरी जगह कहते है कि 'पुष्पा जहाँ तक मै समझ सका हूँ, शिल्पी जैसा विदेह व्यक्ति संसार में नहीं हैं।

यशोवर्मन अपनी प्रजा का पूरा ध्यान रखते है। साथ ही साथ धर्मो का और धर्म से जुड़े लोगों का आदर भी करते हैं। मंदिर में स्थापित की जानेवाली मिथुन मूर्तियों का जब विरोध किया जाता है और धर्म से जुड़े लोगों का एक वर्ग राजा से मिलने आता है तो वह कहते है - 'मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ। मैं आपको विश्वास दिला देना चाहता हूँ कि मैं ऐसा कुछ नहीं करुंगा जिससे मेरी प्रजा की धर्म भावना पर आघात पहुँचे। 'इतना ही नहीं राजा यशोवर्मन अपने राज्य की जनता की भावनाओं की जानने –समझने के लिए ही मंदिर में स्थापित मूर्तियों की प्राण – प्रतिष्ठा के समय एक सामान्य व्यक्ति की तरह उत्सव में शामिल भी होते हैं। और जब जनता की सकारात्मक प्रतिक्रिया देखते है तो शिल्पी को उसकी कला के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं। मोह को जीत लेने वाले इस मंदिर का निर्माण करनेवाले शिल्पी को प्रोत्साहित करते हुए माधव से कहते है' हॉ कविवर! शिल्पी का आध्यात्म केवल एक कल्पना नही है, जीवन का यथार्थ भी है। मैं प्रसन्न हूँ कि अपने आँखों से सब कुछ देख लिया, अब मुझे भय नही।'

राजा यशोवर्मन शारीरिक और मानसिक रुप से किसी को दुख के विरुध्द है। जब रानी पुष्पा शिल्पी के चरित्र पर शंका करती है तब राजा को ऐसा लगता है कि प्रमाण के अभाव में किसी के चरित्र पर आक्रमण नहीं करना चाहिए क्योंकि चरित्र पर आक्रमण आत्मा पर किया गया आक्रमण होता है। यशोवर्मन का यह चरित्र वहाँ भी दिखाई देता है जब मिथुन मूर्तियों के विरोध के लिए वह अग्निपुराण, बृहत् संहिता आदि पढ़कर प्रमाण जुटाते (उचित) हैं और धर्मगुरुओं को वाजिब उत्तर देते हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि यशोवर्मन का चरित्र एक पराक्रमी, साहसी और न्यायप्रिर्य राजा के रुप में ऊभरकर सामने आता है। यशोवर्मन एक प्रजासेवक, प्रजारक्षक और प्रजापालक राजा है। उनका विवेक और संयत व्यक्तित्व उनके चरित्र में चार चाँद लगा देते हैं। वे एक कला प्रेमी व्यक्ति हैं। इसलिए 'मोह के क्षण' को जीतने वाले मंदिर के निर्माण के निर्माण की क्रांतिकारी योजना तैयार करते हैं और अपने दृढ़ विचारधारा का परिचय देते हुए तमाम विरोधों के बावजूद उसे पूरा कराते हैं। अत: यह कहना समीचीन होगा कि प्रसिद्ध नाटककार शंकर शेष द्वारा लिखित खजुराहो का शिल्पी' शीर्षक नाटक के प्रमुख पात्र यशोवर्मन का चरित्र स्वाभाविक, अनुकूल एवं संवेदनशील है।

३.२ शिल्पी

'खजुराहो का शिल्पी' शीर्षक नाट्यकृति के एक प्रमुख पात्र शिल्पी का पूरा नाम मेघराज आनंद है। मेघराज एक स्पष्ट वक्ता, दृढ चरित्र वाला और अपने सिद्धांतों से कभी समझौता न करनेवाला व्यक्ति है। वह अध्यात्म की ऊँचाई पर पहुँचकर सांसारिक मोह- माया से मुक्त हो चुका है। मानव जीवन की व्यथा को पत्थरों में उकेर कर उन्हें सजीवता प्रदान करने में शिल्पी अद्वितीय है। वह यायावरी (घुमक्कड़) प्रवृत्ति का व्यक्ति है। इसलिए निरंतर घूमता रहता है। उसके चरित्र की दृढ़ता, निःस्पृहता औरआध्यात्मिक उच्चता उसके अतीत के दुखों की देन है। मोह के क्षण में फँसकर शिल्पी अपनी गुरु पत्नी के साथ अनैतिक आचरण करता है और वहीं से अपने अपराध के पश्चाताप की ज्वाला में जलने लगता है। उसी पश्चताप से उसमे एक नए जीवन दर्शन का जन्म होता है। वह अच्छी तरह समझ जाता है कि संसार में रहकर ही सांसारिक आकर्षणों को दूर किया जा सकता है। यह दर्शन शिल्पी में एक ऐसी विचारधारा को जन्म देता है कि सौंदर्य का साक्षात् रुप सामने रहने पर भी उसका मन तनिक भी विचलित नहीं होता। जैसा कि, शंकर शेष जी लिखते है कि "उसकी एक बाँह में स्त्री का धधकता यौवन और दूसरी बाँह में भयानक सर्प भी उसे विचलित नहीं करते। "

शिल्पी ईमानदार प्रवृत्ति वाला और निडर व्यक्तित्तव वाला व्यक्ति है। वह अपने सिद्धातो पर सदैव अड़िग रहता है। पद का लालच तो उसके मन में कहीं दिखाई ही नहीं देता। यशोवर्मन द्वारा जब उसे राजशिल्पी का पद देने की बात कहीं जाती है तब वह कहता है – तुझे पद नहीं चाहिए। बस आपका स्नेह बना रहे।——- क्षमा करें महाराज मैं राजशिल्पी नहीं बनना चाहता।" इसी प्रकार वह राजा के सामने अपने प्रतिदर्श की कठिनाइीकों भी बड़ी स्पष्टता पूर्वक कहता है। इस संबंध में जब यशोवर्मन थोड़ा झिझकते हैं तो उन्हें विश्वास दिलाते हुए कहता है 'मै आपका धर्म संकट समझता हूँ पर आप मेरा संकट समझने का प्रयत्न कीजिए महाराज! क्या मुझ पर आपको विश्वास नहीं है।" उसकी सिद्धांतवादिता वहाँ भी दिखाई देती है जब वह अलका के प्रेम निवेदन को सांसारिक आकर्षण समझते हुए अस्वीकार कर देता है। वह एक बार अनैतिकता के जिस गर्त में गिर चुका है उसमें पुनः नहीं जान चाहता है। अलका जैसी अद्वितीय सुंदरी के प्रणय निवेदन के संबंध में वह माधव से कहता है "मैं सब कुछ समझाता हूँ कवि। पर क्या करूँ? अब जीवन में एक ऐसी जगए पहुँच गया हूँ जहाँ न मैं प्रेम कर सकता हूँ और न घृणा। मेरे जीवन का वह सूत्र ही कहीं खो गया है।" शिल्पी के मन में निड़रता के भाव कूट-कूटकर भरे हुए है। सत्य प्रिय होने के कारण वह अपने ऊपर लगे आरोपों को कभी झूठलाने का प्रयास नहीं करता । वह अपनी सच्चाई लोगों के सामने कह देना चाहता है और इस संबंध में उसका विचार है कि "मैने जो अपराध किया है उसे अस्वीकार कर भी दूँ तो मेरी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ेगी ——- यदि मैं अपने अतीत को झुठलाऊँ, इतना कायर नहीं।"

इस तरह प्रतीत होता है कि शिल्पी राग-द्वेष आदि सभी भावनाओं से पूर्णतः मुक्त हो चुका है और उसकी यही विशिष्टता उसे सर्वोच्चता के शिखर पर पहुँचाती है। राजा यशोवर्मन द्वारा की गई सभी जाँच – पड़तालों में वह शुद्ध सोने की तरह खरा उतरता है और चंडवर्मा द्वारा लगाए गए आरोपों को जान कर भी उसके मन में की कई भावना नहीं आती। शंकर शेष द्वारा रचित 'खजुराहो का शिल्पी' शीर्षक नाटक का यह पात्र इस भावभूमि पर आकर महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित (पापी से नहीं पाप से घृणा करो) दिखाई देता है। वह माधव से बड़ी स्पष्टतापूर्वक कहता है 'तो तुम क्या चाहते हो? द्वेष और घृणा का सामना द्वेष और घृणा से किया जाए? नहीं माधव मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

अंत में यह कहना उचित होगा कि मेघराज शिल्पी प्रस्तुत नाटक का एक ऐसा व्यक्तित्व है जो संकटों से जूझता, भिड़ता और उनका उचित प्रतिकार करता दिखाई देता है। पलायनवादिता और लालच की भावना तो उसके चरित्र में रंच मात्र भी दिखाई नही देतीं। वह सांसरिक आकर्षणों से पूर्णत: मुक्त हो चुका है। पश्चाताप की आग में वह अपने मन को इस प्रकार तपाये हुए है कि न तो उसको अलका का सौदर्य आकर्षित कर सकता है और न ही किसी राजशिल्पी का ऊँचा पद। वास्तव में मेघराज सभी क्षेत्र के कलाकारों के लिए एक आदर्श है जो मन की स्वतंत्रता और सिध्दांतो से समझौता नहीं करते।

३.३ अलका

अलका का चरित्र 'खजुराहो का शिल्पी' शीर्षक नाटक के नारी पात्रों में सर्वाधिक सशक्त है। वह यशोवर्मन और रानी पुष्पा क पालित पुत्री है। राजा यशोवर्मन और पुष्पा के अत्यधिक स्नेह में पली – बढ़ी अलका अत्यंत सुंदर और संस्कारित है। यशोवर्धन को अपनी बेटी पर पूर्ण विश्वास है । जैसा कि यशोवर्धन अपनी पत्नी पुष्पा से कहते हैं- " अलका संसार की सबसे सुंदर कन्या है ———- वह कलाओं में पारंगत है ———- और सबसे बड़ी बात कि वह मुझे बहुत प्रिय है।"

अलका बचपन से ही शिक्षा प्राप्ति के साथ – साथ कलाओं, विशेष कर मूर्तिकला के क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करना चाहती है। वह अपने मन की बात को स्पष्ट करते हुए राजा से कहती है " पिताजी अब मैं चित्रकला और मूर्तिकला की शिक्षा पाना चाहती हूँ।" वह यह भी मानती है कि कला को समझने के लिए सर्वप्रथम संस्कारो की आवश्यकता पड़ती है और उसके अनुसार वह सभी संस्कार उस राजमहल में ही उसे प्राप्त हुए है। इन सबके साथ – साथ अलका निडर और स्पष्ट वक्ता है। वह जिस कार्य को प्रारंभ करती है उसे पूर्ण करने तक उसी कार्य के प्रति समर्पित रहती है। शिल्पकार के लिए प्रतिदर्श बनने के बाद वह उस मार्ग में आनेवाली सभी कठिनाइयों का सामना करती हैं लेकिन अपनी भावनाओं से कभी विचलित नहीं होती।

मूर्तिकला और चित्रकला की जानकारी प्राप्त करने के लिए ही अलका शिल्पी मेघराज आनंद से मिलती है और धीरे –धीरे उसी शिल्पी के प्रति आकर्षित भी हो जाती है। वह मोह का क्षण बनकर शिल्पी को पुन: सांसारिक मोह –माया में खींचना चाहती है। उसका अनुपम सौदर्य शिल्पी को बार –बार आकर्षित करता है लेकिन शिल्पी अपने तपे हुए मन पर नियंत्रण कर लेता है। अपनी निडरता का परिचय देते हुए ही वह शिल्पकार के ऊपर लगनेवाले आरोपों का बचाव करती है और राजा द्वारा पूछे जाने पर कहती है- "पिताजी उसकी तो आँखे ही विचित्र है। उनमें देखने पर तो लगता है कि जैसे प्रयाग संगम के दर्शन हो रहे हों। पिताजी शिल्पी के चरित्र पर आरोप लगाना अग्नि को अपावन करना है।"

यहाँ हम देखते है कि अलका का व्यक्तित्व अधिक सहज स्वाभिविक और अपने कार्य के प्रति पूर्णत: समर्पित है। शिल्पी की मूर्ति का प्रतिदर्श बनने के लिए वह नारी सुलभ लज्जा का त्याग कर देती है। शिल्पी द्वारा जिन भावनाओं की और जिन भावभंगिमाओं की अपेक्षा की जाती है अलका उन सभी रुपों में स्वंय को प्रस्तुत करती है।

अलका का हृदय एक पवित्र नारी हृदय है या हम कह सकते हैं कि अलका में स्त्रीत्व के लगभग सभी गुण विद्यमान हैं। जिस प्रकार कोई नारी किसी के प्रति संपूर्ण समर्पण के बाद उस पर अपना अधिकार चाहती है वहीं बात अलका में भी दिखाई देती है। वह शिल्पी की सभी कसौटिओं पर खरी उतरने के बाद उस पर अपना अधिकार चाहती है । वह शिल्पी से सांसारिक प्रेम चाहती है। एक तरह से कहें कि वह उसका प्रतिदर्श बनने के बाद उसके प्रतिदान में अथवा अपने प्रेम के बदले उसे अपना जीवन साथी बनाना चाहती है। इस संबंध में जब शिल्पी अपनी विवशता प्रकट करता है तो वह एक नारी की स्वभावगत भावनाओं को व्यक्त करती हुई पूछती है- "तुम भी मेरी विवशता को क्यों नही समझते ? तुम्हे लगता है कि तुम्हारा यह दर्शन प्रत्येक स्त्री के मन में उतर जाएगा ? क्या तुम सोचते हो कि प्रत्येक पुरुष तुम्हारी तरह विदेह और योगी हो जाएगा ? क्या तुम सोचते हो कि पुरुष के सौदर्य और तेज से भविष्य में कोई भी स्त्री मर्माहत नहीं होगी ? यहाँ हम यह भी देखते हैं कि अलका अपने तर्को को बड़े ही विश्वास से साथ प्रकट करती है। उसकी तर्कपूर्ण बातों और हाजिरजवाबी के समक्ष मेघराज शिल्पी को चुप हो जान पड़ता है। एक तरह से वह शिल्पी के दर्शन को ही चुनौती देती है और कहती है 'मोह का क्षण ही व्यक्ति को पराजित करता रहेगा मैं तुमसे साफ – साफ पूछती हूँ शिल्पी कि प्रेम भी क्या ' मोह का क्षण' है —— या 'क्षण का मोह' है ?—— बोली, चुप क्यों हो ? क्या मैं तुम्हारे प्रति केवल मोह के क्षण के कारण आकर्षित हुई थी ?" अलका की इन तार्किक बातों से ऐसा लगता है कि वह सांसरिक दर्शन का भी अच्छा ज्ञान रखती है। वह इस संसार की उस यथार्थता से अवगत है जिसमें व्यक्ति सांसरिक मोह –माया से कभी अलग नहीं हो पाता। शिल्पी की वैराग्य भावना का विरोध करते हुए वह कहीत है "तुम संसार के किसी काम के नहीं। यह संसार तो कमजोर लोगों का है। गिरने —-उठने ——फिर गिरने वालों का है। ——यहाँ भूख लगती है, शरीर तपता है। इसीलिए शिल्पी अध्यात्म छूटते देर नहीं लगती।———– संसार बड़ी कठिनाई से छूटता है।"

इस प्रकार हम कह सकते है कि 'खजुराहो का शिल्पी' शीर्षक नाटक की प्रमुख महिला पात्र अलका शास्त्र, नृत्य, कलाकारी, सांसारिक दर्शन का ज्ञान रखने के साथ – साथ एक स्पष्ट वक्ता है। शंकर शेष की यह पात्र इस नाटक में 'मोह के क्षण' पर विजय प्राप्त कर लेन के दर्शन को ही चुनौती देती है।

३.४ कवि माधव

कवि माधव खर्जूरवाह नगरी के राजा के दरबार में राज कवि हैं। राजा यशोवर्मन के विश्वस्त और अंतरंग मित्रों में से एक है। माधव राजा यशोवर्मन के सुख -दुख को अच्छी तरह समझता है। इसलिए किसी भी विचार-विमर्श के लिए राजा द्वारा माधव को बुलाया जाता है। माधव और यशोवर्मन की अंतरंगता का पता वहॉ भी चलता है जब राजा को उदास देखकर माधव कहते है- "महाराज आपके स्वर में आज उल्लास नही है यहाँ के वातावरण में तनाव है। आप भी कुछ विचलित से दिखाई देते हैं।"

माधव मौलिक विचारों का समर्थक है। उसके अनुसार कल्पना प्रधानता कलाकार की आत्मा है। वह यशोवर्मन की तरह ही पुरानी परंपराओं को त्याग कर कुछ नए विचारों और कल्पनाओं को यथार्थ रुप देने का समर्थक है। माधव अपने कर्तव्यों के प्रति सदैव जागरुक रहता है। राजा द्वारा जब एक नए शिल्पी की तलाश की बात की जाती है तो वह अंत्यत प्रसन्न

होता है और उसे ढूँढते हुए विभिन्न प्रदेशों में भटकता है जैसा कि स्वयं वह शिल्पी से कहता है - "आपकी खोज मे कहा नहीं गया शिल्प तीर्थ उत्कल प्रदेश गया दक्षिण के शिल्पियों से मिला और तो और गुर्जर प्रदेश गया —— केवल एक महान शिल्पी की खोज में।" यहाँ हम देखते है कि माधव प्रतिभा को पहचानने में दक्ष है। वह ऐसे शिल्पी की तलाश कर लेता है जो यशोवर्मन की कल्पनाओं को मूर्त रुप प्रदान कर सकेगा। क्योंकि शिल्पी से बात करने के पहले वह उसके बारे में सभी जानकारियाँ प्राप्त कर लेता है। वह जिस व्यक्ति से प्रभावित होता है उसकी खुले कंठ से प्रशंसा भी करता है।

माधव की विचारधारा को क्षेत्र में पूर्णत: मानवीय है। अपने कविता के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए वह कहता है- 'कविता में घृणा के लिए कोई स्थान नहीं है शिल्पी। कविता तो मानवीय महत्त्व की उपासना की सबसे बड़ी आरती है।" माधव खोजी प्रवृत्ति का व्यक्ति हैं किसी भी विषय पर बात करने के पूर्व वह उसके लिए शोध कार्य करता है। माधव का यह खोजी चरित्र वहाँ दिखाई देता है। जब चंडवर्मा शिल्पी के ऊपर आरोप लगाता है तो माधव चंडवर्मा की तीन पत्नियाँ है। वे सुंदर भी है। इसके बाद भी चंडवर्मा एक साधारण सी दासी पर आसक्त क्यो हुए —- महाराज इस प्रश्न का उत्तर चंडवर्मा से माँगा जान चाहिए।" माधव की बातें सदैव तार्किक होती है। वह किसी की सुनी -सुनीई बातों पर विश्वास नहीं करता और अपने पक्ष को प्रबलता से प्रस्तुत करता है। शिल्पी के ऊपर दुराचारी होने का जब आरोप लगता है तो माधव शिल्पी का पक्ष लेता है और शिल्पी द्वारा किये गए अनैतिक कार्य का कारण उन परिस्थितियों को मानता है। इस संबंध में वह यशोवर्मन से कहत है-"महाराज उन आचार्य की वय ७५ वर्ष थी। उन्होंने षोडशी से विवाह किया। मैं पूछता हूँ धर्मगुरु यदि वह स्त्री नैतिक मूल्यो से हटी तो उसने कौन-सा अपराध किया ? ७५वर्ष का वह जर्जर आचार्य अपराधी नही ?" माधव अलका का मूक प्रेमी है और उसे सुखी देखना चाहता है। वह जानता है कि अलका शिल्पी से प्रेम करती हैं जब कि शिल्पी सब कुछ जानते हुए भी उसे केवल प्रतिदर्श के रुप में इस्तेमाल करता है। माधव शिल्पी से कहता है, 'तुमने स्त्री का मन कभी नही पहचाना। तुम उसमें केवल आकार देखते रहे, अलका ने तुम्हारे शिल्प को जीवन दिया, पर तुमने उसके जीवन को एक मरुस्थल बता दिया।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि माधव एक विद्वान भावुक और अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करनेवाला व्यक्ति है।

३.५ चंडवर्मा

चंडवर्मा खजुराहो के राजा यशोवर्मन का राजशिल्पी है। राजशिल्पी का यह पद उसे वंश परंपरा के अनुसार मिला है। चंडवर्मा को अपनी क्षमता और अपने कार्ये से अधिक अपने पूर्वजों के कार्यो पर गर्व है। परंपरावादिता और रुढ़वादिता उसके चारित्र के प्रमुख गुण है। नई कल्पनाएँ चंडवर्मा के मन में कभी आती ही नहीं। इसका कारण यह है कि उसने अपने पूर्वजों की कृतियों को इतना महान मान लिया है कि उसके अनुसार उसे अब आगे सोचने की जरुरत ही नहीं है। वह अपने वंश की तारीफ करते हुए कहता है - 'मेरी कई पीढ़ियाँ इस राज्य की सेवा में रत रही हैं। चौंसठ योगिनी, मातंगेश्वर, ब्रम्हा के मंदिरों का निर्माण मेरे पूर्वजों के द्वारा ही किया गया है।'

चंडवर्मा की कल्पना शक्ति अपने परिवेश से उपर कीभी नहीं उठती। राजा द्वारा जब उसे एक मंदिर का चित्र बनाने का आदेश दिया जाता है तो वह राज्य में स्थित मातंगेश्वर मंदिर से मिलता- जुलता एक चित्र बनाता है और कहता है कि यह पुरानी परंपरा को ही आगे बढ़ाने का एक प्रयास है। वह चित्र जब यशोवर्मन को पसंद नहीं आता तो वह दूसरा अवसर माँगता है। चंडवर्मा के मन में इर्ष्या और द्वेष की भावना सदैव बनी रहती है। वह स्वयं को बड़ा कलाकार समझता है और अन्य कलाकारों से ईष्या की भावना रखता है। जब उसे पता चलता है कि राजा द्वारा नए मंदिर के निर्माण का कार्य मेघराज आनंद को दिया जा रहा है तो वह उस नए शिल्पी में कमियाँ ढूँढकर उसे नीचा दिखाना चाहता है। यहाँ तक कि महारानी पुष्पा से अलका और मेघराज आनंद के बीच अवैध संबंधो की बात करके रानी को उसके विरुध्द भड़कता है। जब उसकी बात यहाँ भी नहीं बनती तो वह शिल्पी और उसकी गुरु पत्नी के बीच की बातों को भी उजागर करता है। यद्यापि वह स्वयं अनेकों अपराध करता है। यहाँ यह कहना उचित होगा कि चंडवर्मा अपनी बुराईयों को छिपाकर और दूसरों की बुराइयों को उजागर कर समाज में सम्मान पाना चाहता है। कवि माधव द्वारा जब उसकी बुराई उजागर की जाती है और उस दासी को बुलाने की बात की जाती है जिसके साथ चंडवर्मा ने अनैतिक संबंध बनाया है तो अपनी हार मान लेता है। चंडवर्मा का स्वभाव हठी है। वह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किसी भी निम्न स्तर पर उतरने से नहीं डरता अलका और शिल्पी के संबध की बातें उसके इसी चरित्र को स्पष्ट करती हैं।

उसके चरित्र की बात करते हुए राजकवि माधव मेघराज शिल्पी से कहता है " तुम चंडवर्मा का स्वभाव नहीं जानते। वह ईर्ष्या और द्वेष से पागल हो रहा है । किसी भी नीचता पर उतारु हो सकता है।" चंडवर्मा चरित्रहीन व्यक्ति है। तीन सुंदर पत्नियों के बाद भी एक दासी के प्रति आशक्त होना उसकी चरित्रहीनता को ही स्पष्ट करता है। वह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए साम-दाम- दंड - भेद हर प्रकार का उपाय करता है। मंदिर निर्माण के कार्य में रुकावट डालनेवाले जब उसके सभी उपाय असफल हो जाते हौं तो वह यशावर्मन को नैतिकता के अवमूल्यन और भविष्य में "महाराज, कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि भविष्य में आपका नाम इन्हीं मूर्तियों के कारण तिरस्कार और कलंक का विषय बनेगा ? महाराज, भविष्य की पीढ़ियाँ आपके विषय में कहीं गलत धारणा न बनाएँ।" इसी प्रकार जनमानस की भावनाओं का डर दिखाते हुए वह एक दूसरी जगह राजा से कहता है— "शिल्पी की उन मिथुन मूर्तियों को लेकर प्रजा में घोर असंतोष है। महाराज ! प्रजा का एक वर्ग उनका बहिष्कार करेगा।" इस प्रकार ज्ञात होता हैं कि चंडवर्मा हठी स्वभाव का, ईर्ष्यालु, चरित्रहीन व्यक्ति है।

४

शिल्प योजना एवं रंगमंचीयता

'खजुराहो का शिल्पी' शीर्षक नाटक जिस प्रकार भाव पथ के धरातल पर समाज की एक नया संदेश देता है। उसी प्रकार उसका शिल्प भी विशिष्टता का परिचायक है। नाटक की भाषा दर्शकों तक अपने भावों को सम्प्रेषित करने में पूर्णतः समर्थ है। प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु १०वी - ११ वी शताब्दी की एक ऐतिहासिक एवं सहस्यात्मक घटना पर आधारित है। फिर भी इसकी भाषा पात्रों के अनुकूल है। नाटक के प्रमुख पात्र यशोवर्मन, शिल्पी, माधव, चंडवर्मा, अकला आदि सभी के संवादो में गभीरता और तर्कयुक्तता तथा धाराप्रवाह पाया जाता है।

४.१ भाषा

प्रस्तुत नाटक की भाषा अत्यंत सरल, स्वाभाविक और रोचक है। सरलता के साथ - साथ भावों को संवहन करने की क्षमता भी इस नाटक की भाषा में दिखाई देती हैं। बोल - बाल की सरल स्वाभाविक भाषा से लेकर संस्कृत के शब्दों तक का प्रयोग इसमें मिलता है। प्रस्तर खर्जुरवाह, प्रतिदर्श आदि शब्द संस्कृत से ही लिए गये है। लोक प्रचलित मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ भी इसमें दर्शनीय है। जैसा कि यशोवर्मन एक जगह कहता है - "शरीर पर आक्रमण करने से केवल हाड़ - मास ही आहत. होते है, पर चरित्र पर आक्रमण से आत्मा आहत होती है।" ठीक इसी प्रकार मुहावरों का प्रयोग भी इसमें देखा जा सकता है। जैसा कि माधव शिल्पी का बचाव करते हुए एक स्थान पर कहता है - 'हममें से कोई दूध का धुला नहीं है।"

४.२ संवाद योजना

प्रस्तुत नाटक के संवादों में सरलता सर्वत्र दिखाई देती है। लेखक ने पात्र एवं परिस्थितियों के अनुकूल संवादों की रचना की है। नाटक की वाक्यरचना का रुप संक्षिप्त और भावगांभीर्य युक्त है। इसमें व्यर्थ का विस्तार कहीं नहीं किया गया है। कहीं- कहीं तो वाक्य बहुत ही छोटे और कथोपकथन इतने सरल कि एक भी शैदों की अधिकता नहीं दिखाई देती अथवा हम कहें कि उन संवादों में से यदि एकभी शब्द निकाल दें तो संवाद की तारतम्यता समाप्त हो जाएगी। माधव और अलका के एक संवाद का उदाहरण यहाँ दर्शनीय है-

माधव - आप यहाँ ?
अलका - हाँ।
माधव - इतनी रात को .... इस एकांत में.... ?
अलका - हाँ.....इतनी रात को.... एकांत में। आकपे कोई आपत्ति है ?

माधव – मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। वैसे आपत्ति करने का अधिकार भी मुझे कहाँ है....
महाराज को मालूम है ?

अलका – शायद नहीं।

माधव – और महारानी पुष्पा को ?

अलका – शायद उन्हें भी नहीं।

माधव - यदि उन्हें ज्ञात हो गया तो ?

अलका - यदि आप नहीं बतायेंगे तो उन्हें ज्ञात कैसा होगा ?

इस प्रकार की सरल संवाद के कारण ही नाटक की रोचकता अद्यांत बनी रहती है।

४.३ खजुराहों का शिल्पी नाटक का उद्देश्य

आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार 'शंकर शेष' द्वारा लिखित ' खजुराहो का शिल्पी' शीर्षक नाटक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप मे मोह के क्षण को जीतने के मार्ग की तलाश है। ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित यह एक ऐसा नाटक है जो कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से हमें उस जीवन आदर्श की ओर ले जाता है जहाँ व्यक्ति अध्यात्मिक योग धारण कर लेता है। डॉ. शंकर शेष ने अपने लंबे चिंतन – मनन के बाद सांसारिक माया और मोक्ष के संघर्षो को नए ढंग से प्रस्तुत किया है। इस नाटक मे नाटय साधना की तलाश है – सत्य की खोज। सभी व्यक्तियों के जीवन में मोह का क्षण उपस्थित होता है। प्रस्तुत नाटक में लेखक यह सिद्ध करना चाहता है कि संसार से गुजर कर ही सांसारिकता से मुक्ति मिल सकती है। जो व्यक्ति संसार के सुख – दुख को भोगे बिना ही पलायन कर जाता है वह एक प्रकार की कायरता है। इस संबंध में मंदिर बनाने के अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए यशोवर्मन कहते हैं - "अभी मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि ऐसे मंदिरों का निर्माण हो जो शिल्प कला की दृष्ट से अद्वितीय हों और जिनमें जीवन का प्रत्येक पहलू पूरी सप्राणता से अंकित हो। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष सब को एक साथ युति हो । ऐसा मूर्ति विधान हो जो मानवीय मोह से सूत्र को तोड़ दे।"

यहाँ लेखक का मानना है कि जनसंख्या का अधिकांश भाग यौनाकर्षण में जीता है। बहुत कम लोग ऐसे हैं जो जीवन को कायाकल्प मानकर ईश्वर के प्रति समर्पित भाव से जीते है। खजुराहो में बनाया गया मंदिर इसी विचारधारा को स्थापित करता है। मंदिर का बाहरी भाग जीवन की सांसारिकता को बड़े ही आकर्षक ढंग से अभिव्यक्त करता है। इसके बाहरी भाग की चर्चा करता हुआ शिल्पी यशोवर्मन से कहता है - " महाराज, मंदिर की बाहरी दिवारों पर मैं जीवन को सांसारिकता को उसकी पूरी समग्रता से अंकित करना चाहता हू। बाहरी दिवारों पर सहस्रों प्रतिभाएँ होंगी – देवी, देवता, प्रार्थना के दृश्य, मृगया, नृत्य, मल्लों की लड़ाई, हाथियों की लड़ाई, वीर योद्धाओं की पंक्ति.... क्या नहीं होगा महाराज ?" ठीक इसी प्रकार मंदिर के मध्य में कामार्त मनुष्य की अनेकों मूर्तियाँ स्थापित की गई है। यहाँ शिल्पी कहता है- मैं बिना हिचक के उन सभी दृश्यों को अंकित करूँगा जिन्हें मनुष्य निजी जीवन में जीता है पर बाहर जिनका विरोध करता है ....महाराज! रति, काम क्रीडा मनुष्य जीवन की सबसे गहरी स्थितीयाँ है। भूख के बाद काम ही जीवन का सबसे बड़ा आकर्षण है। एक का संबंध अस्तित्व से है तो दूसरे का जीने से ।

यहाँ हम कह सकते हैं कि खजुराहो का यह मंदिर अपनी कला के माध्यम से मानव जीवन में होनेवाले मोक्ष के आनंद का रहस्य बतानेवाला एक सफल प्रयास है। इस संबंध में डॉ. नर नारायण राय लिखते है कि " शंकर शेष का खजुराहो का शिल्पी मंदिर कहना चाहता है, वही बात नाटककार भी कहना चाहता है। अंतर केवल यह है कि खजुराहों का मंदिर स्थूल प्रस्तर खंडो में ढाली गई भंगिमाओं से अपनी बात कहात है, चुप रहकर और नाटककार की बात जीवंत चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है।" खजुराहो का शिल्पी शीर्षक नाटक में मंदिर की परिकल्पना का सामान्य जनमानस द्वारा विरोध भी किया जाता है। काम क्रीड़ा में लीन मूर्तियाँ अश्लीलता और संस्कार हीनता को प्रकट करती हैं। समाज में इनका विरोध होता है। धर्म से जुड़े लोगों में शंका उत्पन्न होती है लेकिन यशोवर्मन माधव और शिल्पी ये तीनों का विरोध करते हैं। अपने दर्शन को स्पष्ट करते हुए और मंदिर के उद्देश्य को अभिव्यक्त करते हुए शिल्पी धर्मगुरु से कहता है – मैंने उस मंदिर में एक रुपक की रचना की है। इसके बाहरी भाग की रचना हमारे शरीर की भाँति है। जब मनुष्य का मन बाहरी संसार से हटकर भीतर की ओर झाँकने लगता है तो उसे प्रभु की लीलाओं की झलक अपने ही भीतरी भाग सें काया शक्ति का चित्रण करनेवाली मूर्तियाँ नही है, विष्णु की लीलाओं का चित्रण है। यहाँ शरीर कम है। यह हमारे मन की अवस्था है, जब हम संसार से हटकर प्रभु के लीलामय जगत में पहुँच जाते है – जहाँ प्रेम है, अलौकिक सौदर्य है। इस मंदिर की कामासक्त मूर्तियों को देखकर सामान्य व्यक्ति सांसारिक मोह – माया में खो जाएगा लेकिन जो इन्हें तटस्थ भाव से देखता हुआ आगे बढ़ेगा वह गर्भगृह में स्थापित वैकुंठेश्वर की मूर्ति के साथ एकाकार हो जाएगा।

सच्चाई यह है कि, इस मंदिर के माध्यम से यशोवर्मन एक ऐसे अध्यात्म को स्थापित करना चाहता है कि जो केवल वाणी तक ही सीमित न रहे बल्कि मानव के आचरण और अंग बन जाए। माधव के अनुसार "खर्जुरवाह की ये मिथुन प्रतिमायें आज के लिए ही नहीं वरन् भविष्य में भी चेतावनी का काम करेंगी।" समाज की एक दूसरी समस्या को भी डॉ. शंकर शेष ने इस नाटक के माध्यम से उठाने का प्रयास किया है और वह समस्या है- बालविवाह तथा अनमोल विवाह का हेमवती का विवाह मात्र चौदह वर्ष की उम्र में हो जान बालविवाह की त्रासदी को अभिव्यक्त करता है तो दूसरी तरफ ७५ वर्ष के पुरुष का विवाह १६ वर्षे की युवती से हो जाना अनमेल विवाह की समस्या को उठाता है। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार इस प्रकार की बातें सातान्य थी। यहाँ लेखक राजकवि माधव से कहलवाता है उसकी आँखों में आमंत्रण था एक निरीह याचक की माँग थी ..... उसकी मुद्राओं में उत्तेजना थी। ७५ वर्ष की उम्र के आचार्य ने षोडशी से विवाह किया ऐसे में यदि वह अपने नैतिक मूल्यों से हटी तो उसने कोई अपराध नहीं किया।" लेखक यहाँ अनमेल विवाह की चित्रित करना चाहता है। शिल्पी की विवषता अथवा हेमवती की दमित इच्छाओं का अनैतिक रुप धारण कर लेना अनमेल विवाहों की परिणति है। हेमवती ने अपनी नैतिकता को तो तोड़ा लेकिन यह टूटन समाज के ध्वस्त जीवन मूल्यों की टूटन है जिसके साथ समाज कभी न्याय नहीं करता हैं।

इस प्रकार लेखक समाज की एक गंभीर समस्या को उठाते हुए यह भी स्पष्ट करना चाहता है कि प्रत्येक कलाकार अपने युग की देन होता है। मेघराज शिल्पी द्वारा अपने काल्पनिक मंदिर केा यशोवर्मन की सहायता से यथार्थ रुप प्रदान करता मोह के क्षण को प्रकट करने जैसा है। लेखक 'काम' को जीवन का प्राकृतिक एवं आवश्यक अंग मानता है। जिस राह से गुजरते हुए ही व्यक्ति सत्य को पहचान सकता है। मोह के क्षण सें दूर भागना और उसे अनैतिक करार देना व्यक्ति की पलायनवादिया की कही जाएगी।

४.४ रंगमंचीयता

'खजुराहो का शिल्पी' नाटक छः दृश्यों मे विभाजत है। जिसमें केवल दो प्रकार की मंच सज्जा की कल्पना की गई है। इस नाटक में प्रथम दृश्य राज दरबार का है और दूसरा मेघराज आनंद शिल्पी का घर जहाँ अलका शिल्पी से मिलती है। माधव शिल्पी को निमंत्रण देते हैं और यशोवर्मन, शिल्पी का घर जहाँ अलका शिल्पी से मिलती है। माधव शिल्पी को निमंत्रण देते हैं और यशोवर्मन, अलका तथा शिल्पी के संबंधी की परीक्षा लेने जाते है। दृश्य संख्या एक, तीन, और पाँच में यशोवर्मन का राजमहल दिखाया गया है, तो दृश्य संख्या दो, चार, और छः में शिल्पी की मूर्तिशाला दिखाई गई है। इस प्रकार हम कह सकते है कि यह नाटक दो हिस्सामें में - यशोवर्मन का राज दरबार और शिल्पी की मूर्तिशाला में संपन्न होता है। नाटक में कुल आठ पात्र है। जिनमें ६ पुरुष पात्र और २ महिला पात्र है। वैसे चर्चा तो अन्य पात्रों की भी की गई है लेकिन वे मंच पर नहीं आते।

नाटक में दृश्य प्रकाश और ध्वनि योजना भी की गई है। शिल्पी की छेनी जब चलती है तब शिल्पी तन्मयता का अनुभव करता है। वह उस कार्य में इतना लीन हो जाता है कि अलका जैसी सुंदरी भी उसे विचलित नहीं कर पाती । दृश्य परिवर्तन के लिए प्रकाश योजना की सहायता भी ???? है । इस नाटक की रंगमंचीयता के संबंध में श्री नरनारायण राय ने लिखा है कि- ' नाटक की व्याख्या की सभावनाएँ असीमित नहीं है' लेकिन वस्तु के खंड विशेष पर निदेशकीय प्रभाव डालकर नाटक के स्वरुप में विभिन्न प्रस्तुतियों के दौरान परिवर्तन लाया जा सकता है। .....कतिपय सीमाओं के बावजूद काव्यत्व और दृशत्व के समन्वय का निर्वाह करने की सफल चेष्टा जितनी इस नाटय रचना में हुई दिखती है, उतनी अन्य कृति में नही।"

इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि प्रस्तुत नाटक का शिल्प पक्ष अपने सभी तत्वों के साथ विद्यमान है। भाषा की गंभीरता, देशकाल और वातावरण से जुड़ा रंगमंच, ध्वनि योजना, संगीतात्मकता आदि नाटक के सभी तत्वों का संयोजन 'खुजराहो का शिल्पी' ने बड़े ही सुंदर रुप में दिखाई देता है। नाटक की लोकप्रियता और उसका सफल मंचन तथा दर्शकों को रिझा लेने की शक्ति आदि के प्रमुख कारण उसके नाटकीय तत्व ही है।

४.५ मोह और मोक्ष के संघर्ष का चित्रण

'खजुराहो का शिल्पी' नाटक नाटककार डॉ. शंकर शेष के लंबे चिंतन और ममन की उपज है। उन्होंने प्रस्तुत नाटक में गंभीर दर्शन को पाठकों के सामने रखा है। प्राचीन काल से संसार में होनेवाले माया और मोह के संघर्ष को नए ढंग से प्रस्तुत करने का नाटककार ने सफल प्रयास किया है । लाख कोशिशों के बाद भी संसार में काम भावना बनी रही हैं। प्राचीन काल से ही मनुष्य की सकाम और निष्काम प्रवृत्तियाँ एक गतिशील भाव बनकर स्थायी रही हैं। अर्थ, धर्म, काम, और मोक्ष मे काम का स्थान मोक्ष से पहले है और मोक्ष का अंतिम ' खजुराहो का शिल्पी' नाटक निरंतर संसार पर हावी होनेवाले 'मोह का क्षण' दर्शन संघर्ष को लेकर उपस्थित हुआ है। कहने का आशय यह है कि 'मोह का क्षण' ही मानव को पतनोन्मुखी बनाता है और 'मोह का क्षण' ही मानव को ऊर्ध्वमुखी। इन्हीं क्षणों के उतार -चढाव में मोह और मोक्ष के मार्ग का रहस्य छिपा है जिसे व्यक्त करना ही नाटककार का लक्ष्य हैं।

शंकर शेष का नाटक 'खजुराहो का शिल्पी' खजुराहो के मंदिर के स्थापत्य के दर्शन की सम्प्रषित करता है। खजुराहो का यह मंदिर अपने स्थापत्य के माध्यम से मनुष्य जीवन मे होने

वाले मोक्ष के आनंद के रहस्य को स्पष्ट करने का पूर्ण प्रयत्न करता है। डॉ. नरनारायण राय का मानना है कि "शंकर शेष का खजुराहो का शिल्पी मंदिर के स्थापत्य के दर्शन को नाटक के माध्यम से सम्प्रेषित करता है । जो बात खुजराहो का मंदिर कहना चाहता है वहीं बात नाटककार भी कहना चाहता हैं। अंतर केवल यह है कि खजुराहो का मंदिर स्थूल प्रस्तर में ढाली गई भंगिमाओं से अपनी बात कहता है। चुप रहकर और नाटककार की बात जीवंत चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है।"

'खजुराहो का शिल्पी' एक विवादास्पद विषय को मनोविज्ञान और संवेदना के स्तर पर एक प्रभावशाली नाटकीय रुप में प्रस्तुत करता है। 'खजुराहो के मंदिरों की भित्तियों पर खुदी मूर्तियाँ, श्रृंगारिक और आध्यात्मिक विषयों को एक साथ मूर्त करने के कारण सदैव विवाद का विषय रही हैं। दर्शकों के मस्तिष्क में वे अपने अद्‌भुत जीवन दर्शन से विचार आलोड़न उत्पन्न करती है।

नाटक की कथावस्तु खजुराहो की मूर्तियों और मंदिरो के निर्माता राजा यशोवर्मन और शिल्पी के जीवन को छः दृश्यों में प्रस्तुत करती है। यशोवर्मन एक रात सपना देखता है कि उसके वंश की अधिष्ठात्री हेमवती ने उसके पास पच्चीस मंदिर बनवाने की इच्छा व्यक्त की थी। युवा अवस्था में 'मोह के क्षण' द्वारा होनेवाले मानवीय पतन की पीड़ा को अपने वंश की अधिष्ठात्री हेमवती के जीवन से अनुभव करने के त्वरित बाद यशोवर्मन 'मोह के क्षण' का स्मारक खड़ा करने का संकल्प करता हैं नाटककार डॉ. शंकर शेष ने इस स्वप्न प्रसंग द्वारा कुशलतापूर्वक खजुराहो के मंदिर के निर्माण की पृष्ठभूमि और विश्वसनीय आधार तैयार किया है। शिल्पी की खोज होती है। 'मोह के क्षण' द्वारा मानवीय पतन की पीड़ा को झेलनेवाला गुरु पत्नी के साथ मोह का क्षण भोगा हुआ कुशल शिल्पी मेघराज आनंद मिलता है, वह अपनी शिल्पकला के द्वारा इसे अभिव्यक्त भी करना चाहता है। वह प्रायश्चित के रुप में तटस्थ एवं एकांकी जीवन में पहुँचकर श्रेष्ठ शिल्प प्रतिभा को जन्म देना चाहता है। राजकुमारी अलका को प्रतिदर्श के रुप में सामने रखकर शिल्पी मंदिर का पूरा निर्माण करता है।

शिल्पी मेघराज आनंद शरीर के धरातल से ऊपर उठ चुका है। उसने आत्मा के आनंद को पहचाना है। वह पतन की पीड़ा को कला के माध्यम से अभिव्यक्त करना चाहता है। उसकी एक बाँह मे डरावना सर्प है और दूसरी बाह में स्त्री रहती है। सर्प के दंश तथा स्त्री के आलिंगन सुख का उसे बिल्कुल भय नहीं है। उसके चरित्र को मृत्यू तथा श्रृंगार का समन्वय अलौकिक बना देता है। वह अध्यात्मिक ऊँचाई पर पहुँच चुका है। वह विदेह और योगी पुरुष है। इसीलिए वह प्रतिदर्श राजकुमारी अलका के प्रेम प्रस्ताव को सविनय अस्वीकार कर देता है क्योंकि उसके लिए सब समस्त संसार तथा संसार की समस्त भौतिक उपलब्धियाँ अनुपादेय हैं।

मनुष्य जीवन में अध्यात्मक जितना अनिवार्य और सत्य है उतना ही श्रृंगार और भोग भी। जीवन को भोगे बिना उसके आंतरिक रुपों के अनुभव के बिना अध्यात्म तक पहुँचाने की कोशिश करना एक छल है। अलका कला के आकर्षण से ही शिल्पी तक पहुँच जाती है। अपनी स्वभाविक लज्जा त्याग कर वह शिल्पी के सामने प्रतिदर्श के रुप में प्रस्तुत होती है । वह यौवन, सौदर्य, वैभव तथा ममत्व की मूर्ति है, उसकी भी भावनाएँ है, उसमें भी सामान्य मनुष्य का हृदय है। वह शिल्पी से प्रेम करने लगती है। शिल्पी की निःस्पृहता उसके भाव संसार को कुचल देती है । डॉ. शंकर शेष ने अपने सम्प्रेष्य तथा युग -युग के सत्य को अलका के संवादो के माध्यम से

बहुत मार्मिक रुप में प्रस्तुत किया है - "यह संसार तो कमजोर लोगों का है। गिरने –उठने फिर गिरने वालों का है.....यहाँ भूख लगती है, शरीर तपता है। इसलिए शिल्पी, अध्यात्म छूटते देर नहीं लगती ..... । संसार बड़ी कठिनाई से छूटता है। .... ठीक है, मुझे अनंत व्यथा भोगती है – भोगूँगी – भोगूँगी।"

संसार में रहकर ही सांसारिक आकर्षणों को पराजित किया जा सकता है। संसार के दुख- सुख को भोगे बिना उसे निस्सार कहना पलयान है। निग्रह की सच्ची कसौटी संसार ही है। संसार से भागकर निग्रह की बात करना अपने आप को धोखा देना है। राजा यशोवर्मन की आकांक्षा है कि मनुष्य जीवन की संपूर्णता का ऐसा मंदिर हो जो मनुष्य को 'क्षण के मोह' के पतन से सचेत कर सके और शिल्पी के जीवन का कटु अनुभव ही खजुराहो के इन मंदिरों के निर्माण का कारण बना। संपूर्ण नाटक मनुष्य के इस पतन और इसके उदात्तीकरण की दार्शनिक व्याख्या है। नाटक में दर्शन अवश्य है पर कहीं भी इतना बोझिल नहीं है कि, दर्शक या पाठक उससे ऊब जायें।

नाटककार ने 'खुजराहो का शिल्पी' नाटक के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि प्रत्येक कलाकार अपने युग की देन होता है और प्रत्येक महान कलाकृति में अपने युग की इतनी गहरी छाप होती है कि उस कृति को उस युग का सबसे अधिक मूल्यवान और प्रमाणिक ऐतिहासिक परिपत्र कहा जा सकता है। संसार को युग- युग से सतानेवाले 'मोह के क्षण' को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में ढ़ालकर अपने युग को सांसारिकता के 'मोक्ष' की ओर अग्रसर कराने की नाटककार की सफल चेष्टा है - 'खजुराहो का शिल्पी'। 'खजुराहो का शिल्पी' की ऐतिहासिक कथावस्तु डॉ. शंकर शेष के लिए माध्यम मात्र रही है, संपूर्ण नाटक की आत्मा रही है - 'मोह के क्षण' से गुजरते हुए मोक्ष का अनुभव।